

EXCLUSIVE

XIAS

1st
EDITION

हिंदी

TRUSTED
SELLER

UPPCS मुख्य परीक्षा X- नॉट्स

GS5
UP SPECIAL

- पूर्णतः परीक्षा उन्मुख सामग्री
- उच्च गुणवत्ता एवं विश्वसनीय नोट्स
- विषयवार व्यापक व समृद्ध कवरेज
- समसामयिक विश्लेषणात्मक समावेश

विशेष समावेशन:



- मुख्य परीक्षा के लिए तैयार उपयोगी कीवर्ड
- केस स्टडी / उदाहरण
- तथ्यात्मक समितियाँ/रिपोर्ट्स
- महत्वपूर्ण न्यायालय निर्णय
- उत्तर लेखन सुझाव
- मॉडल उत्तर

2
0
2
5



UPPSC

QUALITY
GUARANTEED



www.xias.in



8287115435

प्रतियोगिता में सबसे आगे ...

X IAS का विशेष संस्करण

"UPPCS मुख्य परीक्षा X-नोट्स - सामान्य अध्ययन पेपर 5" उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पेपर 5 की विशेष मांगों को ध्यान में रखकर रणनीतिक रूप से डिज़ाइन की गई विषयवार सामग्री है। यह पुस्तक उन उम्मीदवारों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई है जो UPPCS मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पेपर 5 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करना चाहते हैं।

पुस्तक की विशेषताएँ:

यह पुस्तक उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPCS) की मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पेपर-5 की विशेष मांगों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। यह केवल नोट्स का संग्रह नहीं, बल्कि एक ऐसा रणनीतिक उपकरण है जो आपकी विश्लेषणात्मक क्षमता, वैचारिक स्पष्टता और उत्तर लेखन कौशल को प्रभावी रूप से निखारता है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **सटीक एवं कीवर्ड-समृद्ध सामग्री:** उत्तर लेखन में अधिक प्रभावशाली प्रस्तुति और अतिरिक्त अंक अर्जित करने में सहायक।
- **संक्षिप्त सारांश, सारणी (टेबल), उदाहरण एवं चार्ट:** त्वरित रिवीजन और व्यापक कवरेज हेतु समय की बचत।
- **विषयवार पृथक्करण:** नवीनतम घटनाओं और आधिकारिक UPPCS पाठ्यक्रम के अनुसार व्यवस्थित ढांचा।
- **सर्वोत्तम उदाहरण, आरेख एवं समिति रिपोर्ट:** प्रत्येक विषय में एकीकृत रूप से समाहित।
- **उत्तर प्रदेश आधारित केस स्टडीज़:** सुशासन सूचकांक, आकांक्षी जिला कार्यक्रम, मिशन कर्मयोगी, ODOF जैसी योजनाओं से जोड़ते हुए क्षेत्रीय दृष्टिकोण को समाहित किया गया है।

यह पुस्तक क्यों उपयोगी है?

- सामान्य अध्ययन पेपर 5 के उत्तर लेखन, निबंध लेखन और साक्षात्कार उत्तर संवर्धन में उपयोगी।
- एक **एक-चरणीय** समाधान - त्वरित संशोधन, वैल्यू एडिशन और रणनीतिक तैयारी हेतु।
- UPPCS पाठ्यक्रम और PYQ ट्रेंड्स के साथ सामंजस्य।
- UPSC सामान्य अध्ययन-4 (नैतिकता) में भारतीय प्रशासन मॉडल और नैतिक केस स्टडीज़ के लिए भी उपयोगी।

X IAS विशेषज्ञ टीम की भूमिका:

सामग्री का निर्माण, संपादन और परिष्करण एक्स आईएस कोर टीम द्वारा किया गया है, जिसमें शामिल हैं:

- UPPCS टॉपर्स और साक्षात्कार में चयनित उम्मीदवार।
- UPSC टॉपर्स एवं विशेषज्ञ GS सलाहकार, जिनके पास विषयों में गहरा अनुभव है।
- जिला-विशिष्ट शोधकर्ता, जो उत्तर प्रदेश से संबंधित नवाचारों और योजनाओं को हाइलाइट करते हैं।

टीम ने इस बात पर विशेष ध्यान दिया है कि यह पुस्तक UPPCS केंद्रित, तथ्यात्मक रूप से सटीक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से समृद्ध हो।

कॉपीराइट सूचना:

© XIAS – इस प्रकाशन का कोई भी भाग, बिना प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के, किसी भी रूप, माध्यम या प्रणाली द्वारा पुनर्प्राप्त, संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकता।

संपर्क करें: 8287115435, [xiaseducation@gmail.com]

क्यों किसी को यूपीपीसीएस में GS-5 और GS-6 (UP विशेष) में महारत हासिल करनी चाहिए?

X IAS की इस विशेष सामग्री में, हम PYQ विश्लेषण सहित व्यापक रूप से UPPCS मुख्य उत्तर प्रदेश विशेष विषयों (GS-5 और GS-6) को कवर करेंगे। ये पेपर UPPCS में कुल स्कोर का 26.67% योगदान देते हैं, जिससे वे उच्च रैंक हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण हो जाते हैं। इन पेपर में महारत हासिल करना निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है:

1. अंतिम चयन में उच्च वेटेज

- यूपी स्पेशल कुल अंकों में एक-चौथाई (26.67%) से अधिक का योगदान देता है, जो समग्र योग्यता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।
- इन पेपरों में मजबूत प्रदर्शन अन्य जीएस पेपरों में कम स्कोर की भरपाई कर सकता है।

2. अन्य उम्मीदवारों पर बढ़त

- ये पेपर राज्य-विशिष्ट हैं, जो केवल सामान्य अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने वालों से प्रतिस्पर्धा को सीमित करते हैं।

3. व्यक्तित्व परीक्षण के लिए मजबूत प्रासंगिकता (साक्षात्कार)

- साक्षात्कार में प्रश्न अक्सर यूपी के इतिहास, शासन, सामाजिक-आर्थिक मुद्दों और नीतियों के इर्द-गिर्द घूमते हैं।
- यूपी के मुद्दों पर एक ठोस पकड़ एक आत्मविश्वास और अच्छी तरह से सूचित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करती है।

4. अन्य पेपर के साथ ओवरलैप

- इतिहास, शासन, अर्थव्यवस्था और विकास जैसे विषयों में GS -1, GS -2 और GS-3 के साथ ओवरलैप हैं, जिससे तैयारी अधिक कुशल हो जाती है।
- स्थानीय स्वशासन, भूमि सुधार, कानून और व्यवस्था, और सुरक्षा मुद्दे भी GS -2 और GS-3 के लिए प्रासंगिक हैं।

5. निबंध और नैतिकता पेपर (GS -4) प्रदर्शन को बढ़ावा देता है

- यूपी के सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक पहलू वास्तविक जीवन के उदाहरण प्रदान करते हैं जिनका उपयोग निबंधों में किया जा सकता है।
- शासन से संबंधित विषय एथिक्स पेपर में केस स्टडी का जवाब देने में मदद करते हैं।

6. करंट अफेयर्स आधारित प्रश्नों में मदद करता है

- यूपी में कई नीतिगत निर्णय, विकासात्मक योजनाएं और शासन मॉडल सीधे में पूछे जाते हैं।
- यूपी के जल शक्ति मिशन, कानून व्यवस्था, पंचायती राज, पर्यटन और नवाचार को समझना उत्तर को और अधिक गतिशील बनाता है।

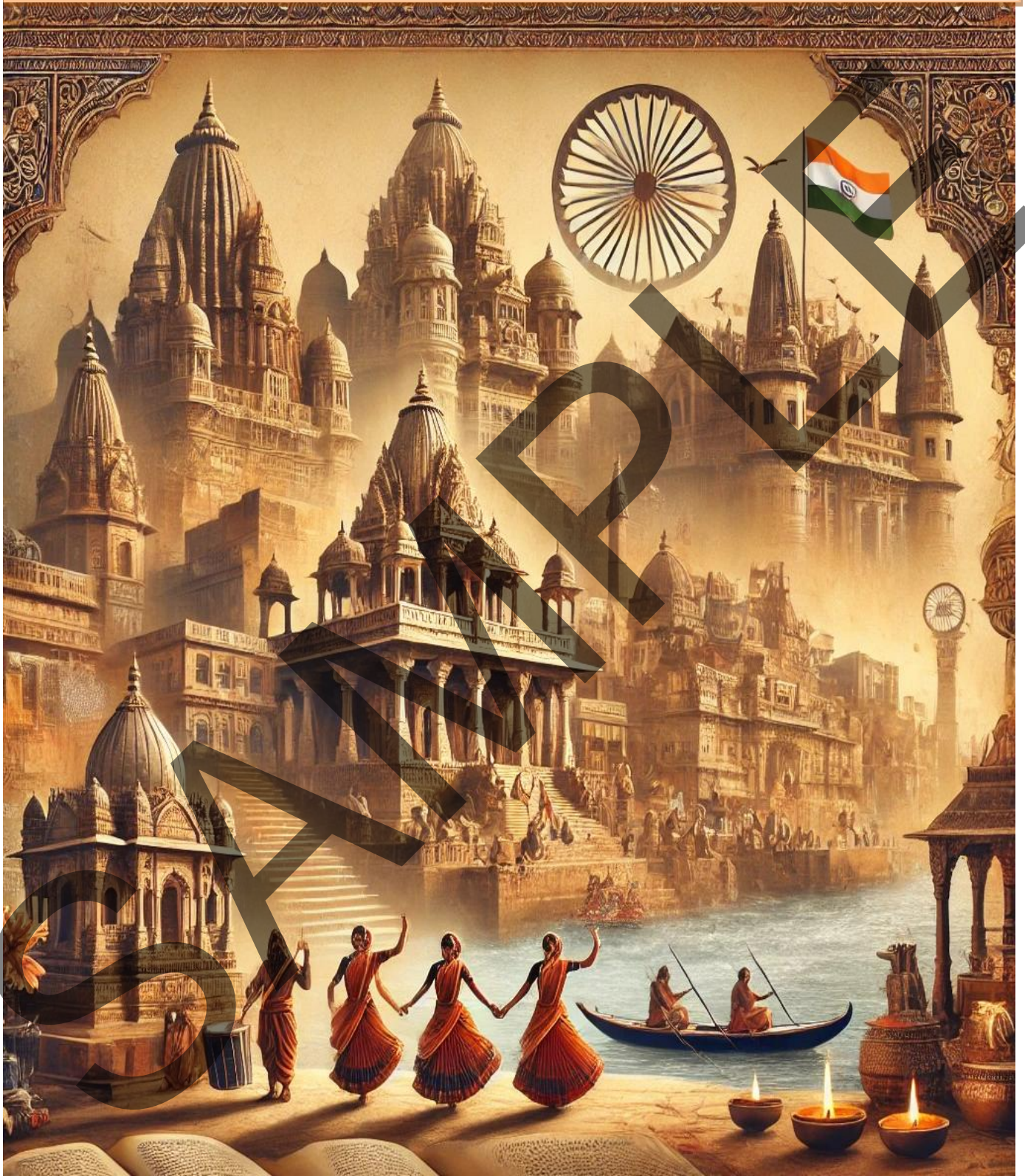
यूपी की मानचित्र रूपरेखा (अभ्यास के लिए उपयोगी)

CANDIDATES ARE ADVISED TO PRINT THIS MAP & PRACTICE DRAWING AND MARKING VARIOUS THINGS ON IT. HIGHLY USEFUL PRACTICE FOR PAPER 5 & PAPER6.

सामान्य अध्ययन-V (GS-5) का पाठ्यक्रम

- 1- उत्तर प्रदेश का इतिहास, सभ्यता, संस्कृति और प्राचीन नगर।
- 2- वास्तुकला, उनका महत्व और रखरखाव, संग्रहालय, पुरालेख और यूपी की पुरातत्व।
- 3- भारत के 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व और बाद में उत्तर प्रदेश का योगदान।
- 4- यूपी के प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी और व्यक्तित्व।
- 5- ग्रामीण, नगरीय एवं जनजातीय मुद्दे: उत्तर प्रदेश की सामाजिक संरचना, त्यौहार, मेले, संगीत, लोक नृत्य, साहित्य एवं भाषाएँ/बोलियाँ, सामाजिक रीति-रिवाज।
- 6- उत्तर प्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था: शासन, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रिपरिषद, राज्य विधानसभा और राज्य परिषद, केंद्र-राज्य संबंध।
- 7- लोक सेवा, लोक सेवा आयोग, लेखा परीक्षा, महाधिवक्ता, उच्च न्यायालय और यूपी में इसका अधिकार क्षेत्र।
- 8- विशेष राज्य चयन मानदंड, राजभाषा, संचित निधि और आकस्मिकता निधि, राजनीतिक दल और यूपी के राज्य निर्वाचन आयोग।
- 9- स्थानीय स्वशासन: उत्तर प्रदेश में शहरी और पंचायती राज, सार्वजनिक नीति, अधिकार से संबंधित मुद्दे।
- 10- सुशासन, भ्रष्टाचार उन्मूलन, लोकायुक्त, नागरिक चार्टर, ई-गवर्नेंस, सूचना का अधिकार, निवारण नीति।
- 11- भूमि सुधार और उत्तर प्रदेश में इसका प्रभाव।
- 12- उत्तर प्रदेश में सुरक्षा से संबंधित मुद्दे: (i) विकास और उग्रवाद के प्रसार के बीच संबंध। (ii) संचार नेटवर्कों, मीडिया और सामाजिक नेटवर्किंग साइटों के माध्यम से आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौतियाँ पैदा करने में बाह्य, राज्य और अंतर्राज्यीय कर्ताओं की भूमिका। (iii) साइबर सुरक्षा, धन-शोधन और इसकी रोकथाम के बुनियादी नियम। (iv) विभिन्न सुरक्षा बल और एजेंसियाँ और उनके अधिदेश। (v) सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा चुनौतियाँ और उनका प्रबंधन, संगठित अपराधों को आतंकवाद के साथ जोड़ना।
- 13- यूपी में लॉ एंड ऑर्डर और सिविल डिफेंस।
- 14- यूपी में चिकित्सा और स्वास्थ्य मुद्दे।
- 15- यूपी की राज्य शिक्षा प्रणाली।
- 16- भारत के विकास में उत्तर प्रदेश का योगदान।
- 17- यूपी के करंट अफेयर्स।
- 18- उत्तर प्रदेश में जल शक्ति मिशन और अन्य केंद्रीय कल्याणकारी योजनाओं का कार्यान्वयन।
- 19- उत्तर प्रदेश में गैर सरकारी संगठन: मुद्दे, योगदान और प्रभाव।
- 20- उत्तर प्रदेश में पर्यटन: मुद्दे और संभावनाएँ।
- 21- उत्तर प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार पर जोर: मुद्दे और समाज के रोजगार और सामाजिक-आर्थिक विकास पर इसका प्रभाव।

विषय.1- उत्तर प्रदेश का इतिहास, सभ्यता, संस्कृति और प्राचीन नगर



उत्तर प्रदेश का इतिहास, सभ्यता, संस्कृति और प्राचीन नगर

1.1 परिचय: उत्तर प्रदेश

भारत के उत्तरी भाग में स्थित उत्तर प्रदेश, देश के सबसे अधिक आबादी वाले राज्यों में से एक है। विविध भौगोलिक परिदृश्यों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण, यह राज्य ऐतिहासिक महानायकों जैसे राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अशोक, हर्ष, अकबर और महात्मा गांधी की गतिविधियों का केंद्र रहा है। ब्रिटिश शासन के दौरान इसे संयुक्त प्रांत के रूप में जाना जाता था, लेकिन स्वतंत्रता के बाद इसका नाम बदलकर उत्तर प्रदेश कर दिया गया।

राज्य की राजधानी लखनऊ है और इसमें कुल 75 जिले शामिल हैं। गंगा और यमुना जैसी दो प्रमुख नदियों के प्रवाह से समृद्ध, उत्तर प्रदेश उपजाऊ भूमि और खनिज संपदा से भरपूर है, जो इसे कृषि और औद्योगिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण राज्य बनाती है।

उत्तर प्रदेश का हिंदू पौराणिक कथाओं में विशेष स्थान है। यह राज्य भगवान राम और भगवान कृष्ण जैसे **प्रमुख हिंदू धर्म के महापुरुषों से जुड़ा हुआ** है। भगवान राम का जन्म अयोध्या में हुआ था, जबकि भगवान कृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ था, जो दोनों ही उत्तर प्रदेश में स्थित हैं।

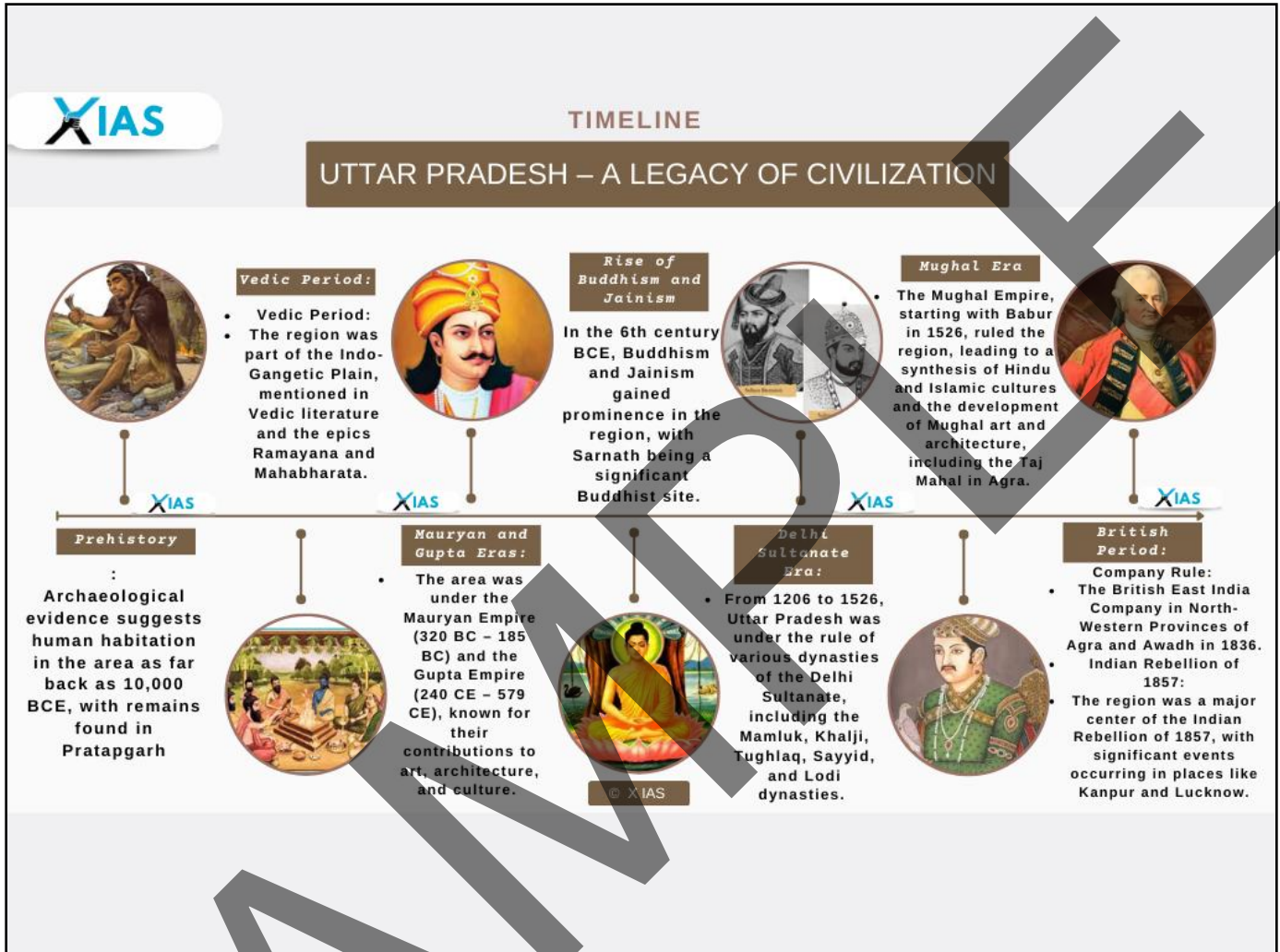
इतिहास के विभिन्न कालखंडों में उत्तर प्रदेश पर कई शक्तिशाली राजवंशों का शासन रहा। **प्राचीन काल में यह क्षेत्र मौर्य, गुप्त और कुषाण साम्राज्यों** के अधीन था। मध्यकाल में, 16वीं शताब्दी में, मुगलों ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और यहां एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित किया। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने बाद में मुगलों को पराजित कर अपना शासन स्थापित किया। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, इस राज्य का नाम बदलकर उत्तर प्रदेश रखा गया और इसे भारतीय गणराज्य का आधिकारिक हिस्सा घोषित किया गया।

"उत्तर प्रदेश (UP) पिछले 5,000 वर्षों से भारत का एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केंद्र रहा है। इसने महान राजवंशों के उत्थान और पतन को देखा है, बौद्ध और जैन धर्म जैसे प्रमुख धर्मों के विकास का साक्षी बना है, और कला, साहित्य व वास्तुकला के क्षेत्र में समृद्धि प्राप्त की है।"

अयोध्या और वाराणसी, जो विश्व के सबसे प्राचीन नगरों में से हैं, से लेकर सांस्कृतिक विरासत परियोजनाओं के आधुनिक पुनरुद्धार तक, उत्तर प्रदेश भारत के इतिहास और विकास के केंद्र में बना हुआ है। हाल ही में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, राम मंदिर, बौद्ध पर्यटन पहल, और पुरातात्विक खोजों के साथ, उत्तर प्रदेश समकालीन समय में अपनी ऐतिहासिक पहचान को नए सिरे से परिभाषित कर रहा है।"

प्राचीन उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विरासत: सभ्यता का उदय।

उत्तर प्रदेश के इतिहास की संक्षिप्त समयरेखा :



उत्तर प्रदेश का प्रागैतिहासिक और वैदिक काल (600 ईसा पूर्व तक)

राज्य में पुरापाषाण काल से एक निरंतर मानव निवास का रिकॉर्ड मिलता है। शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों से लेकर कृषि और शहरी बस्तियों तक के संक्रमण ने भारतीय सभ्यता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- प्रागैतिहासिक चरण: यह काल पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण युगों में विभाजित है।
- प्रारंभिक कृषि स्थल: कृषि के विकास, सांस्कृतिक परिवर्तनों और उनके प्रभाव को दर्शाते हैं।
- वैदिक काल: इस काल में आर्य बस्तियों का उदय हुआ, जिसने समाज पर गहरा प्रभाव डाला।

उत्तर प्रदेश का प्रागैतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक इतिहास लिखित अभिलेखों से पहले की अवधि है। प्रागैतिहासिक युग को तीन प्रमुख अवधियों में विभाजित किया गया है:

1. पुरापाषाण काल (पुराना पाषाण युग)
2. मध्यपाषाण काल (मध्य पाषाण युग)

3. नवपाषाण काल (नया पाषाण युग)

1. पुरापाषाण काल (2.5

मिलियन वर्ष पहले - 10,000

ईसा पूर्व)

इस अवधि को खानाबदोश

शिकारी-संग्रहकर्ताओं द्वारा

कच्चे पत्थर के औजारों का

उपयोग करके और गुफाओं में

रहने के लिए चिह्नित किया जाता

है।

उत्तर प्रदेश में प्रमुख

पुरापाषाण स्थल:

बेलन घाटी (प्रयागराज क्षेत्र)

- जी.आर. शर्मा
(इलाहाबाद

विश्वविद्यालय) द्वारा खोजा गया।

- निचले, मध्य और ऊपरी पुरापाषाण संस्कृतियों के साक्ष्य।
- **क्वार्टजाइट उपकरण और हड्डी की कलाकृतियां**, जिसमें लोहदानाला साइट (बेलन घाटी) में पाई जाने वाली देवी देवी की मूर्ति शामिल है।
- भारत में सबसे पुराने बसे हुए स्थलों में से एक माना जाता है।

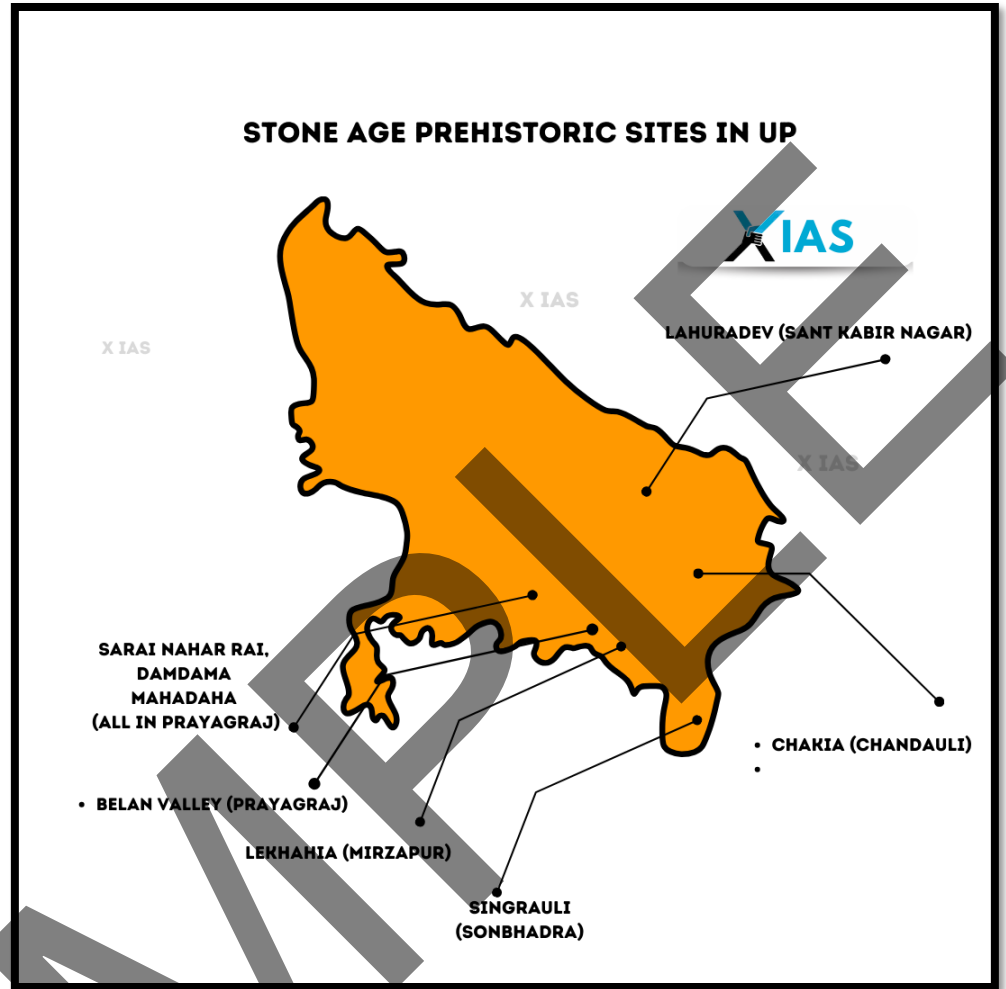
सोनभद्र और मिर्जापुर

- भीमबेटका शैली में प्रागैतिहासिक रॉक चित्रों के साथ महत्वपूर्ण गुफाएं और रॉक शेल्टर।
- चकिया (चंदौली) और सिंगरौली घाटी (सोनभद्र) में पत्थर के औजार मिले हैं।

चोपानिमांडो (मेजा तहसील, प्रयागराज)

- मानव बस्ती, झोपड़ी के अवशेष और मिट्टी के बर्तनों के साक्ष्य मिले हैं।
- उन्नत उपकरण बनाने की तकनीक विकसित जीवन शैली का संकेत देती है।

सराय नाहर राय (जिला प्रतापगढ़)



- 14 लोगों के दफन शरीर पश्चिम की ओर सिर के साथ खोजे गए, जो अनुष्ठानिक दफन प्रथाओं का सुझाव देते हैं।
- गड्डे चूल्हा (अग्रिकुंड) खाना पकाने या सांप्रदायिक जीवन का संकेत देते हैं।

दमदमा (प्रतापगढ़ जिला)

- 41 दफन स्थलों में दोहरी कब्रों की खोज हुई।
- सींग और हड्डी के उपकरण, आभूषण और नांद चूल्हों की खोज।

पुरापाषाण काल की मुख्य विशेषताएं:

- ✓ खानाबदोश जीवन शैली - लोग गुफाओं और रॉक शेल्टर में रहते थे।
- ✓ पत्थर के औजार - कार्टजाइट से बने, शिकार और कसाई के लिए उपयोग किए जाते हैं।
- ✓ कोई स्थायी बस्तियां नहीं - भोजन शिकार और इकट्ठा करके प्राप्त किया गया था।
- ✓ सांस्कृतिक साक्ष्य - रॉक पेंटिंग और मूर्तियाँ, प्रारंभिक कलात्मक अभिव्यक्तियाँ दिखाती हैं।

2. मध्यपाषाण काल (10,000 ईसा पूर्व - 5000 ईसा पूर्व)

मध्यपाषाण काल में सूक्ष्म पाषाण उपकरणों (Microliths) का उपयोग, दफन प्रथाओं और पशुओं के प्रारंभिक घरेलूकरण के प्रमाण मिलते हैं।

उत्तर प्रदेश में प्रमुख मध्यपाषाण स्थल

- ✓ सराय नाहर राय (प्रतापगढ़)
 - तीर (सिरों-Arrowheads) और सूक्ष्म पाषाण उपकरणों (Microliths) की खोज, जो उन्नत शिकार तकनीकों का संकेत देते हैं
 - युद्ध के प्रारंभिक साक्ष्य - कंकालों पर मिले घाव संघर्षों के प्रमाण देते हैं।
- ✓ दमदमा (प्रतापगढ़)
 - पशु वर्चस्व के शुरुआती प्रमाण - मवेशी, बकरी और हिरण की हड्डियां।
 - दफन प्रथाएँ सामाजिक स्तरीकरण का संकेत देती हैं।
- ✓ महादाहा (उत्तर प्रदेश)
 - स्थायी झोपड़ियां मिलीं - प्रारंभिक गतिहीन जीवन शैली का संकेत।
 - उपकरण में सूक्ष्म पाषाण उपकरणों (माइक्रोलिथिक) ब्लेड, पत्थर की कुल्हाड़ियां शामिल हैं।
- ✓ लेखिया (मिर्जापुर)
 - 17 मानव कंकाल कब्र के सामान के साथ पाए गए, जो अनुष्ठानिक दफन का संकेत देते हैं।
 - गड्डे आवास और खाद्य भंडारण इकाइयों की खोज की।

मध्यपाषाण काल की मुख्य विशेषताएं

काल	प्रमुख विशेषताएं	उत्तर प्रदेश में महत्वपूर्ण स्थल
पुरापाषाण काल (पुराना पाषाण युग)	- मनुष्य गुफाओं और नदी के किनारों पर रहता था। - शिकार और भोजन इकट्ठा करने पर निर्भर। - कार्टजाइट उपकरणों का उपयोग।	बेलन घाटी (महत्वपूर्ण स्थल) - चकिया (चंदौली) - उपकरण निष्कर्ष।
मध्यपाषाण (मध्य पाषाण युग)	- प्रारंभिक कृषि और वर्चस्व के लिए संक्रमण। - हड्डी के औजारों और माइक्रोलिथ का उपयोग।	- कोल्दीहवा - धान की खेती के प्रारंभिक साक्ष्य। - पंचोह, महगदा - मध्यपाषाण बस्तियाँ।
नवपाषाण (नया पाषाण युग)	- कृषि आधारित जीवन शैली में बदलाव - दफन प्रथाओं के साथ स्थायी बस्तियाँ। - पॉलिश किए गए पत्थर के औजार और मिट्टी के बर्तनों का उपयोग।	- लाहुरादेव - प्राचीन कृषि साक्ष्य। - सराय नाहर राय - 15 दफन स्थल। - दमदमा - डबल मकबरा दफन प्रणाली। - लेखिया - मानव कंकाल की खोज।

✓ माइक्रोलिथिक उपकरण - शिकार के लिए छोटे, नुकीले पत्थर के औजार।

✓ प्रारंभिक कृषि - कुछ अनाज अनाज पाए गए।

✓ जानवरों का वर्चस्व - मवेशी, भेड़ और बकरियों को पालतू बनाया जाता है।

✓ दफन रीति-रिवाज - संगठित कब्रिस्तान और अनुष्ठानिक दफन।

✓ अर्ध-स्थायी बस्तियाँ - कई साइटों पर पाई जाने वाली झोपड़ियाँ।

3. नवपाषाण काल (5000 ईसा पूर्व – 2500 ईसा पूर्व): यह अवधि जानवरों के वर्चस्व को चिह्नित करती है। का उपयोग कर सकते हैं

उत्तर प्रदेश में प्रमुख नवपाषाण स्थल:

-कोल्दीहवा (बेलन घाटी, प्रयागराज): मेरे पास भारत में चावल की खेती का सबसे पुराना प्रमाण (ओरिजा सैटिवा) है।

- हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तन, अनाज भंडारण की सुविधा।

-महागरा (बेलन घाटी, प्रयागराज): सिंचाई और अनाज भंडारण के प्रमाण हैं।

- गौशाला (पशु आश्रय) मिला, जो डेयरी फार्मिंग का संकेत देता है।

-पंचोह (बेलन घाटी, प्रयागराज): यहां की कलाकृतियां कृषि में उन्नति का संकेत देती हैं।

-लाहुरादेव (संत कबीर नगर): यह भारत का सबसे पुराना नवपाषाण कृषि स्थल है।

- मिट्टी के मकान मिले, जो स्थायी बस्तियों का संकेत देते हैं।

नवपाषाण काल की मुख्य विशेषताएं

✓ कृषि आधारित अर्थव्यवस्था - चावल, जौ, गेहूं जैसी फसलें।

✓ जानवरों का वर्चस्व - मवेशी, बकरी, भेड़, कुत्ते।

✓ मिट्टी के बर्तन बनाना - लाल और काले बर्तन के बर्तन मिले।

✓ बसे हुए समुदाय - घरों और अन्न भंडार के साक्ष्य।

उत्तर लिखने के लिए कीवर्ड:

भारतीय सभ्यता का पालना-उत्तर प्रदेश प्रमुख सभ्यताओं, संस्कृतियों और परंपराओं की जन्मभूमि रहा है।

सप्त सिंधु विरासत-उत्तर प्रदेश का संबंध वैदिक सप्त सिंधु भूमि से है, जो प्राचीन सभ्यता की आधारशिला रही है।

गंगायमुना दोआब संगम--गंगा और यमुना नदियों के बीच की उपजाऊ भूमि, जिसने सामाजिकसांस्कृतिक विकास को आकार दिया। **सांस्कृतिक संगम गलियारा**-उत्तर प्रदेश हिंदू, बौद्ध, जैन और इस्लामी परंपराओं का संगम स्थल है। **मध्य देश - इतिहास का केंद्र**-भारत के प्राचीन मध्य क्षेत्र के रूप में उत्तर प्रदेश ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है। **प्राचीन मंदिर नगर**-उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक नगर, जो अपनी मंदिर वास्तुकला और आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं।

सूफ़ीसंत समन्वय--भक्ति और सूफ़ी आंदोलनों का उत्तर प्रदेश में सामंजस्यपूर्ण संगम। **प्रयागराज - ब्रह्मांडीय संगम**-त्रिवेणी संगम और कुंभ मेले का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व। **धार्मिक तानाबाना**--उत्तर प्रदेश की बहुआस्थाओं वाली समृद्ध धार्मिक एवं आध्यात्मिक विरासत। **वेदांत केंद्र**-वेदांत दर्शन और आध्यात्मिक प्रवचनों से उत्तर प्रदेश का ऐतिहासिक जुड़ाव। **बौद्ध तीर्थ यात्रा मार्ग**-सारनाथ, कुशीनगर सहित बौद्ध धरोहर स्थलों का महत्वपूर्ण नेटवर्क। **कुंभ मेला - शाश्वत परंपरा**-प्रयागराज में आयोजित विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन। **गंगाजमुनी तहज़ीब**--उत्तर प्रदेश की अनूठी समन्वयवादी संस्कृति, जो हिंदू और इस्लामी प्रभावों का संगम है। **मुगलअवध वैभव**--मुगल और नवाबी युग की कलात्मक एवं स्थापत्य भव्यता।

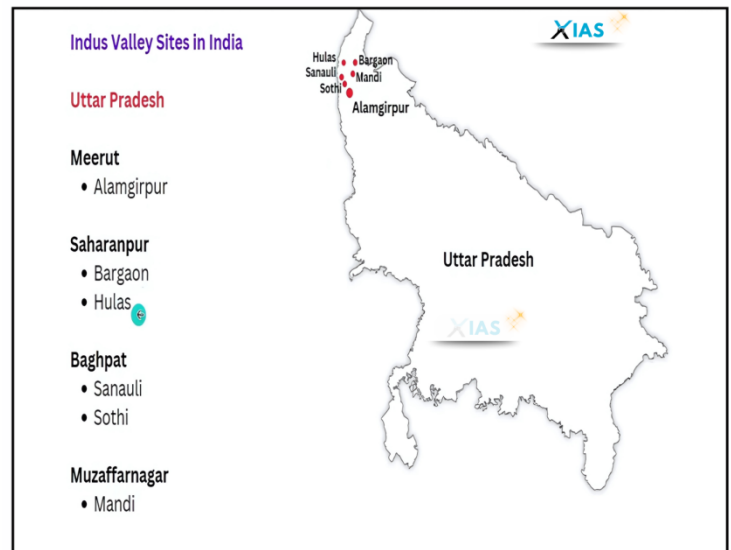
उत्तर प्रदेश में हड़प्पा सभ्यता (सिंधु घाटी सभ्यता)**परिचय:**

हड़प्पा सभ्यता, जिसे भारतीय उपमहाद्वीप में **शहरीकरण** की आधारशिला माना जाता है, अपनी उन्नत **संस्कृति, व्यापार और प्रौद्योगिकी** के लिए जानी जाती थी। इसका मुख्य केंद्र **सिंधु घाटी** में विकसित हुआ, लेकिन इसके प्रभाव की पूर्वी सीमाएँ **वर्तमान उत्तर प्रदेश** तक फैली हुई थीं। यहाँ के **पुरातात्विक स्थलों** की खोजों ने इस सभ्यता की व्यापकता को लेकर हमारी समझ को नया रूप दिया है। **सुनियोजित बस्तियाँ, जटिल कलाकृतियाँ और दफन स्थलों** के अवशेष यह दर्शाते हैं कि हड़प्पा सभ्यता अपने पारंपरिक केंद्र से आगे बढ़कर **गंगा के मैदानों** की उभरती संस्कृतियों के साथ घुल-मिल गई थी। **विशेष रूप से सनौली** में चल रही खुदाई ने **प्राचीन भारत** के इतिहास की नई परतों को उजागर किया है। इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि **उत्तर प्रदेश** की धरती में अनेक **ऐतिहासिक रहस्य** अब भी छिपे हुए हैं, जो हमारी सभ्यतागत विरासत को और समृद्ध करते हैं।

उत्तर प्रदेश में प्रमुख हड़प्पा स्थल:

1. सनौली (बागपत) - एक महत्वपूर्ण खोज स्थल (2018 उत्खनन)

- सनौली भारत में हाल के वर्षों की **सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोजों** में से एक मानी जाती है।
- यहाँ **हथियारों, तांबे की तलवारों और विलासिता की वस्तुओं** के साक्ष्य मिले हैं, जो इसे एक **प्राचीन दफन स्थल** के रूप में स्थापित करते हैं।
- यहाँ **तीन रथों की खोज** से यह संकेत मिलता है कि यहाँ एक **उन्नत योद्धा वर्ग** विद्यमान था और यह भारतीय इतिहास में **रथों के प्रारंभिक उपयोग** की ओर इंगित करता है।



• इस खोज ने भारतीय उपमहाद्वीप में रथ युद्ध की उत्पत्ति पर नए सिरे से विमर्श को जन्म दिया है

2. आलमगीरपुर (मेरठ) - सबसे पूर्वी हड़प्पा स्थल

- 1958 में यज्ञ दत्त शर्मा द्वारा खोजा गया।
- हिंडन नदी (यमुना की एक सहायक नदी) के तट पर स्थित, यह सभ्यता की पूर्वी सीमा को चिह्नित करता है।
- मुख्य निष्कर्ष (उत्खनन से मिली सामग्री)
 - मोती, रोटी बेलने के खंभे, कटोरे।
 - मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े जिनमें मोर, त्रिकोण और गिलहरी का चित्रण है।
 - लिपि की उपस्थिति, निवासियों में साक्षरता का संकेत देती है।
 - मानकीकृत आयामों (30 सेमी x 15 सेमी ईट) वाले ईट घरों के साक्ष्य, शहरी नियोजन का खुलासा करते हैं।

3. हुलास (सहारनपुर) - शिल्पकला का केंद्र

- मिट्टी के मोती, चूड़ियाँ और खिलौना गाड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।
- ठोस ईंटों और गारे से निर्मित मकान, प्रारंभिक वास्तुशिल्प उन्नति को दर्शाते हैं।
- ये खोज एक समृद्ध कारीगर उद्योग का संकेत देते हैं।

4. बड़गांव (सहारनपुर) – दैनिक जीवन के संकेत

- मिट्टी के बर्तन, मोती और बर्तन जैसी कलाकृतियाँ मिलीं, जो एक विकसित घरेलू जीवन शैली की ओर इशारा करती हैं।
- यह पुस्तक पूर्वी क्षेत्र में हड़प्पा निवासियों के रोजमर्रा के जीवन की झलक प्रदान करती है।

5. मंडी (मुजफ्फरनगर) – आर्थिक गतिविधियों का खुलासा

- खोज में सोने के सिक्के, मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े और ईंटें शामिल हैं।
- कृषि गतिविधियों के दौरान कई खोजों की गईं, जिनसे यह पता चला कि किस प्रकार कृषि परिदृश्य अक्सर प्राचीन विरासत को छुपाये रहते हैं।

6. मानपुरा (बुलंदशहर) - संपन्न शिल्प कौशल स्थल

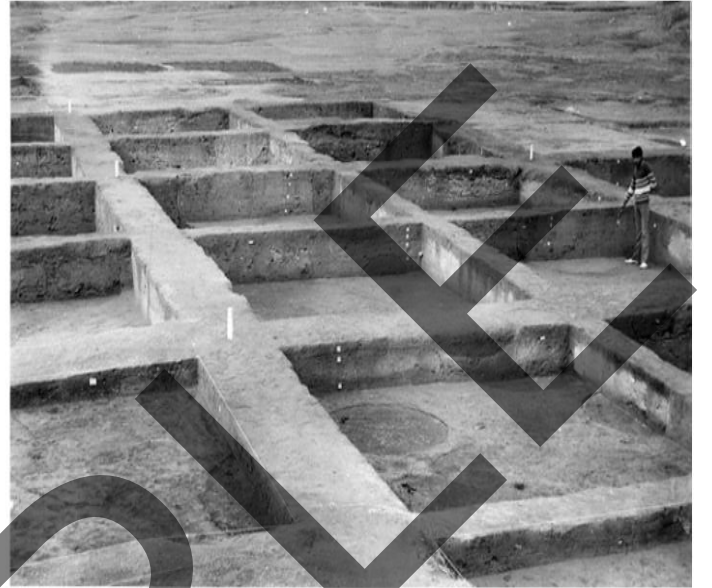
- उत्खनन से मोती, खिलौने और चूड़ियाँ प्राप्त हुईं, जो शिल्पकला की समृद्ध परंपरा का संकेत देती हैं।
- सजावटी वस्तुओं की उपस्थिति आभूषणों और विलासिता की वस्तुओं के व्यापार या स्थानीय उत्पादन का संकेत देती है।

7. चांदपुर (बिजनौर) – उन्नत धातुकर्म वाला स्थल

- तांबे के बर्तनों की खोज और उन्नत धातुकर्म तकनीकों का प्रदर्शन।
- यह क्षेत्र पत्थर से धातु के औजारों की ओर परिवर्तन का संकेत देता है, जो बाद के सांस्कृतिक और तकनीकी विकास को प्रभावित करता है।

हुलास स्थल (सहारनपुर) – एक अवलोकन

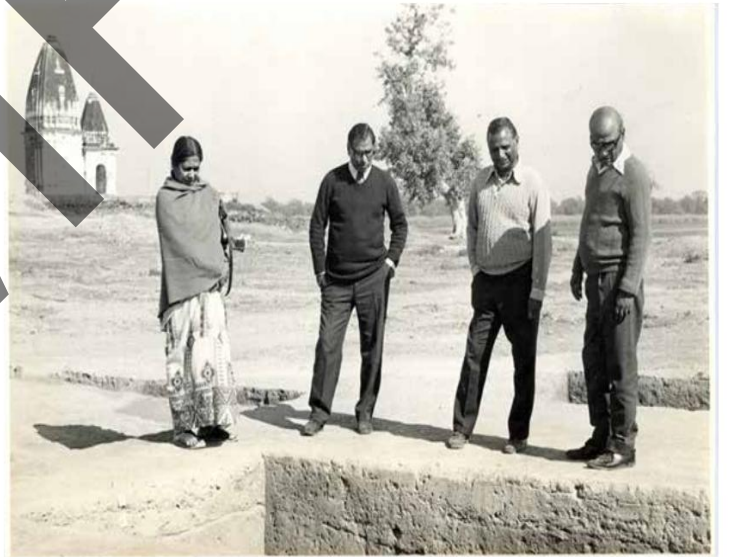
Pottery yard at the site Hulas (image arranged by X IAS)



Excavated trenches at the site at Hulas (image arranged by X IAS)



Dr. Y.D. Sharma, Dr. Shashi Asthana and K.N. Dikshit in trench



Smt. Debala Mitra, Shri B.K. Thapar, K.N. Dikshit and H. Sarkar during excavation

उत्तर प्रदेश में हड़प्पा स्थलों का महत्व :

- **सांस्कृतिक निरंतरता और आदान-प्रदान** – ये स्थल हड़प्पा संस्कृति के पूर्वी विस्तार और गंगा घाटी की उभरती सभ्यताओं के साथ इसकी अंतःक्रिया को दर्शाते हैं।
- **शहरी विस्तार** – उत्तर प्रदेश में मिले पुरातात्विक साक्ष्य इस बात को पुष्ट करते हैं कि हड़प्पा सभ्यता का शहरी मॉडल अपने पारंपरिक केंद्र से आगे बढ़ा और बाद की सभ्यताओं को प्रभावित किया।

- **व्यापार और संपर्क** – मिली हुई कलाकृतियाँ सिंधु घाटी, सिंधु-गंगा के मैदानों और संभावित रूप से पूर्वी भारत के बीच मजबूत व्यापारिक नेटवर्क का संकेत देती हैं।
- **स्थानीय संस्कृतियों के साथ एकीकरण** – हड़प्पा तत्वों और क्षेत्रीय प्रभावों की मौजूदगी यह दर्शाती है कि इनका जटिल सांस्कृतिक समावेशन हुआ, जिसने बाद की सभ्यताओं के विकास की नींव रखी।

वर्तमान प्रासंगिकता:

- हाल ही में हुई खुदाई, विशेष रूप से **सनौली (नीचे दी गई छवि) में, प्रारंभिक युद्ध, सामाजिक स्तरीकरण और शहरी नियोजन** के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है
 - ये निष्कर्ष **प्राचीन भारतीय इतिहास के पहलुओं**, विशेष रूप से तकनीकी प्रगति और सामाजिक संरचनाओं के संबंध में, को पुनः लिखने के लिए महत्वपूर्ण पुरातात्विक आधार प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष:

उत्तर प्रदेश में हड़प्पा सभ्यता की उपस्थिति केवल एक प्राचीन संस्कृति का विस्तार नहीं है, बल्कि यह भारत के सबसे पुराने शहरी समाज की गतिशीलता और अनुकूलनशीलता का प्रमाण है। ये स्थल सिंधु और गंगा घाटी के बीच की खाई को पाटते हैं, जो एक ऐसी सांस्कृतिक निरंतरता को प्रकट करते हैं जो पारंपरिक सीमाओं की अवधारणा को चुनौती देती है।

प्रारंभिक रथों, उन्नत धातु विज्ञान और सुनियोजित बस्तियों की खोज एक अत्यधिक उन्नत समाज की ओर संकेत करती है, जो हमारी पूर्व धारणाओं से कहीं अधिक परिष्कृत था। जैसे-जैसे नई खुदाइयों से छिपे रहस्यों का अनावरण हो रहा है, उत्तर प्रदेश प्राचीन भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर रहा है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में सभ्यता की जड़ों की हमारी समझ को नया आकार दे रहा है।

उत्तर लेखन के लिए कीवर्ड

समय के रथ- सनौली में प्राचीन रथों की खोज, प्रारंभिक भारतीय युद्ध को फिर से परिभाषित करना, **सिंधु की प्रतिध्वनि**- उत्तर प्रदेश में हड़प्पा संस्कृति की सबसे पूर्वी उपस्थिति, **दफन कथाएँ**- उत्तर प्रदेश में हड़प्पा स्थलों से उजागर हुई छिपी हुई कहानियाँ, सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं का खुलासा करती है, **सिंधु की अंतिम सीमा**- उत्तर प्रदेश अपने मुख्य क्षेत्र से परे हड़प्पा सभ्यता का अंतिम गढ़ था, **सिंधु के शहरी अवशेष** - हड़प्पा बस्तियों के अवशेष एक उन्नत शहरी संस्कृति को दर्शाते हैं, **अल्पकालिक साम्राज्य**- उत्तर प्रदेश में हड़प्पा सभ्यता की अल्पकालिक लेकिन प्रभावशाली उपस्थिति, **हड़प्पा रेशम मार्ग**- उत्तर प्रदेश में पाई गई रहस्यमयी हड़प्पा लिपि, जिसे अभी भी समझा जाना बाकी है, **वैदिक परिदृश्य और हड़प्पा क्षितिज** - हड़प्पा संस्कृति और प्रारंभिक वैदिक परंपरा के बीच अंतःक्रिया और समानताएँ। **शब्दहीन लिपि** - उत्तर प्रदेश में पाई गई रहस्यमयी हड़प्पा लिपि, जिसे अब तक पूरी तरह समझा नहीं जा सका। **ईंटों की विरासत** - हड़प्पा वास्तुकला में मानकीकृत जली हुई ईंटों का उपयोग, जिसने बाद की निर्माण शैलियों को प्रभावित किया। **धूल के नीचे छिपे योद्धा** - सनौली दफन स्थल, जो सैन्यीकरण और सामाजिक स्तरीकरण के प्रमाण प्रस्तुत करता है। **सिंधु के लुप्त मानचित्रकार** - हड़प्पा की ग्रिड योजना प्रणाली के प्रमाण, जो भविष्य के शहरी डिजाइनों को प्रेरित करते हैं। **खामोश गढ़** - हड़प्पा बस्तियों के खंडहर, जो एक लुप्त होती सभ्यता की कहानी कहते हैं। **सिंधु से गंगा तक** - हड़प्पा और गंगा घाटी की बाद की सभ्यताओं के बीच व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की निरंतरता। **हड़प्पा एन्क्लेव (Enclave)** - उत्तर प्रदेश में हड़प्पा सभ्यता की एक महत्वपूर्ण चौकी, जो इसके अंतिम अवशेषों को संरक्षित करती है।

PYQ विश्लेषण

प्रश्न: उत्तर प्रदेश में हड़प्पा सभ्यता से संबंधित स्थलों की पहचान करें। (UPPCS) मेन्स 2023 पेपर 5)

इस प्रश्न को प्रभावी ढंग से कैसे हल करें:

- प्रश्न की मांग को समझें:**
 - प्रश्न में आपसे उत्तर प्रदेश में हड़प्पा स्थलों की पहचान करने को कहा गया है।
 - प्रमुख स्थलों को** उनके महत्व के संक्षिप्त विवरण के साथ सूचीबद्ध करने पर ध्यान केन्द्रित करें।
 - गहन विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है - इसे **तथ्य-आधारित और संरचित रखें**।
- अपने उत्तर की संरचना:**
 - परिचय (2-3 पंक्तियाँ):** हड़प्पा सभ्यता और उत्तर प्रदेश में इसके पूर्वी विस्तार को परिभाषित करें।
 - मुख्य भाग (बुलेट प्वाइंट अनुशासित):** उत्तर प्रदेश में महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थलों (सनौली, आलमगीरपुर, हुलास, आदि) की सूची बनाएं और उनका संक्षिप्त वर्णन करें।
 - महत्व (वैकल्पिक - 2-3 पंक्तियाँ):** सांस्कृतिक आदान-प्रदान, व्यापार मार्ग और शहरी प्रभाव का उल्लेख करें।
 - निष्कर्ष (1-2 पंक्तियाँ):** हड़प्पा विस्तार और निरंतरता को समझने में इन स्थलों के महत्व को बताइए।
- प्रस्तुति सुझाव:**
 - स्पष्टता के लिए **शीर्षकों और बुलेट पॉइंट्स** का उपयोग करें।
 - महत्वपूर्ण साइट नामों को** रेखांकित या हाइलाइट करें।
 - विवरण **संक्षिप्त रखें** (प्रति साइट 1-2 पंक्तियाँ)।
 - अनावश्यक विस्तार से बचें - **प्रासंगिक तथ्यों पर ही टिके रहें**।

वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)

वैदिक काल में आर्यों का प्रवास, वेदों की रचना और प्रारंभिक राज्यों (महाजनपदों) का गठन हुआ।

वैदिक काल में उत्तर प्रदेश

- ✓ **आर्यावर्त** - उत्तर प्रदेश का क्षेत्र आर्यावर्त का हिस्सा था, जो आर्यों की भूमि थी।
- ✓ **ऋग्वैदिक उल्लेख** - उत्तर प्रदेश का उल्लेख ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में मिलता है।
- ✓ **कृषि विस्तार** - लोहे के हल के उपयोग से कृषि समृद्धि हुई।
- ✓ **शहरीकरण शुरू होता है** - कोसल (अयोध्या), काशी (वाराणसी), और कौशाम्बी जैसे शहर उभरे।
- ✓ **गंगा-यमुना दोआब** - व्यापार और वाणिज्य का केंद्र बन गया।

उत्तर प्रदेश के महाजनपद (600 ईसा पूर्व)।

परिचय

महाजनपद काल (600 ईसा पूर्व - 300 ईसा पूर्व) भारत के दूसरे शहरीकरण में एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसका विशेष रूप से उत्तर प्रदेश पर प्रभाव पड़ा। जैसे-जैसे राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति का केंद्र उत्तर-पश्चिम से गंगा के

राजघाट (वाराणसी) में हाल की खुदाई (2023)
 ASI ने 1000 ईसा पूर्व के मिट्टी के बर्तन, शिलालेख और प्राचीन नालियों का पता लगाया, जिससे वाराणसी के लगातार बसे शहर के रूप में प्राचीन होने की पुष्टि हुई।

मैदानों में स्थानांतरित हुआ , सोलह महाजनपद (महान साम्राज्य) उभरे। उत्तर प्रदेश इन प्रमुख महाजनपदों में से आठ का घर था , जिन्होंने भारतीय सभ्यता, राजनीति और संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस युग में बड़े प्रादेशिक राज्यों का उदय , लोहे के औजारों का उपयोग , बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय और शहरी बस्तियों का विस्तार देखा गया। उपजाऊ जलोढ़ भूमि , लौह अयस्क भंडार और गंगा-यमुना नदी प्रणाली की उपस्थिति ने उनके विकास को बढ़ावा दिया।

उत्तर प्रदेश में महाजनपदों की सूची:

16 महाजनपदों में से आठ वर्तमान उत्तर प्रदेश क्षेत्र में स्थित थे :

1. कुरु महाजनपद

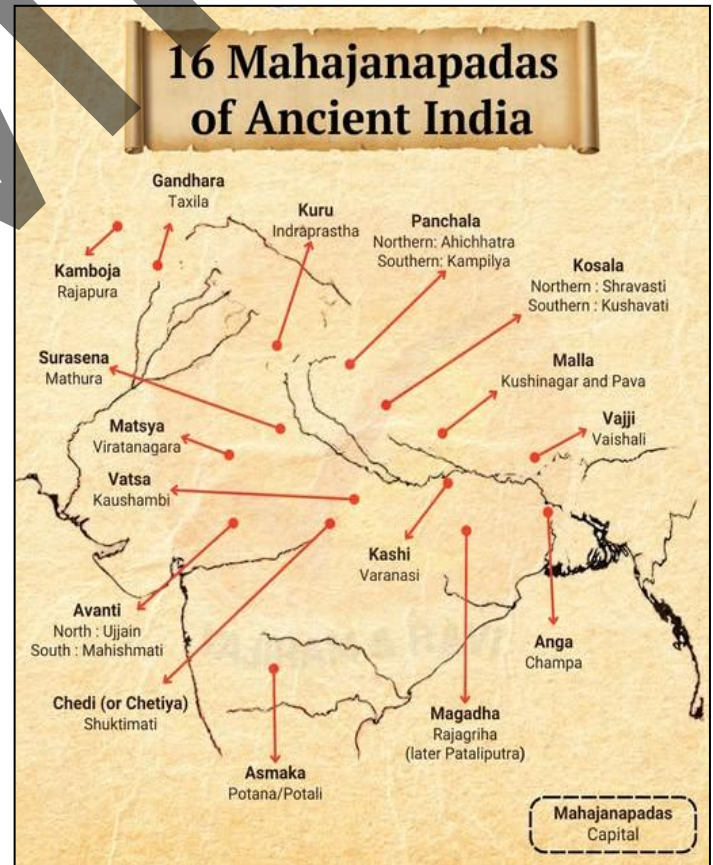
मेरठ और दिल्ली के बीच स्थित , कुरु सबसे शुरुआती वैदिक साम्राज्यों में से एक था , जिसकी राजधानियाँ इंद्रप्रस्थ और हस्तिनापुर थीं। इसने वैदिक साहित्य और हिंदू परंपराओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, महाभारत का केंद्र होने के नाते, यहाँ कुरु वंश के राजनीतिक और सैन्य संघर्ष सामने आए। इस क्षेत्र ने राजशाही से गणतंत्र शासन में परिवर्तन देखा , जो प्राचीन भारत में एक विकसित राजनीतिक संरचना को दर्शाता है।

2. कोसल महाजनपद

उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में स्थित कोसल की राजधानी अयोध्या और श्रावस्ती थी। यह एक प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक शक्ति थी , जिसमें राजा प्रसेनजित एक उल्लेखनीय शासक थे। इस राज्य में शाक्य गणराज्य शामिल था , जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म लुम्बिनी (कपिलवस्तु) हुआ था। कोसल ने बौद्ध धर्म और जैन धर्म को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई , जिससे यह प्राचीन भारत में धार्मिक परिवर्तनों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

3. पांचाल महाजनपद

बरेली, बदायूं और फरुखाबाद में फैले पांचाल की राजधानियाँ अहिच्छत्र और काम्पिल्य थीं। समय के साथ, यह राजशाही से गणतंत्र प्रणाली में परिवर्तित हो गया । यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि कन्नौज , एक प्रमुख राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र, कभी पांचाल का हिस्सा था। महाभारत में द्रौपदी के पिता द्रौपद ने यहाँ शासन किया, जिसने इसकी ऐतिहासिक प्रमुखता को और मजबूत किया।



4. **सुरसेन महाजनपद**

मथुरा **राजधानी** के रूप में, सुरसेन प्राचीन भारत के एक प्रमुख राज्य में से एक था। यह कृष्ण भक्ति का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना और बाद में बौद्ध धर्म का भी प्रभावशाली स्थल बन गया। **ग्रीक राजदूत मेगस्थनीज** ने इसे एक शक्तिशाली राज्य के रूप में वर्णित किया। **राजा अवंतिपुत्र**, जो बुद्ध के अनुयायी थे, राज्य की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं।

5. **वत्स महाजनपद**

प्रयागराज में स्थित (प्राचीन कौशाम्बी), वत्स या एक राजशाही महाजनपद था। यह व्यापार और वाणिज्य का "वंश" प्रमुख केंद्र था, जिससे इसकी आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा मिला। राजा उदयन, इसके सबसे प्रसिद्ध शासकों में से एक थे, जिन्होंने वत्स की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति को सशक्त किया।

6. **मल्ल महाजनपद**

वर्तमान देवरिया, गोरखपुर और कुशीनगर में स्थित, मल्ल राज्य एक गणतंत्र था, जहाँ निर्वाचित शासकों द्वारा शासन किया जाता था। यह बौद्ध धर्म के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल था, क्योंकि भगवान बुद्ध ने पावा में अपना अंतिम भोजन किया और **कुशीनगर में महापरिनिर्वाण** प्राप्त किया। यह क्षेत्र बौद्ध स्तूपों और मठों का केंद्र बना।

7. **काशी महाजनपद**

वाराणसी काशी महाजनपद की राजधानी थी और इसे हिंदू धर्म के सबसे पवित्र शहरों में से एक माना जाता है। यह एक शक्तिशाली राज्य था, लेकिन बाद में कोसल महाजनपद में विलीन हो गया। काशी का आध्यात्मिक महत्व अनंतकाल से बना हुआ है, जिससे यह हिंदू तीर्थस्थलों, परंपराओं और शिक्षा का केंद्र बन गया।

8. **छेदि महाजनपद**

बुंदेलखंड वर्तमान **बांदा** क्षेत्र में स्थित, छेदि महाजनपद की राजधानी सुक्तिमती थी। इसका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है, जो इसकी प्राचीनता को दर्शाता है। महाभारत के अनुसार, **राजा शिशुपाल** इस महाजनपद के प्रसिद्ध शासक थे, जिनका वध वासुदेव कृष्ण द्वारा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के दौरान किया गया था। यह घटना महाभारत के महत्वपूर्ण क्षणों में से एक है।

उत्तर प्रदेश में महाजनपद युग की मुख्य विशेषताएं**1. राजनीतिक घटनाक्रम:**

- राजतंत्रों से गणराज्यों (जैसे, **कुरु और पांचाल**) में स्थानांतरण।
- बड़े, संगठित राज्यों का उदय।
- ब्राह्मणवादी परंपराओं और नए दर्शन (बौद्ध धर्म और जैन धर्म) का प्रभाव।

2. आर्थिक विकास:

- गंगा के मैदानों की उपजाऊ वजह से कृषि फली-फूली।
- लोहे के औजारों और हथियारों ने उन्नत युद्ध और खेती की तकनीक का नेतृत्व किया।
- **कौशाम्बी और वाराणसी** प्रमुख केंद्रों के रूप में व्यापार और वाणिज्य फला-फूला।

3. धार्मिक प्रभाव:

- **बौद्ध धर्म और जैन धर्म** ने उत्तर प्रदेश में मजबूत आधार पाया।
- कोसल, मल्ल और वत्स **बौद्ध गढ़ बन गए**।
- काशी और अयोध्या में **जैन धर्म प्रचलित था**।

4. शहरीकरण और बुनियादी ढांचा:

- **प्रशासनिक और आर्थिक केंद्रों के रूप में** शहरों और कस्बों का उदय।
- **सड़क नेटवर्क और नदी आधारित व्यापार** का विस्तार हुआ।

5. सांस्कृतिक योगदान:

- **महाभारत और रामायण** की कथाएं इसी क्षेत्र से निकलती हैं।
- **कला, साहित्य और दर्शन** फला-फूला।

निष्कर्ष

महाजनपद काल (600 ईसा पूर्व – 300 ईसा पूर्व) उत्तर प्रदेश के इतिहास में एक परिवर्तनकारी युग था। इस अवधि के दौरान शक्तिशाली राज्यों का उदय, आर्थिक समृद्धि, बौद्ध और जैन धर्म का प्रसार तथा नगरीकरण ने भारतीय सभ्यता की दिशा को प्रभावित किया। उपजाऊ भूमि, नदी तटों और व्यापार मार्गों पर स्थित होने के कारण, इन महाजनपदों ने प्राचीन भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विकास की आधारशिला रखी।

साम्राज्यों का युग

मौर्य और गुप्त साम्राज्य ने उत्तर प्रदेश को एक राजनीतिक और सांस्कृतिक शक्ति केंद्र के रूप में स्थापित किया।

मौर्य प्रभाव (321–185 ईसा पूर्व)

- अशोक के स्तंभ लेख कौशांबी और सारनाथ में बौद्ध धर्म के प्रसार का संकेत देते हैं।
- सारनाथ बौद्ध शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बन गया।

गुप्त वंश (319–550 ईस्वी): भारत का स्वर्ण युग

- मथुरा कला शैली के अंतर्गत बौद्ध और जैन मूर्तिकला के उत्कृष्ट नमूने निर्मित हुए।
- प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट्ट उत्तर प्रदेश के शिक्षा केंद्रों में अध्ययनरत थे।

समकालीन संदर्भ-सारनाथ और कौशांबी में हुई खुदाई (2022–2023) में नए अभिलेख मिले, जो अशोक की धर्म प्रचार गतिविधियों और उत्तर प्रदेश में बौद्ध भिक्षुओं की भूमिका को प्रमाणित करते हैं।

➤ उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म

परिचय: बौद्ध धर्म का उद्गम स्थल

उत्तर प्रदेश बौद्ध धर्म के इतिहास में एक प्रमुख स्थान रखता है, क्योंकि गौतम बुद्ध का अधिकांश जीवन यहीं बीता था। इसके कारण, इसे अक्सर "**बौद्ध धर्म का पालना**" कहा जाता है। राज्य के कई स्थल बुद्ध की शिक्षाओं, उपदेशों और महापरिनिर्वाण के अभिन्न अंग रहे हैं, जिससे उत्तर प्रदेश बौद्ध संस्कृति, कला और वास्तुकला के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

गौतम बुद्ध का जीवन उत्तर प्रदेश

जन्म और प्रारंभिक जीवन (623 ईसा पूर्व)

- गौतम बुद्ध, जिनका मूल नाम **सिद्धार्थ गौतम** था, का जन्म **लुंबिनी (नेपाल)** में हुआ था, लेकिन उन्होंने अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय उत्तर प्रदेश में बिताया।
- **कपिलवस्तु** (जो वर्तमान में सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश के निकट स्थित है) शाक्य वंश की राजधानी थी, जहां राजकुमार सिद्धार्थ ने अपना बचपन व्यतीत किया।



त्याग और आत्मज्ञान

- 29 वर्ष की आयु में, उन्होंने अपने राजसी जीवन को त्यागते हुए कपिलवस्तु को छोड़ दिया।
- आत्मज्ञान की तलाश में, उन्होंने वाराणसी, प्रयागराज और गोरखपुर होते हुए यात्रा की।
- **ज्ञान प्राप्ति (बोधि):** गौतम बुद्ध ने बोधगया (बिहार) में पीपल के वृक्ष के नीचे कठोर तपस्या के बाद (बोधि वृक्ष) ज्ञान (निर्वाण) प्राप्त किया।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थल

1. सारनाथ (वाराणसी) – पहला उपदेश

- ज्ञान प्राप्त करने के बाद, बुद्ध ने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया।
- इस घटना को धर्मचक्रप्रवर्तन (धर्म के चक्र का घूमना) कहा जाता है।
- सारनाथ में महत्वपूर्ण संरचनाएं:
 - धमेक स्तूप: अशोक द्वारा निर्मित, जहां बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था।
 - चौखंडी स्तूप: उस स्थान को चिह्नित करता है जहां बुद्ध अपने पहले शिष्यों से मिले थे।
 - अशोक स्तंभ: सिंह शीर्ष (Lion Capital), अब भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है।

2. श्रावस्ती (श्रावस्ती, कोसल) – मठवासी निवास

- कोसल की राजधानी श्रावस्ती में बुद्ध ने 25 वर्षों ऋतुएं बिताई थीं।
- यह वह स्थान था जहां बुद्ध ने कई चमत्कार किए।
- प्रमुख मठ:
 - जेतवन मठ: एक धनी व्यापारी अनाथपिंडिका द्वारा उपहार में दिया गया।
 - पब्बारामा मठ: कई प्रवचनों का स्थल।
- बौद्ध ग्रंथों में महत्व: कई जातक कथाओं में श्रावस्ती का उल्लेख है।

3. कुशीनगर - महापरिनिर्वाण स्थल

- बुद्ध को यहीं महापरिनिर्वाण (अंतिम मोक्ष) प्राप्त हुआ।
 - गोरखपुर जिले में स्थित, कुशीनगर एक प्रमुख तीर्थ स्थल है।
 - महत्वपूर्ण स्मारक:
 - महापरिनिर्वाण मंदिर: इसमें 6.1 मीटर लंबी लेटी हुई बुद्ध प्रतिमा है।
 - रामाभार स्तूप: बुद्ध का दाह संस्कार स्थल।
 - मठ कुवर मंदिर: कुशीनगर में स्थित एक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल है, जहाँ एक विशाल बुद्ध प्रतिमा स्थापित है।
 - अशोक ने कुशीनगर के विकास में भी योगदान दिया।
- ### 4. कौशाम्बी – बौद्ध धर्म का प्रसार
- प्रयागराज के पास कौशाम्बी एक प्रमुख बौद्ध केंद्र था।
 - अशोक ने धम्म शिक्षाओं का प्रसार करते हुए यहां एक अखंड स्तंभ का निर्माण किया।
 - घोसीताराम मठ में बौद्ध भिक्षु निवास करते थे।
- ### 5. संकिसा (फरुखाबाद) – दिव्य अवतरण
- ऐसा माना जाता है कि बुद्ध स्वर्ग से संकिसा में उतरे थे, ब्रह्मा और इंद्र के साथ।
 - अशोक ने यहां एक स्तूप और अखंड स्तंभ बनवाया था।

उत्तर प्रदेश में बौद्ध विस्तार में अशोक की भूमिका

- सम्राट अशोक ने उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उनका योगदान:
 - अशोक स्तंभों और स्तूपों का निर्माण कराया
 - बौद्ध मिशनरियों को मध्य एशिया और श्रीलंका भेजा।
 - सारनाथ, कौशाम्बी और श्रावस्ती में विहार (मठों) का निर्माण कराया
- उत्तर प्रदेश में प्रमुख अशोक शिलालेख:



- सारनाथ अशोक स्तंभ (भारत का राष्ट्रीय प्रतीक)।
- सोहगौरा ताम्रपत्र शिलालेख (अकाल राहत से संबंधित)।
- कौशाम्बी स्तंभ शिलालेख (रानी करुवाकी के दान का उल्लेख है)।

उत्तर प्रदेश में बौद्ध वास्तुकला

1. स्तूप – बुद्ध के जीवन का स्मरण

- धमेक स्तूप (सारनाथ) - बुद्ध के पहले उपदेश को चिह्नित करता है।
- रामाभार स्तूप (कुशीनगर) - बुद्ध का अंतिम संस्कार स्थल।
- पिपरहवा स्तूप (सिद्धार्थनगर) - इसमें बुद्ध के अवशेष शामिल हैं।

2. मठ - बौद्ध शिक्षा के केंद्र

उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का प्रसार और पतन:

बौद्ध धर्म का प्रसार:

- बौद्ध दर्शन ने व्यापारियों, राजाओं और विद्वानों को आकर्षित किया।
- यूपी में बौद्ध विश्वविद्यालय और मठ फले-फूले।
- व्यापारिक मार्गों ने बौद्ध धर्म को मध्य एशिया और चीन में फैलाने में मदद की।

उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का महत्व आज:

- उत्तर प्रदेश एक प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल बना हुआ है।
- सरकार और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने बौद्ध स्थलों के जीर्णोद्धार पर कई महत्वपूर्ण पहल की हैं।
- जापान, चीन, श्रीलंका और थाईलैंड जैसे बौद्ध-बहुल देशों के साथ पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश ने बौद्ध धर्म के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इसके कुछ सबसे प्रमुख स्थलों का घर रहा है। सारनाथ में गौतम बुद्ध का पहला उपदेश से लेकर कुशीनगर में उनके महापरिनिर्वाण तक, यह राज्य बौद्ध धरोहर का हृदयस्थल बना हुआ है। अशोक के स्तंभों, बौद्ध स्तूपों और प्राचीन मठों की उपस्थिति इस क्षेत्र को बौद्ध इतिहास, कला और वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाती है। सरकार और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा संरक्षण कार्यों ने इन स्थलों को और अधिक प्रभावशाली बना दिया है, जिससे यह स्थान बौद्ध अनुयायियों और इतिहास प्रेमियों के लिए अनमोल धरोहर बना हुआ है।

उत्तर प्रदेश में जैन धर्म

परिचय

- जैन धर्म, भारत के सबसे पुराने धर्मों में से एक है जो, अहिंसा सत्य, गैर-स्वामित्व (अपरिग्रह), और आत्म-अनुशासन पर जोर देता है।
- यह एक श्रमणीय धर्म है जो प्राचीन भारत में 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास बौद्ध धर्म के समकालीन उभरा था।

- जेटवन मठ (श्रावस्ती) - 19 वर्षी ऋतुओं के लिए बुद्ध की मेजबानी की।
 - घोसीताराम मठ (कौशाम्बी) - समृद्ध मठवासी केंद्र।
- ### 3. अशोक के स्तंभ – धम्म फैलाना
- सारनाथ अशोक स्तंभ – अशोक की शेर राजधानी है।
 - कौशाम्बी स्तंभ – अशोक की बौद्ध नीतियों के बारे में शिलालेख शामिल हैं।

बौद्ध धर्म का पतन:

- भक्ति आंदोलन के माध्यम से हिंदू धर्म का पुनरुद्धार।
- मुस्लिम आक्रमणों ने कई बौद्ध संरचनाओं को नष्ट कर दिया।
- शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत ने बौद्ध धर्म को हिंदू धर्म में आत्मसात करने का नेतृत्व किया

- उत्तर प्रदेश ने जैन धर्म के विकास और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो कई तीर्थकरों (आध्यात्मिक शिक्षकों) का जन्मस्थान है।
- राज्य न केवल बौद्ध धर्म बल्कि जैन धर्म के भी कई महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों, मंदिरों, शिलालेखों और ऐतिहासिक कड़ियों का केंद्र रहा है।
- उत्तर प्रदेश में जैन धर्म मौर्य, गुप्त और राजपूत सहित विभिन्न राजवंशों के सरक्षण में फला-फूला, और इसका प्रभाव इसकी वास्तुकला, साहित्य और आर्थिक इतिहास में स्पष्ट है।

उत्तर प्रदेश में जैन धर्म की उत्पत्ति और विकास:

- जैन धर्म की उत्पत्ति ऋषभनाथ (आदिनाथ) से हुई थी, जिन्हें पहला तीर्थकर माना जाता था।
- उत्तर प्रदेश कई जैन तीर्थकरों का घर रहा है, जो इसे जैन धर्म के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक बनाता है।
- 24 वें तीर्थकर, महावीर (599-527 ईसा पूर्व), गौतम बुद्ध के समकालीन थे, हालांकि उनका जन्म बिहार में हुआ था।
- प्रारंभिक जैन समुदाय ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न प्रमुख शहरी केंद्रों में अपनी जड़ें जमाई और यहाँ धर्म का प्रचारप्रसार हुआ।-

उत्तर प्रदेश में जैन स्थल

1. अयोध्या - अयोध्या को कई जैन तीर्थकरों का जन्मस्थान माना जाता है।

- अयोध्या में जन्मे तीर्थकर:
 - ऋषभनाथ (आदिनाथ) – प्रथम तीर्थकर (जैन धर्म के संस्थापक)
 - अजितनाथ – द्वितीय तीर्थकर
 - अभिनंदननाथ – चौथे तीर्थकर
 - सुमतिनाथ – 5 वें तीर्थकर
 - अनंतनाथ – 14 वें तीर्थकर
- अयोध्या में प्रसिद्ध जैन मंदिर:
 - श्री दिगंबर जैन मंदिर
 - श्री दिगंबर जैन मंदिर
 - श्री दिगंबर जैन मंदिर

2. वाराणसी (काशी) – तीर्थकरों का शहर

- 23 वें तीर्थकर का जन्मस्थान, पार्श्वनाथ (872 ईसा पूर्व)।
- वाराणसी से अन्य तीर्थकर:
 - सुपार्श्वनाथ – 7 वें तीर्थकर
 - चंद्रप्रभा – 8 वें तीर्थकर
 - श्रेयांसनाथ – 11 वें तीर्थकर

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश में जैन धर्म का गहरा ऐतिहासिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक विकास हुआ है। यह राज्य कई जैन तीर्थकरों के जन्मस्थान का साक्षी रहा है और प्राचीन काल से व्यापार, शिक्षा और आध्यात्मिक जागरण का केंद्र बना हुआ है। इतिहास में अनेक चुनौतियों के बावजूद, जैन धर्म उत्तर प्रदेश की विरासत का एक अभिन्न अंग बना रहा। राज्य के जैन मंदिर, तीर्थ स्थल और सांस्कृतिक परंपराएँ आज भी जीवंत हैं, जो इसकी सदियों पुरानी विरासत को दर्शाती हैं।

वाराणसी में प्रमुख जैन मंदिर:

- श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर
- श्री सुपार्श्वनाथ जैन मंदिर
- चंद्रप्रभु जैन मंदिर

3. श्रावस्ती – जैन ज्ञान की भूमि

- इसे चंद्रपुरी या चंद्रिकापुरी के नाम से भी जाना जाता है।
- दो तीर्थकरों का जन्मस्थान:
 - संभवनाथ – तीसरे तीर्थकर
 - चंद्रप्रभानाथ – 8 वें तीर्थकर
- प्रमुख जैन स्थल:
 - चंद्रपुरी जैन मंदिर
 - प्राचीन जैन स्तूप और गुफाएं
 - श्रावस्ती जैन तीर्थ क्षेत्र

4. कौशाम्बी - एक प्राचीन जैन केंद्र

- मौर्य युग के दौरान एक महत्वपूर्ण जैन केंद्र।
- इसमें जैन गुफाएं, शिलालेख और प्राचीन जैन मंदिरों के अवशेष शामिल हैं।
- उदयगिरि-खंडगिरि जैन गुफाएं जैन भिक्षुओं से जुड़ी हुई हैं।

5. देवगढ़ (ललितपुर) – जैन विरासत स्थल

- गुप्त काल के प्रसिद्ध जैन मंदिरों का घर है।
- देवगढ़ में दशावतार मंदिर, हालांकि मुख्य रूप से हिंदू है, इसमें जैन मूर्तियां हैं।
- 8 वीं-9 वीं शताब्दी ईस्वी की प्रमुख जैन मूर्तियां यहां पाई गई हैं।

6. हस्तिनापुर – प्रसिद्ध जैन स्थल

- हस्तिनापुर एक महत्वपूर्ण जैन तीर्थस्थल है।
- प्रसिद्ध जैन मंदिर:
 - अष्टपद तीर्थ (माना जाता है कि यह पहले जैन तीर्थकर, ऋषभनाथ से जुड़ा हुआ है)

उत्तर प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पहले उत्तर प्रदेश की स्थिति

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सामरिक महत्व

1206 में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पहले, उत्तर प्रदेश ने राजनीतिक विखंडन और क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता की स्थिति का सामना किया। इस अवधि में कई स्थानीय शासक और राजवंश सत्ता के लिए संघर्ष कर रहे थे। गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र, जो अपनी उर्वरता और आर्थिक समृद्धि के लिए जाना जाता है, रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था और बाहरी शक्तियों के आक्रमणों का प्रमुख लक्ष्य बन गया।

राजनीतिक स्थिति और क्षेत्रीय राजवंश

- आधुनिक उत्तर प्रदेश का क्षेत्र 12वीं शताब्दी में अत्यधिक राजनीतिक अस्थिरता का शिकार था। इस काल में कन्नौज के गहड़वाल, बुंदेलखंड के चंदेला और अन्य छोटे राजपूत राज्य इस क्षेत्र के राजनीतिक परिदृश्य पर हावी थे।
- जयचंद्र के शासनकाल में गहड़वाल वंश के शासक प्रमुख थे, जिनकी राजधानी कन्नौज थी। उनका प्रशासन एक विकेंद्रीकृत सामंती संरचना पर आधारित था, जिससे वे बाहरी आक्रमणों के प्रति संवेदनशील था।
- दिल्ली सल्तनत के उदय से पहले, उत्तर प्रदेश लगातार युद्धों और आक्रमणों का केंद्र बना रहा। विशेष रूप से 1194 ई. में चंदावर (आधुनिक फिरोजाबाद के निकट) में जयचंद्र की मुहम्मद गोरी के खिलाफ पराजय और मृत्यु ने इस क्षेत्र की स्थिरता पर गहरा प्रभाव डाला।
- गहड़वाला शासन के दौरान वाराणसी अपने धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध था। लेकिन चंदावर की हार के बाद, इसे मंदिरों के विध्वंस और व्यापक तबाही का सामना करना पड़ा।
- सारनाथ और अन्य बौद्ध केंद्रों को भी निशाना बनाया गया, जिससे इन स्थलों की लूटपाट और धीरे धीरे-गिरावट हुई।

चंदावर का युद्ध (1194)

- मुहम्मद गोरी और जयचंद्र (गहड़वाल शासक) के बीच लड़ाई लड़ी।
- जयचंद्र की हार और मृत्यु ने इस क्षेत्र के हिंदू राज्यों को काफी कमजोर कर दिया, जिससे तुर्की शासन की स्थापना में मदद मिली।

कुतुब-उद-दीन ऐबक और प्रारंभिक तुर्की घुसपैठ

- मुहम्मद गोरी के एक विश्वसनीय गुलाम सेनापति कुतुब-उद-दीन ऐबक ने तराइन की दूसरी लड़ाई (1192) के बाद गोरी के गजनी लौटने के बाद उत्तर प्रदेश में अपने अभियान शुरू किए।
- उन्होंने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र को निशाना बनाया। 1192 में, उन्होंने मेरठ और बारां (आधुनिक बुलंदशहर) जैसे महत्वपूर्ण शहरों पर कब्जा कर लिया।
- कोइल (आधुनिक अलीगढ़) को 1194 में दो राजपूतों से जीत लिया गया था, जो दोआब क्षेत्र में रणनीतिक विस्तार को उजागर करता है।

विस्तार और समेकन

- 1197-98 में, ऐबक ने बदायूं पर विजय प्राप्त की और पूर्व गहड़वाल राजधानी वाराणसी को फिर से हासिल कर लिया, जिससे तुर्की प्रभुत्व का और विस्तार हुआ।
- चंदेल (बांदा जिला) से कालिंजर (1202) को ऐबक की विजय चंदेलों की क्षेत्रीय शक्ति को कम करने में महत्वपूर्ण थी।

प्रमुख लड़ाइयाँ और उनका महत्व

- तराइन का युद्ध (1191 एवं 1192)



- इन लड़ाइयों ने उत्तरी भारत में तुर्की की घुसपैठ की शुरुआत की और उत्तर प्रदेश के बाद के आक्रमणों के लिए मंच तैयार किया।
- **चंदावर की लड़ाई (1194):**
 - जयचंद्र की हार ने गढ़वाल साम्राज्य के पतन को चिह्नित किया।
- **कालिंजर की घेराबंदी (1202):**
 - बांदा जिले में **कालिंजर किला**, बुंदेलखंड को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण था, जो तुर्कों की सैन्य और राजनीतिक महत्वाकांक्षा को प्रदर्शित करता था।

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव

- पूर्व-दिल्ली सल्तनत उत्तर प्रदेश गंगा-जमुनी संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला एक जीवंत क्षेत्र था, जिसमें हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म सह-अस्तित्व में थे।
- आक्रमणों के बाद धार्मिक उत्पीड़न, मंदिरों का विनाश (विशेष रूप से **वाराणसी** में), और महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय बदलाव देखे गए। 1198 में **सारनाथ के बौद्ध स्थल** का विनाश इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के पतन का प्रतीक था।

आर्थिक स्थिति

- तुर्कों के नियंत्रण से पहले, उत्तर प्रदेश उपजाऊ **गंगा-यमुना दोआब के कारण कृषि रूप से समृद्ध था**
- आक्रमणों के कारण अस्थिरता ने व्यापार और कृषि को गंभीर रूप से बाधित किया, जिससे क्षेत्रीय समृद्धि प्रभावित हुई।

प्रमुख शहर और उनके ऐतिहासिक संदर्भ

शहर	ऐतिहासिक संदर्भ (पूर्व-सल्तनत काल)
कन्नौज	गढ़वाल राजवंश की राजधानी; सांस्कृतिक समृद्धि के लिए प्रसिद्ध; राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का केंद्र बिंदु बन गया।
वाराणसी	आध्यात्मिक और धार्मिक केंद्र, 1194 के बाद व्यापक विनाश का सामना करना पड़ा।
अलीगढ़ (कोइल)	1194 में ऐबक द्वारा कब्जा किए गए महत्वपूर्ण रणनीतिक गढ़।
कालिंजर	चंदेल साम्राज्य का महत्वपूर्ण किला 1202 में ऐबक द्वारा घेर लिया गया था।
बदायूं	1198 के बाद ऐबक के नियंत्रण में एक रणनीतिक आधार बन गया।
वाराणसी	धार्मिक-सांस्कृतिक केंद्र, 1194 में तबाही का सामना करना पड़ा।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश में **दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पहले का काल** राजनीतिक अस्थिरता और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तनों से भरा हुआ था। **मुहम्मद गोरी और उसके सेनापति कुतुब-उद-दीन ऐबक** द्वारा किए गए आक्रमणों और विजय अभियानों ने इस क्षेत्र में **इस्लामी शासन की नींव** रखी, जो आने वाली कई शताब्दियों तक बना रहा। इस युग ने **उत्तर प्रदेश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ताने-बाने** को गहराई से प्रभावित किया। धार्मिक केंद्रों का विनाश, नई प्रशासनिक संरचनाओं की स्थापना और इस्लामी स्थापत्य का प्रसार इस काल की प्रमुख विशेषताएँ थीं। इस काल की विरासत **समकालीन सामाजिक, धार्मिक और स्थापत्य परंपराओं** में आज भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है

उत्तर प्रदेश में दिल्ली सल्तनत (1206 - 1526):**परिचय**

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.) का काल उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इस अवधि ने भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना को चिह्नित किया, जिसने गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में गहराई से प्रभाव डाला।

सल्तनत काल में शासन प्रणाली, वास्तुकला, धार्मिक परंपराएँ और सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन हुए। इस्लामी प्रशासनिक तंत्र के विस्तार के साथ-साथ मंदिरों का विनाश, नए शहरों की स्थापना और वास्तुकला में इंडो-इस्लामिक शैली का विकास हुआ। उत्तर प्रदेश की संस्कृति पर इस युग की छाप आज भी इसके ऐतिहासिक स्थलों, स्मारकों और परंपराओं में देखी जा सकती है।

स्थापना एवं प्रारंभिक विस्तार (1206-1290 CE)

दिल्ली सल्तनत मुहम्मद गोरी के एक सेनापति कुतुब-उद-दीन ऐबक द्वारा गुलाम या मामलुक राजवंश (1206-1290 सीई) की स्थापना के साथ शुरू हुई। उत्तर भारत में सल्तनत के विस्तार के साथ उत्तर प्रदेश ने सल्तनत के क्षेत्र में प्रमुखता से प्रवेश किया:

- कुतुब-उद-दीन ऐबक (1206-1210 ईस्वी) ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों पर प्रारंभिक नियंत्रण स्थापित किया।
- उनके उत्तराधिकारी, इल्तुतमिश (1211-1236 ई.) ने मेरठ, बदायूं, कन्नौज, वाराणसी और प्रयागराज जैसे प्रमुख शहरों को सुरक्षित करते हुए सल्तनत की सीमाओं का काफी विस्तार किया।
- इल्तुतमिश ने बदायूं और मेरठ से सिक्के जारी किए, जो उनके सामरिक महत्व को दर्शाते हैं।
- सुल्तान बलबन (1266-1287 ई.) ने सख्त शासन के माध्यम से सल्तनत के शासन को मजबूत किया, विशेष रूप से मेरठ और दोआब क्षेत्र में विद्रोहियों का दमन किया।

खिलजी राजवंश (1290-1320 CE)

खिलजी शासकों ने उत्तर प्रदेश में सत्ता को और मजबूत किया:

- बाजार सुधारों और सैन्य कौशल के लिए प्रसिद्ध अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) ने रणनीतिक व्यापार मार्गों पर नियंत्रण को मजबूत करते हुए उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया।
- उनकी विजय में प्रयागराज, वाराणसी और अवध क्षेत्र जैसे प्रमुख शहर शामिल थे।
- कीमतों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से अलाउद्दीन के बाजार सुधारों को यूपी के शहरों में प्रमुखता से लागू किया गया था, जो इस क्षेत्र के आर्थिक महत्व को दर्शाता है।

तुगलक वंश (1320-1414 CE)

तुगलक शासकों के तहत, उत्तर प्रदेश महत्वाकांक्षी लेकिन विवादास्पद प्रशासनिक प्रयोगों का केंद्र बन गया:

- गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ईस्वी) ने खिलजी वंश के पतन के बाद उत्तरी उत्तर प्रदेश को स्थिर किया।
- मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 सीई) ने कुख्यात रूप से, उन्होंने अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरित कर दी, जिससे आर्थिक व्यवधान उत्पन्न हुआ और उत्तर प्रदेश की समृद्धि प्रभावित हुई। बाद में, उन्होंने दोबारा नियंत्रण स्थापित किया और यूपी के महत्व को पुनः स्वीकार करते हुए राजधानी वापस दिल्ली ले आए।
- फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 सीई) ने कृषि विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से गंगा-यमुना दोआब में कई नहरों और कुओं का निर्माण करवाया।
- उन्होंने शहरों की स्थापना की और मेरठ, सहारनपुर और बदायूं जैसे क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर मस्जिदों और मदरसों का निर्माण करवाया।

सैय्यद राजवंश (1414-1451 CE)

इस अल्पकालिक राजवंश ने सीमित लेकिन उल्लेखनीय प्रभाव डाला :

- सैय्यदों ने यूपी के क्षेत्रों को सापेक्ष स्थिरता के साथ प्रशासित किया लेकिन सल्तनत की सीमाओं का विस्तार करने में विफल रहे।

- उनका काल निरंतर सांस्कृतिक आदान-प्रदान और धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना के लिए प्रसिद्ध है।

लोदी वंश (1451-1526 CE)

लोदी राजवंश, मूल रूप से अफगान होने के कारण, यूपी के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को और प्रभावित किया:

- **बहलुल लोदी (1451-1489 सीई)** ने पश्चिमी यूपी में क्षेत्रों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया।
- **सिकंदर लोदी (1489-1517 सीई)** ने 1504 में आगरा शहर को एक प्रमुख राजधानी के रूप में स्थापित किया, इस प्रकार दक्षिणी उत्तर प्रदेश की ओर प्रशासनिक और राजनीतिक ध्यान केंद्रित किया।
- सिकंदर लोदी ने कृषि सुधारों को भी बढ़ावा दिया, बाजारों का विस्तार किया और लोदी गार्डन और कई मकबरो सहित कई वास्तुशिल्प परियोजनाओं की शुरुआत की।
- **इब्राहिम लोदी (1517-1526 सीई)** इस अवधि में संघर्षों और विकेंद्रीकरण में वृद्धि हुई, जिससे सल्तनत कमजोर हो गई और अंततः 1526 में पानीपत की लड़ाई में बाबर के हाथों पराजय के साथ दिल्ली सल्तनत का अंत हुआ।

सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभाव

दिल्ली सल्तनत ने उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक परिवेश को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया:

- **इंडो-इस्लामिक वास्तुकला फली-फूली**, जो अटाला मस्जिद (जौनपुर), जामा मस्जिद (फतेहपुर सीकरी), और विभिन्न मकबरो और मदरसों जैसे स्मारकों के माध्यम से दिखाई देती है।
- उत्तर प्रदेश में **समन्वयवाद और सूफी-भक्ति परंपराओं का उदय हुआ। कबीर और अमीर खुसरो जैसे संतों** ने गंगा-जमुनी तहजीब की मिसाल पेश की।
- भाषाओं और साहित्य में फ़ारसी, अरबी और स्थानीय बोलियों, विशेष रूप से हिंदी, उर्दू और अवधी का संगम हुआ, जिससे इस क्षेत्र की भाषाई विरासत विकसित हुई।

प्रशासन और अर्थव्यवस्था

सल्तनत युग ने प्रशासनिक प्रथाओं को महत्वपूर्ण नया रूप दिया:

- प्रदेशों को इक्ता में **विभाजित किया गया था**, जिसका प्रबंधन राजस्व एकत्र करने के लिए जिम्मेदार इक्तदारों द्वारा किया जाता था, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।
- आगरा, प्रयागराज, जौनपुर और कन्नौज जैसे शहर प्रमुख व्यापार केंद्र बन गए।
- विशेष रूप से अलाउद्दीन खिलजी और सिकंदर लोदी के तहत आर्थिक सुधारों ने बाजार की कीमतों को स्थिर किया और नहर सिंचाई और बेहतर कृषि नीतियों के माध्यम से कृषि उत्पादकता में सुधार हुआ।

महत्वपूर्ण स्थल और स्मारक

शहर/जिला	महत्वपूर्ण स्मारक/स्थल	द्वारा निर्मित/के तहत	टिप्पणियां/विशेषताएं
जौनपुर	अटाला मस्जिद, जामा मस्जिद	शर्की वंश (तुगलक युग)	इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का उदाहरण
आगरा	शहर और किलेबंदी	सिकंदर लोदी	राजधानी शहर, सामरिक महत्व
प्रयागराज	खुसरो बाग	जहाँगीर (जुड़ी हुई विरासत)	सल्तनत से मुगल संक्रमण को दर्शाता है
मेरठ	मकबरे और मस्जिदें	फिरोज शाह तुगलक	वास्तुकला और प्रशासनिक विरासत

उत्तर प्रदेश में मुगल वंश -

परिचय: उत्तर प्रदेश ने मुगल राजवंश (1526-1857) के तहत समृद्धि और सांस्कृतिक का शिखर देखा। यह क्षेत्र मुगल शक्ति का केंद्र बन गया, विशेष रूप से गंगा-यमुना दोआब में रणनीतिक स्थिति के कारण।

बाबर (1526-1530): मुगल शासन की नींव

- पानीपत की पहली लड़ाई (1526) के बाद मुगल साम्राज्य के संस्थापक।
- यूपी में सीमित प्रत्यक्ष हस्तक्षेप; इंडो-फारसी संश्लेषण की नींव रखते हुए फारसी संस्कृति की शुरुआत की।

हुमायूँ (1530-1540, 1555-1556): संक्रमणकालीन अवधि

- शेरशाह सूरी के प्रशासनिक सुधारों से प्रभावित सीमित प्रभाव।
- शेरशाह का ग्रेंड ट्रंक रोड काफी हद तक यूपी से होकर गुजरता था।

अकबर (1556-1605): समेकन और महिमा का युग

- मुगल साम्राज्य अपने चरम पर पहुंच गया, खासकर आगरा और फतेहपुर सीकरी में।
- प्रशासनिक सुधार:
 - मनसबदारी व्यवस्था
 - टोडरमल द्वारा राजस्व सुधार (ज़ब्ती प्रणाली)।
- दीन-ए-इलाही और सुलह-ए-कुल के माध्यम से धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा दिया गया।
- प्रमुख स्मारक: इलाहाबाद का किला, फतेहपुर सीकरी, बुलंद दरवाजा।
- करेंट अफेयर्स लिंक: पर्यटन को बढ़ावा देने वाली "अडॉप्ट ए हेरिटेज" योजना के तहत मुगल स्मारकों का जीर्णोद्धार।

जहाँगीर (1605-1627): सांस्कृतिक संरक्षण

- कलात्मक उत्कर्ष, विशेष रूप से पेंटिंग।
- नूरजहाँ ने प्रशासन को काफी प्रभावित किया।
- आगरा और आसपास के क्षेत्र में मुगल वास्तुकला का निरंतर संरक्षण।

शाहजहाँ (1627-1658): स्थापत्य शिखर

- ताजमहल (आगरा), प्रेम का प्रतीक, यूनेस्को विश्व धरोहर, दुनिया के सात अजूबे में शामिल।
- राजधानी शुरू में आगरा, बाद में शाहजहानाबाद (दिल्ली) में स्थानांतरित हो गई।
- योगदान: लाल किला, जामा मस्जिद।
- करेंट अफेयर्स लिंक: सुप्रीम कोर्ट ताजमहल के संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण उपायों में सक्रिय रूप से शामिल है।

औरंगजेब (1658-1707): पतन शुरू होता है

- रूढ़िवादी धार्मिक नीतियों ने विद्रोह का कारण बना, विशेष रूप से जाट और बुंदेला विद्रोह।
- तीव्र धार्मिक नीतियों के कारण मुगल केंद्रीय सत्ता कमजोर हो गई।
- उत्तर प्रदेश ने आंतरिक विखंडन का अनुभव किया, जिससे क्षेत्रीय स्वायत्तता का मार्ग प्रशस्त हुआ, विशेष रूप से सआदत खाने बुरहान-उल-मुल्क के तहत अवध।

औरंगजेब के पतन के बाद

- स्वायत्त राज्यों का उदय: अवध (लखनऊ), रोहिलखंड, बनारस।
- नवाबी संस्कृति स्वतंत्र रूप से फली-फूली, खासकर लखनऊ में।
- उत्तर प्रदेश ने कमजोर होती मुगल सत्ता के कारण विकेंद्रीकरण का अनुभव किया।

प्रशासनिक योगदान

- मनसबदारी और जागीरदारी प्रणाली (अकबर का समय): संरचित सैन्य और राजस्व प्रशासन।
- टोडरमल की ज़ब्ती प्रणाली: कृषि उत्पादकता और राजस्व संग्रह में सुधार।

कला और सांस्कृतिक उपलब्धियां

- मुगल दरबार में कथक नृत्य का विकास हुआ।
- मीर तक़ी मीर और मिर्जा ग़ालिब जैसे कवियों के साथ उर्दू साहित्य का उत्कर्ष।
- स्थापत्य विरासत में आगरा, फतेहपुर सीकरी, इलाहाबाद, लखनऊ की स्मारक शामिल हैं।

सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

- ज़ब्ती (राजस्व) प्रणाली ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि की।
- जागीरदारी और मनसबदारी ने पूरे यूपी में प्रशासनिक ढांचा तैयार किया।
- बेहतर बुनियादी ढांचे और प्रशासन के कारण व्यापार फला-फूला।

विरासत और समकालीन प्रासंगिकता

- मुगल वास्तुकला यूपी की पर्यटन अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण, रोजगार और राजस्व पैदा करना।

उत्तर प्रदेश का आधुनिक इतिहास

- ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (GIS-2023) ने मुगल स्मारकों से जुड़े विरासत पर्यटन के अवसरों पर प्रकाश डाला।
- मुगल सांस्कृतिक विरासत यूपी की गंगा-जमुनी तहजीब की नींव है।

उत्तर प्रदेश का आधुनिक इतिहास

उत्तर प्रदेश ने मध्ययुगीन विखंडन से राष्ट्रवादी जागरण के केंद्र तक एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसका आधुनिक इतिहास सामाजिक-राजनीतिक उथल-पुथल, सांस्कृतिक प्रगति और स्वतंत्रता आंदोलन में उल्लेखनीय योगदान की विशेषता है।

ब्रिटिश शासन का आगमन और औपनिवेशिक विस्तार

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अवध के तीसरे नवाब के शासनकाल के दौरान उत्तर प्रदेश में प्रवेश किया। उनकी व्यावसायिक महत्वाकांक्षाएं तेजी से क्षेत्रीय वर्चस्व में बदल गईं, खासकर बक्सर की लड़ाई (1764) के बाद। यूपी, जिसे तब संयुक्त प्रांत के रूप में जाना जाता था, कंपनी के उत्तरी प्रशासन का केंद्र बन गया, जिसने ब्रिटिश औपनिवेशिक नियंत्रण की नींव रखी।

बक्सर की लड़ाई (1764)

- 22 अक्टूबर, 1764 को बक्सर, वर्तमान बिहार के पास, मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और भारतीय सहयोगियों: मीर कासिम (बंगाल के नवाब), शुजा-उद-दौला (अवध के नवाब), और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय के बीच लड़ा गया।
- परिणाम: अंग्रेजों के लिए निर्णायक जीत, उत्तर भारत में मुगल प्रभुत्व के अंत को चिह्नित करना।
- प्रभाव: अंग्रेजों ने बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण हिस्सों पर नियंत्रण हासिल कर लिया। पराजित शासकों को अपमानजनक शर्तें स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया, जिससे उन्हें अपने प्रमुख क्षेत्रों और राजस्व से हाथ धोना पड़ा।

इलाहाबाद की संधि (1765):

- शाह आलम द्वितीय ने बंगाल, बिहार और ओडिशा के दीवानी अधिकारों (राजस्व एकत्र करने का अधिकार) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया।
- इसने अंग्रेजों को राजस्व संग्रह और प्रशासन पर नियंत्रण दिया, जिससे व्यापक आर्थिक शोषण हुआ।

मराठा आधिपत्य को हटाना

- मुगल पतन के बाद, उत्तर प्रदेश में मराठा साम्राज्य का उदय हुआ, जिसने रोहिलखंड जैसे क्षेत्रों पर आक्रमण किया, रघुनाथ राव और मल्हाराव होल्कर के अधीन रोहिल्लाओं को हराया।
- नजीब-उद-दौला के पोते गुलाम कादिर को मराठा जनरल महादजी सिंधिया (1788) ने पकड़ लिया और पराजित किया।
- दूसरा आंग्ल-मराठा युद्ध (1803): अंग्रेजों ने मराठों को हराया, जिससे अधिकांश यूपी क्षेत्र ब्रिटिश आधिपत्य में आ गया।

लखनऊ और अवध पर ब्रिटिश आधिपत्य

- 1775 में, आसफ-उद-दौला ने गवर्नर-जनरल वारेन हेस्टिंग्स के दबाव में फैजाबाद की संधि के तहत बनारस को अंग्रेजों को सौंप दिया, जिससे अवध में तैनात ब्रिटिश सेना के लिए भुगतान बढ़ गया।
- अवध का विलय (1856): नवाब वाजिद अली शाह पर कुशासन का आरोप लगाया गया, जिसके परिणामस्वरूप अवध का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय हो गया। लखनऊ और अवध सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन आ गए, जिससे व्यापक असंतोष उत्पन्न हुआ, जो अंततः 1857 के विद्रोह का एक प्रमुख कारण बना।
- लॉर्ड डलहौजी द्वारा अपनाए गए व्यपगत के सिद्धांत ने असंतोष को और बढ़ावा दिया और ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा किए गए विलयों को उचित ठहराने का आधार बना।

- **जमींदारी व्यवस्था के** तहत **शोषणकारी राजस्व नीतियों** ने कृषि संकट, ग्रामीण ऋणग्रस्तता और व्यापक आक्रोश को जन्म दिया।

1857 का विद्रोह: प्रथम स्वतंत्रता संग्राम-(विषय-3 में चर्चा की गई है)

जमींदारी व्यवस्था

- अंग्रेजों द्वारा भू-राजस्व संग्रह की एक मध्यस्थ प्रणाली के रूप में **जमींदारी प्रथा** पेश की गई, जिसमें जमींदारों को वंशानुगत भू-स्वामियों के रूप में मान्यता दी गई।
- प्रभाव: किसानों पर बढ़ता बोझ, आर्थिक शोषण, ग्रामीण गरीबी।
- दीर्घकालिक प्रभाव: इसने कृषि संघर्षों और सामाजिक तनावों को जन्म दिया, जो आज भी समकालीन कृषि समस्याओं को प्रभावित करते हैं और भूमि सुधारों को लेकर जारी बहस में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

ब्रिटिश शासन के दौरान किसान आंदोलन

- **अवध किसान सभा (1920)**
 - बाबा रामचंद्र के नेतृत्व में, किसानों को दमनकारी **जमींदारी प्रथाओं** के खिलाफ संगठित किया।
 - उद्देश्य: **किराया में कमी, जमींदारी का उन्मूलन**, आर्थिक-राजनीतिक सशक्तिकरण की मांग।
 - तरीके: सामूहिक बैठकें, प्रदर्शन, संगठित विरोध।
 - ब्रिटिश दमन: आंदोलनकारियों पर दमन, नेताओं की गिरफ्तारी, लेकिन आंदोलनों ने स्वतंत्रता के बाद **भूमि सुधारों में योगदान** दिया।
 - विरासत: समकालीन **किसान आंदोलनों को प्रभावित करती है**, विशेष रूप से हाल के **किसानों के विरोध प्रदर्शन (2020-21)** जो वर्तमान कृषि मुद्दों में इसकी स्थायी प्रासंगिकता को प्रदर्शित करते हैं।

एका आंदोलन -1921-1922

- लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, उन्नाव में फैला।
- नेता: **मदारी पासी**।
- शोषणकारी तालुकदारी प्रणाली, **उच्च किराए, जबरन श्रम (बेगार)** और **नजराना** का भुगतान करने से इनकार करने का विरोध किया।
- स्थायी प्रभाव: सामंती जमींदारों द्वारा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और शोषण पर प्रकाश डाला गया।

अखिल भारतीय किसान सभा (AIKS)

- लखनऊ (1936) में स्थापित।
- उद्देश्य: **भूमि सुधार, उचित कृषि मूल्य**, कृषि ऋण में **कमी**, किसान अधिकारों की सुरक्षा की वकालत करना।
- प्रमुख ऐतिहासिक योगदान: तेलंगाना किसान सशस्त्र संघर्ष (1940)।

ब्रिटिश शासन के तहत आदिवासी आंदोलन

- **कोया विद्रोह:** मिर्जापुर, इलाहाबाद; में ब्रिटिश प्रतिबंधात्मक वन कानूनों, जबरन श्रम और आर्थिक शोषण का विरोध किया।
- **भील विद्रोह:** दमनकारी ब्रिटिश भू-राजस्व बस्तियों के खिलाफ विरोध दिया।

ब्रिटिश शासन के दौरान शैक्षिक सुधार

- हिंदी, उर्दू, संस्कृत में **स्थानीय शिक्षा** के साथ-साथ **अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों** की शुरुआत।
- प्रमुख शैक्षणिक संस्थान:
 - **इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1887):** बौद्धिक विकास केंद्र।
 - **बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू., 1916):** आधुनिक शिक्षा के साथ हिंदू परंपराओं का सम्मिश्रण, पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित।

लखनऊ विश्वविद्यालय (1921): उच्च शिक्षा, अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए हब के रूप में।

उत्तर प्रदेश के प्राचीन शहर: इतिहास और विरासत की एक झलक

उत्तर प्रदेश कई प्राचीन शहरों का घर है जिन्होंने भारत की संस्कृति, ज्ञान, परंपरा और वाणिज्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये शहर भारत के गौरवशाली अतीत और विरासत की गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

1. वाराणसी - "प्रकाश का नगर" (काशी)

भारत के सबसे पुराने बसे हुए शहरों में से एक, वाराणसी 3000 से अधिक वर्षों से वैदिक संस्कृति का केंद्र रहा है। गंगा के तट पर स्थित, यह श्री काशी विश्वनाथ मंदिर, मणिकर्णिका घाट, चौखंडी और धमेख स्तूपों के लिए जाना जाता है।

वाराणसी का महत्त्व:

- **भौगोलिक महत्त्व:** गंगा के किनारे स्थित, कृषि और आर्थिक समृद्धि में योगदान।
- **आर्थिक महत्त्व:** बनारसी रेशम की साड़ियों, पीतल के बर्तन, लकड़ी के खिलौने और पत्थर की नक्काशी का केंद्र।
- **सांस्कृतिक विरासत:** संगीत, कला और साहित्य के लिए जाना जाता है; भारत कला भवन संग्रहालय में प्राचीन कलाकृतियां हैं।
- **पर्यटन:** इसमें सारनाथ शामिल है, जहां बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, और नदी के किनारे 80 से अधिक घाट हैं।
- **क्या आपको मालूम है?:**
 - बनारसी पान और लंगड़ा आम को जी.आई. टैग मिला है।
 - वाराणसी शंघाई सहयोग संगठन (SCO) की पहली सांस्कृतिक और पर्यटन राजधानी बन गया।

2. अयोध्या - भगवान राम का जन्मस्थान

प्राचीन ग्रंथों में साकेत के रूप में जाना जाता है, अयोध्या सात मोक्षदायिनी (मुक्ति) शहरों में से एक है। यह भगवान राम का जन्मस्थान है और सरयू नदी के तट पर स्थित है।

अयोध्या का महत्त्व:

- **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व:** अथर्ववेद में देवताओं द्वारा निर्मित शहर के रूप में संदर्भित।
- **भौगोलिक महत्त्व:** सरयू नदी के तट पर स्थित, इसकी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्त्व में योगदान देता है।
- **तीर्थ स्थल:** सबसे महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थ स्थलों में से एक।
- **क्या आपको मालूम है?:**
 - जैन धर्म, बौद्ध धर्म और इस्लाम धर्म भी यहीं फले-फूले।
 - 24 जैन तीर्थकरों में से पांच का जन्म यहीं हुआ था।

3. मथुरा (वंदावन) - कृष्ण की भूमि

सबसे पवित्र शहरों में से एक, मथुरा भगवान कृष्ण का जन्मस्थान है और यमुना नदी के तट पर स्थित है।

मथुरा का महत्त्व:

- **भौगोलिक महत्त्व:** रणनीतिक रूप से एक प्राचीन व्यापार मार्ग पर स्थित है।
- **आर्थिक महत्त्व:** हस्तशिल्प, डेयरी उद्योग (पेड़ा, बर्फी, घी) के लिये प्रसिद्ध है।
- **पर्यटन:** कृष्ण जन्मभूमि मंदिर, इस्कॉन मंदिर और भव्यता के साथ जन्माष्टमी और होली मनायी जाती हैं।

4. कन्नौज - भारत की इत्र राजधानी

कन्नौज, मूल रूप से कन्या कुब्ज, का इतिहास गुप्त काल का है और यह राजा हर्ष की राजधानी थी।

कन्नौज का महत्त्व:

- **ऐतिहासिक महत्त्व:** प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित; त्रिपक्षीय संघर्ष में शामिल।
- **सांस्कृतिक विरासत:** प्राचीन मंदिरों और ऐतिहासिक स्मारकों के लिये जाना जाता है।
- **आर्थिक महत्त्व:** इत्र उद्योग, कृषि और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है।
- **क्या आपको मालूम है?:**
 - कन्नौज का दौरा चीनी यात्री फाह्यान (399-414 ई.) ने किया था।

5. संकिसा - एक बौद्ध तीर्थ स्थल

बसंतपुर गांव (फर्रुखाबाद जिला) के रूप में पहचाना गया, संकिसा वह स्थान है जहां भगवान बुद्ध स्वर्ग में उपदेश देने के बाद अवतरित हुए थे।

संकिसा का महत्व:

- **भौगोलिक महत्व:** उपजाऊ गंगा के मैदानों में स्थित है, जो प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है।
- **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व:** हाथी राजधानी और गुप्त विष्णु मंदिर के साथ अशोक के स्तंभ के लिए प्रसिद्ध।
- **पर्यटन और आध्यात्मिक आदान-प्रदान:** बौद्ध विद्वानों और पर्यटकों को आकर्षित करता है।

6. श्रावस्ती - बुद्ध के चमत्कारों का शहर

बहराइच के पास स्थित, श्रावस्ती प्राचीन कोसल साम्राज्य की राजधानी और एक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल था।

श्रावस्ती का महत्व:

- **भौगोलिक महत्व:** प्राकृतिक सुंदरता के साथ गंगा के मैदानों में स्थित है।
- **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व:** बुद्ध ने यहां 24 मानसून बितायी, और जेतवन मठ बौद्ध शिक्षाओं का केंद्र था।
- **पर्यटन:** विश्व शांति बेल (World Peace Bell), जापान की मदद से स्थापित की गई है।

7. प्रयागराज - त्रिवेणी संगम की भूमि

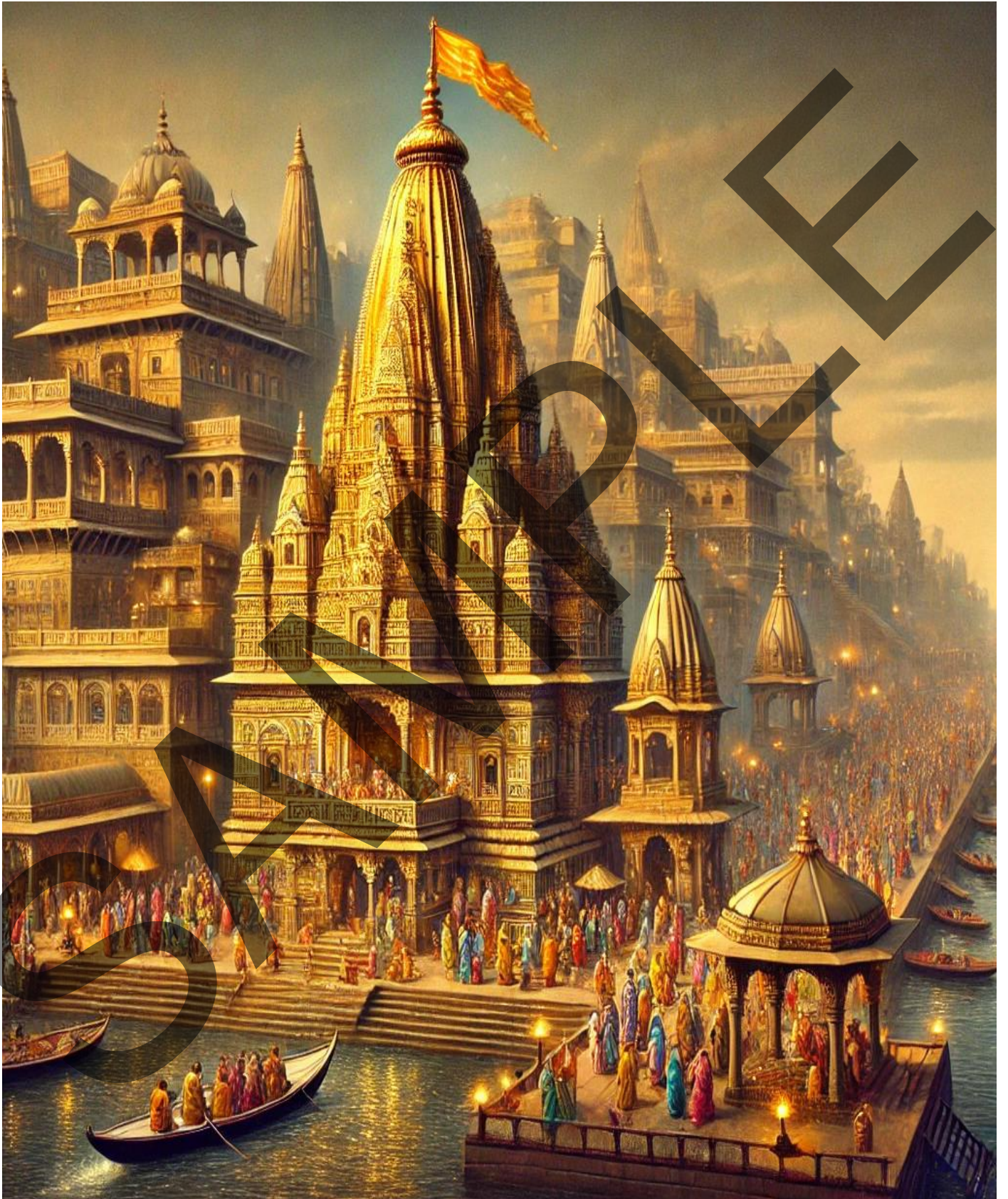
तीन नदियों – गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती के संगम पर स्थित, प्रयागराज एक महत्वपूर्ण तीर्थ और ऐतिहासिक शहर है।

प्रयागराज का महत्व:

- **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व:** रामायण, महाभारत और पुराणों में उल्लेख।
- **पर्यटन:** कुंभ मेले की मेजबानी करता है, जो दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक समागम है।
- **प्रशासनिक और शैक्षिक हब:** इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद उच्च न्यायालय का घर।
- **क्या आपको मालूम है?:**
 - प्रयागराज भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र था।

इसने भारत को सबसे अधिक प्रधानमंत्री दिए हैं, जिनमें नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी शामिल हैं।

2. उत्तर प्रदेश की वास्तुकला, उनका महत्व और अनुरक्षण, संग्रहालय, अभिलेखागार और पुरातत्व



उत्तर प्रदेश की वास्तुकला, उनका महत्व और अनुरक्षण, संग्रहालय, अभिलेखागार और पुरातत्व

उत्तर प्रदेश में वास्तुकला, उनका महत्व

परिचय

उत्तर प्रदेश गंगा-जमुनी तहजीब की विशेषता वाले हिंदू और मुस्लिम परंपराओं के अनूठे संगम को प्रदर्शित करता है। इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बौद्ध स्तूपों, हिंदू मंदिरों, भव्य इंडो-इस्लामिक वास्तुकला और औपनिवेशिक युग की उत्कृष्ट संरचनाओं के माध्यम से देखा जा सकता है।

इस क्षेत्र के वास्तुकला चमत्कार न केवल ऐतिहासिक भव्यता को दर्शाते हैं, बल्कि पर्यटन के जरिए राज्य की सांस्कृतिक और आर्थिक समृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

बौद्ध वास्तुकला

- **मौर्य प्रभाव:** उत्तर प्रदेश प्राचीन बौद्ध स्थापत्य कला का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, विशेष रूप से सम्राट अशोक के शासनकाल से जुड़े अवशेषों के कारण। अशोक के प्रमुख योगदानों में शामिल हैं:

- अशोक स्तंभ, विशेष रूप से सारनाथ, इलाहाबाद (प्रयागराज), मेरठ, कौशाम्बी और संकिसा में, विशिष्ट चुनार बलुआ पत्थर से निर्मित।
- सारनाथ में लायन कैपिटल, भारत का राष्ट्रीय प्रतीक, इतिहासकार विसेंट स्मिथ द्वारा वर्णित बेजोड कलात्मक उत्कृष्टता का प्रतिनिधित्व करता है, जो यथार्थवाद और आदर्शवाद का एक आदर्श मिश्रण है।

- **धामेक स्तूप** (सारनाथ, वाराणसी):

- 500 ईस्वी में गुप्त शासकों ने अशोक की मूल संरचना की जगह पर नए स्थापत्य शैली के साथ इसका पुनर्निर्माण किया।
- मृगवन (डियर पार्क) जहाँ भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम प्रवचन (धर्मचक्र प्रवर्तन) दिया।
- विशेषताएं: व्यास 28 मीटर, ऊंचाई 43.6 मीटर, फूलों की नक्काशी और ब्राह्मी लिपि में शिलालेख।

- **धर्मराजिका स्तूप**, सारनाथ:

- प्रारंभ में मौर्य शासन के तहत निर्मित, पांच निर्माण चरण हुए, मूल रूप से 13.5 मीटर व्यास।
- 18वीं शताब्दी में गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त; गंगा में बहाए गए अवशेषों में से ताबूत, भारतीय संग्रहालय, कोलकाता में संरक्षित पत्थर के बक्से में रखा गया है।

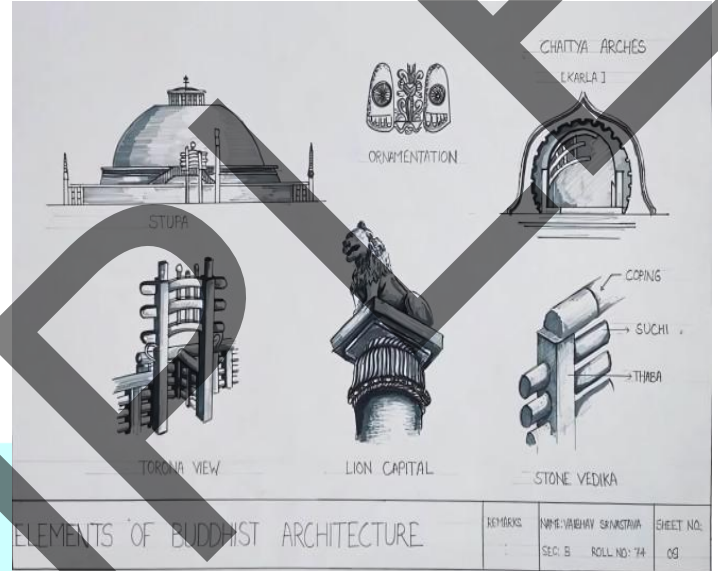
- **चौखंडी स्तूप**, वाराणसी:

- गुप्त काल (चौथी-छठी शताब्दी ई.) के दौरान निर्मित, अपने पहले शिष्यों के साथ बुद्ध की बैठक की साइट को चिह्नित करता है।
- अपने विशाल मिट्टी के टीले के लिए उल्लेखनीय है जो एक अष्टकोणीय ईंट टॉवर द्वारा सबसे ऊपर है।

उत्तर प्रदेश में मंदिर वास्तुकला:

- **दशावतार मंदिर**, देवगढ़:

- लगभग 500 ईस्वी में निर्मित, सबसे शुरुआती गुप्त मंदिरों में से एक, जो भगवान विष्णु को समर्पित है।



- सबसे पहले शिखर वास्तुकला का परिचय देने के लिए, गंगा और यमुना को दर्शाती उत्कृष्ट नक्काशी और वैष्णव पौराणिक कथाओं के दृश्यों से सजी है।
- भीतरगांव मंदिर, कानपुर:
 - विशिष्ट गुप्त कलात्मकता के साथ सबसे पुराना जीवित टेराकोटा हिंदू मंदिर; पिरामिडनुमा शिखर, जलीय राक्षसों, शिव और विष्णु से सुशोभित।
 - टेराकोटा सामग्री के साथ गुप्त वास्तुशिल्प नवाचार का पता चलता है।
- राम जन्मभूमि मंदिर, अयोध्या:
 - प्राचीन धार्मिक महत्व; भगवान राम के जन्मस्थान के रूप में माना जाता है।
 - हिंदू समुदाय की धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे ऐतिहासिक रूप से कोसलदेश कहा जाता है।



उत्तर प्रदेश में इंडो-इस्लामिक आर्किटेक्चर:

- 12 वीं शताब्दी के इस्लामी आक्रमणों के बाद फला-फूला, हिंदू और इस्लामी शैलियों (इंडो-इस्लामिक या मुगल वास्तुकला) के एक वास्तुशिल्प संश्लेषण को प्रदर्शित करता है।
- विशेषताएं: ईंटों, चूने मोर्टार, मेहराब (धनुषाकार शैली), गुंबदों, वाल्टों, ज्यामितीय पैटर्न (अरबी), और व्यापक उद्यानों का उपयोग।
- ताजमहल, आगरा:

- मुमताज महल की स्मृति में शाहजहाँ द्वारा निर्मित इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का स्थापत्य प्रतीक।
- विशेषताएं: सफेद संगमरमर, पित्रा द्वार (पितरा दुर) का व्यापक उपयोग, फारसी सुलेख, और जटिल शिल्प कौशल।



आगरा का किला:

- 1565 ई. में सम्राट अकबर द्वारा निर्मित।
- मोती मस्जिद, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, मुसम्मन बुर्ज, जहाँगीर का महल, खास महल और शीश महल जैसे स्मारक हैं।



फतेहपुर सीकरी:

- सूफी संत सलीम चिश्ती के आभार में अकबर द्वारा निर्मित।
- वास्तुकला पर प्रकाश डाला गया: दीवान-ए-खास, पंच महल, बुलंद दरवाजा, सलीम चिश्ती का मकबरा।

आसफी इमामबाड़ा (बड़ा इमामबाड़ा), लखनऊ:

- 1784 में नवाब आसफ-उद-दौला द्वारा निर्मित, दुनिया के सबसे बड़े गुंबददार हॉल और भूल भुलैया (भूलभुलैया) के लिए प्रसिद्ध है।
- **खुसरू बाग, प्रयागराज:**
 - जहाँगीर के परिवार के मकबरे; ऐतिहासिक रूप से भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े हुए हैं।

उत्तर प्रदेश में मुगल वास्तुकला

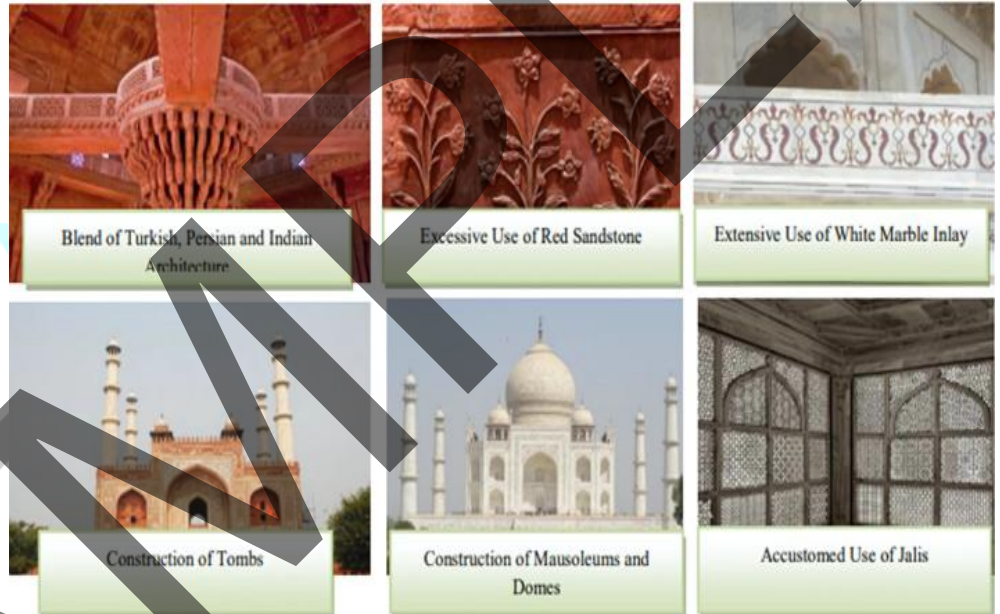
1526 में मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ, इंडो-इस्लामिक वास्तुकला में परिवर्तन हुआ। मुगल स्थापत्य शैली बाबर से शाहजहाँ तक अपने चरम पर पहुंच गई, जिसमें उत्तम शिल्प कौशल और नवीन निर्माण तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

प्रमुख वास्तुशिल्प योगदान:

- **बाबर:** जामा मस्जिद (संभल), आरामबाग (आगरा), और आगरा में मस्जिदें।
- **अकबर:** आगरा का किला, फतेहपुर सीकरी, प्रयागराज किला।
- **जहाँगीर:** अकबर का मकबरा, ऐतमाद-उद-दौला का मकबरा।
- **शाहजहाँ:** ताजमहल, मोती मस्जिद (आगरा)।

उत्तर प्रदेश में मुगल वास्तुकला की विशेषताएं:

- इंडो-इस्लामिक स्थापत्य तत्वों का संगम।
- पितरा दुर (संगमरमर जड़ना) तकनीक का उपयोग, विशेष रूप से ताजमहल और ऐतमाद-उद-दौला के मकबरे में।
- बड़े गुंबद, लंबी मीनारें और जटिल मेहराब।
- अकबर के युग में लाल बलुआ पत्थर का व्यापक उपयोग।
- दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, पंच महल और जोधा बाई के महल जैसी संरचनाओं में कलात्मक उत्कृष्टता।



निष्कर्ष:

उत्तर प्रदेश में मुगल वास्तुकला अपनी **भव्यता और कलात्मक उत्कृष्टता** के लिए प्रसिद्ध है। इतिहासकारों ने इन **अद्वितीय संरचनाओं** की सराहना की है, जिनमें **ताजमहल** को **लालित्य का प्रतीक** माना जाता है, जबकि **फतेहपुर सीकरी** अपनी **अद्वितीय वास्तुशिल्प शैली** के लिए प्रसिद्ध है।

उत्तर प्रदेश में अवध वास्तुकला

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद, अवध के नवाबों ने आधुनिक तत्वों के साथ मुगल परंपराओं को मिश्रित करते हुए एक अनूठी स्थापत्य शैली विकसित की।

प्रमुख वास्तुशिल्प योगदान:

- **सआदत अली खान:** तरुणवेल्ली कोठी में वेधशाला का निर्माण किया।
- **आसफ-उद-दौला:** बारा इमामबारा, रूमी दरवाजा।
- **वाजिद अली शाह:** केसर बाग पैलेस, बादशाह महल।
- **मुहम्मद अली शाह:** मोती महल, छोटा इमामबाड़ा।

- **अन्य संरचनाएं:** आलम बाग, बिबियापुर कोठी, शुजा-उद-दौला का मकबरा।

अवध वास्तुकला की विशेषताएं:

- मुगल और ब्रिटिश स्थापत्य शैली का एकीकरण।
- बीम के बिना बड़ी छतों के निर्माण के लिए ईट बंधन तकनीकों का उपयोग (जैसे, बारा इमामबाड़ा)।
- वास्तु विकास के केंद्र के रूप में लखनऊ।
- लाल बलुआ पत्थर का उपयोग और हरे-भरे बगीचों का समावेश।
- नवाबों, विशेष रूप से वाजिद अली शाह ने अपने डिजाइनों में हिंदू और बौद्ध तत्वों को शामिल किया।
- निर्माण परियोजनाओं (जैसे, रूमी दरवाजा) के माध्यम से रोजगार का सृजन।

औपनिवेशिक वास्तुकला:

- ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने यूरोपीय (नव-शास्त्रीय और गोथिक) शैलियों को स्वदेशी (इंडो-इस्लामिक) वास्तुकला के साथ एकीकृत किया, जिससे **इंडो-सारासेनिक** शैली का निर्माण हुआ।
- महत्वपूर्ण इमारतें:
 - **प्रयागराज में मेयो मेमोरियल हॉल (1879)**, जिसमें गोथिक तत्वों के साथ नव-शास्त्रीय शैली है।
 - **ऑल सेंट्स कैथेड्रल**, सर विलियम एमर्सन द्वारा **19 वीं शताब्दी की गोथिक कृति**।
 - **संस्कृत कॉलेज, वाराणसी** गोथिक स्थापत्य शैली में बनाया गया है।
 - **राज भवन, लखनऊ (पूर्व में कोठी हयात बख्श)**, मेजर जनरल क्लाउड मार्टिन द्वारा डिजाइन किया गया।
 - **विधान भवन (लखनऊ)** और **लखनऊ जीपीओ** इंडो-सरेसेनिक फ्यूजन को दर्शाते हैं।

वर्तमान संदर्भ में वास्तुकला का महत्त्व:

- **हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक:**
 - ताजमहल और आगरा किला सांप्रदायिक तनाव के वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों के बीच वास्तुकला में सांप्रदायिक सद्भाव का उदाहरण देते हैं।
- **सांस्कृतिक संवर्धन:**
 - बौद्ध स्तूप (धामेक, धर्मराजिका, चौखंडी) और हिंदू मंदिर (दशावतार) सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक इतिहास के प्रतीक हैं।
- **औपनिवेशिक प्रभाव और ऐतिहासिक मानसिकता:**
 - राजभवन, विधान भवन और बेगम समरू चर्च (सरधना, मेरठ) **जैसी संरचनाएं** औपनिवेशिक मानसिकता का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो पश्चिमी प्रभाव (इंडो-सरसेनिक शैली) के साथ पूर्वी परंपरा का सम्मिश्रण करती हैं।
- **आर्थिक और पर्यटन संवर्धन:**
 - स्मारकीय वास्तुकला पर्यटन को काफी बढ़ावा देती है, विशेष रूप से आगरा (ताजमहल) जो **भारत का सबसे अधिक दौरा किया जाने वाला स्थल** है और **स्थानीय व राज्य अर्थव्यवस्था** पर सीधा प्रभाव डालता है।
- **पर्यावरण जागरूकता:**
 - नदी देवी नक्काशी (गंगा-यमुना) के साथ दशावतार मंदिर **पर्यावरण संरक्षण के लिए प्राचीन सम्मान पर प्रकाश डालता है**।
- **देशभक्ति और ऐतिहासिक स्मरण:**
 - झांसी किला और खुसरू बाग **जैसे स्मारक** ऐतिहासिक देशभक्ति और स्वतंत्रता संग्राम की यादों को गूंजते हैं।

उत्तर प्रदेश में वास्तुकला की रखरखाव के लिए सरकार की पहल
संवैधानिक प्रावधान

- **अनुच्छेद 49** कलात्मक या ऐतिहासिक रुचि के प्रत्येक स्मारक, स्थान या वस्तु की रक्षा करने के लिए राज्य पर एक दायित्व डालता है। यह प्रावधान सरकार को ऐसे स्मारकों को लूट, विरूपण, विनाश, हटाने, निपटान या निर्यात से बचाने के लिए प्रतिबद्ध करता है।
- अनुच्छेद 51 ए (एफ) के तहत, प्रत्येक भारतीय नागरिक भारत की समृद्ध समग्र सांस्कृतिक विरासत को महत्व देने और संरक्षित करने के लिए कर्तव्यबद्ध है।

कानूनी ढाँचा: AMASR अधिनियम, 1958

- **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (AMASR) अधिनियम, 1958** राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों को संरक्षित विरासत स्थल घोषित करके और उनके आस-पास के क्षेत्रों में अनधिकृत गतिविधियों को निषिद्ध करके कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है।

संस्थागत पहल

- **भारतीय विरासत संस्थान, नोएडा** की स्थापना सरकार द्वारा भारत की मूर्त विरासत के अनुसंधान, प्रलेखन और संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए की गई है।

अडॉप्ट ए हेरिटेज योजना: अपनी धरोहर, अपनी पहचान

- विरासत संरक्षण में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी को शामिल करने के लिए सितंबर 2017 में लॉन्च किया गया।
- स्थलों को अपनाने वाली संस्थाओं को स्मारक मित्र कहा जाता है।
- इस योजना के तहत उत्तर प्रदेश में अपनाए गए स्थलों में शामिल हैं:
 - महावन (मथुरा), कुसुमावन सरोवर (गोवर्धन, मथुरा) और कर्दमेश्वर महादेव मंदिर (वाराणसी) में समाधि।
- हाल ही में, यूपी राज्य पुरातत्व निदेशालय (DUPSA) ने चुनार किला, चुनार में कोठी गुलिस्तान-ए-अराम, दर्शन विलास कोठी, छतर मंजिल (लखनऊ), और बरुआ सागर किला (झांसी) जैसे विरासत स्थलों को पर्यटन विभाग द्वारा प्रबंधित हेरिटेज होटलों में बदलने का निर्णय लिया।

संरक्षित स्मारक अधिसूचना, 2023

- 23 मार्च, 2023 को यूपी सरकार ने आधिकारिक तौर पर 18 प्राचीन और ऐतिहासिक स्थलों को संरक्षित घोषित किया। इसमें शामिल है:
 - झांसी में शिवालय, कोल्हू कुश मडिया, चंपतराय का महल, बंजारो का किला, मंदिर बेर, पिसनारी दयी मड, दिगारा गढ़ी और विभिन्न राम जानकी मंदिर।
 - शिव मंदिर (फरुखाबाद और इटावा), इश्टिका द्वारा प्राचीन विष्णु मंदिर, गंगोला शिवला, शिव तांडव (महोबा), और खंकरा मठ जैसे प्राचीन मंदिरों को संरक्षित घोषित किया गया है।

ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन (TTZ)

- सुप्रीम कोर्ट ने ताजमहल के आसपास के 10,400 वर्ग किमी क्षेत्र को ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन के रूप में सीमांकित किया।
- उद्देश्य: ताजमहल को पर्यावरण प्रदूषण से बचाना।
- इसमें 40 से अधिक संरक्षित स्मारक शामिल हैं, जिनमें तीन यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल शामिल हैं:
 - ताजमहल, आगरा किला और फतेहपुर सीकरी।
- आगरा विकास प्राधिकरण को सुप्रीम कोर्ट के निर्देश से ताजमहल के 500 मीटर के दायरे में व्यावसायिक गतिविधियां सख्ती से प्रतिबंधित हैं।

काशी विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर

- एक महत्वाकांक्षी सरकारी परियोजना, जिसका उद्देश्य मंदिरों के शहर वाराणसी में तीर्थयात्रा के अनुभवों को बढ़ाना है।
- ऐतिहासिक काशी विश्वनाथ मंदिर को वाराणसी के प्रसिद्ध घाटों से सीधे जोड़ता है, जिससे एकीकृत आध्यात्मिक गलियारा बनता है।
- भीड़भाड़ और संकरी गलियों के मुद्दों को संबोधित करते हुए, गलियारा विरासत पर्यटन, स्वच्छता को बढ़ावा देता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ

- यूपी की वास्तुकला एक विविध सांस्कृतिक समामेलन को दर्शाती है। **बौद्ध स्तूपों और मंदिरों से लेकर** आश्चर्यजनक **इंडो-इस्लामिक संरचनाओं** और प्रभावशाली **औपनिवेशिक युग की वास्तुकला** तक, प्रत्येक संरचना ऐतिहासिक बदलाव और सांस्कृतिक संश्लेषण की कहानियों को बताती है।
- **उत्तर प्रदेश में बौद्ध वास्तुकला बुद्ध के पहले उपदेश (धर्मचक्रप्रवर्तन) से जुड़े** सारनाथ (धमेक स्तूप) **जैसे स्थलों में प्रमुखता से दिखाई देती है।**
- **मंदिर वास्तुकला** दशावतार मंदिर (देवगढ़, ललितपुर) **जैसी उत्कृष्ट कृतियों के साथ फली-फूली**, जो गुप्त स्थापत्य लालित्य और धार्मिक महत्व का उदाहरण है।
- **मुगल संरक्षण के तहत इंडो-इस्लामिक वास्तुकला**, विशेष रूप से सम्राट **अकबर के शासनकाल के दौरान**, उत्तर प्रदेश को विश्व स्तर पर प्रशंसित यूनेस्को विरासत स्थलों - **ताजमहल, फतेहपुर सीकरी, आगरा किले से समृद्ध किया।**

उत्तर प्रदेश के संग्रहालय और अभिलेखागार:

परिचय

संग्रहालय और अभिलेखागार **इतिहास, संस्कृति और विरासत के संरक्षक के रूप में काम करते हैं।** वे **कलात्मक, सांस्कृतिक या वैज्ञानिक महत्व की वस्तुओं को** संरक्षित करने, एकत्र करने, व्याख्या करने और प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। **उत्तर प्रदेश का एक समृद्ध इतिहास और संग्रहालयों का एक विशाल संग्रह है जो इसके पुरातात्विक प्रदर्शन करता है,**

संग्रहालयों और अभिलेखागार का महत्व

- **विरासत का संरक्षण:** अमूल्य ऐतिहासिक कलाकृतियों, पांडुलिपियों और सांस्कृतिक प्रतीकों की सुरक्षा करता है।
- **शैक्षिक महत्व:** कला, इतिहास और संस्कृति से संबंधित **अनुसंधान और अकादमिक अध्ययन में भूमिका।**
- **पर्यटन और अर्थव्यवस्था:** सांस्कृतिक पर्यटन को **बढ़ावा देता है**, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।
- **वैज्ञानिक और कलात्मक मूल्य:** प्राचीन काल से **कलात्मक उपलब्धियों और वैज्ञानिक प्रगति को** प्रदर्शित करता है।
- **सामाजिक विकास का दस्तावेजीकरण:** संग्रहालय समय के साथ सामाजिक परिवर्तनों का पता लगाने में मदद करते हैं।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख संग्रहालय

यूपी कई राज्य-संचालित और निजी संग्रहालयों का घर है, जिनमें से प्रत्येक इतिहास, संस्कृति और समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है।

1. राज्य संग्रहालय, लखनऊ

- **1863 में स्थापित**, यह यूपी का सबसे पुराना और सबसे बड़ा बहुउद्देशीय संग्रहालय है।
- संग्रह में **कला, पुरातत्व, पेंटिंग, पांडुलिपियां, न्यूमिज़माटिक्स और नृविज्ञान शामिल हैं।**
- **दुर्लभ बौद्ध और जैन मूर्तियां, मध्ययुगीन हथियार, टेराकोटा की मूर्तियाँ और विभिन्न राजवंशों के सिक्के हैं।**

2. इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज

- उत्तर भारत के सबसे बड़े संग्रहालयों में से **एक**, जिसकी स्थापना **1931 में हुई थी।**
- अपने समृद्ध संग्रह के कारण **केंद्र सरकार का संग्रहालय बन गया।**
- परेड:
 - **पत्थर, कांस्य, लकड़ी और धातु की मूर्तियों सहित पुरातात्विक कलाकृतियाँ।**
 - **महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेताओं की पुरातात्विक कलाकृतियाँ का संग्रह।**



- दुर्लभ पांडुलिपियां और ऐतिहासिक सिक्के।
- 3. **भारत कला भवन, वाराणसी**
 - बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में स्थित है।
 - सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक भारत तक की कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है।
 - विशेष प्रदर्शन:
 - मौर्य, शुंग और गुप्त काल की मूर्तियां।
 - दुर्लभ ताड़-पत्ती पांडुलिपियां और प्राचीन कपड़ा संग्रह।
- 4. **झांसी संग्रहालय**
 - रानी लक्ष्मीबाई के इतिहास और वीरता और 1857 के विद्रोह पर प्रकाश डाला गया।
 - संग्रह में शामिल हैं:
 - चंदेल वंश के हथियार, मूर्तियां, वेशभूषा और तस्वीरें।
 - टेराकोटा कलाकृतियां, कांस्य, पांडुलिपियां, पेंटिंग और सिक्के।
- 5. **1857 स्मारक संग्रहालय, लखनऊ**
 - ब्रिटिश रेजीडेंसी में स्थित है, जहां 1857 का विद्रोह हुआ था।
 - प्रदर्शनों में शामिल हैं:
 - विद्रोह से बंदूकें, तलवारें, ढाल, तोपें, रैंक बैज और पदक।
 - घटना का दस्तावेजीकरण करने वाली पुरानी तस्वीरें, लिथोग्राफ और पेंटिंग।
- 6. **राष्ट्रीय दलित स्मारक, नोएडा**
 - एक राष्ट्रीय दलित स्मारक, सामाजिक न्याय में योगदान देने वाले नेताओं को समर्पित है।
 - इसमें गौतम बुद्ध, कबीर, बिरसा मुंडा, अंबेडकर और कांशीराम की मूर्तियां शामिल हैं।
- 7. **राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर**
 - 1987 में स्थापित, यूपी में बौद्ध विरासत पर ध्यान केंद्रित करना।
 - तीर्थंकर महावीर, भगवान बुद्ध, गुरु गोरखनाथ और कबीर से संबंधित कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है।
- 8. **थारू जनजाति संग्रहालय, बलरामपुर**
 - यूपी का पहला आदिवासी संग्रहालय, थारू जनजाति को समर्पित है।
 - प्रदर्शनी में थारू समुदाय की परंपराओं, जीवन शैली, धर्म और रीति-रिवाजों को शामिल किया गया है।
 - अनूठी विशेषता : थारू लोग दिवाली को शोक पर्व के रूप में मनाते हैं।



उत्तर प्रदेश में अभिलेखागार

अभिलेखागार ऐतिहासिक दस्तावेजों के भंडार के रूप में काम करते हैं, जिनमें कानूनी रिकॉर्ड, पांडुलिपियां, आधिकारिक पत्राचार और प्राचीन ग्रंथ शामिल हैं।

1. विधि संग्रहालय और अभिलेखागार, इलाहाबाद

- इलाहाबाद उच्च न्यायालय का हिस्सा है।
- 1966 में स्थापित, ऐतिहासिक कानूनी रिकॉर्ड और ऐतिहासिक निर्णयों को प्रदर्शित करता है।
- प्रदर्शनों में शामिल हैं:
 - गोरखपुर के चोरी-चौरा केस के दस्तावेज।
 - इंदिरा गांधी का चुनाव मामला दायर
 - मिथिला राजवंश की दुर्लभ पांडुलिपियां।

2. उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, लखनऊ

- ब्रिटिश और स्वतंत्रता के बाद के सरकारी रिकॉर्ड रखता है।

- **डिजिटलीकरण की पहल** ऐतिहासिक दस्तावेजों को अधिक सुलभ बना रही है।

करेंट अफेयर्स & सरकारी पहल

1. डिजिटल संग्रहालय पहल

- कई यूपी संग्रहालयों को डिजिटल किया जा रहा है, जिससे **वर्चुअल टूर** और संग्रह तक **ऑनलाइन पहुंच** मरी वृद्धि हो रही है।
- उदाहरण: **इलाहाबाद संग्रहालय की ऑनलाइन संग्रह परियोजना।**

2. विरासत संरक्षण के लिए सरकारी योजनाएं

- **HRIDAY योजना (हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एंड ऑगमेंटेशन योजना):**
 - वाराणसी और मथुरा जैसे विरासत शहरों के संरक्षण पर ध्यान केंद्रित।
 - विरासत भवनों के जीर्णोद्धार के लिए बजट आवंटन।
- **स्वदेश दर्शन योजना:**
 - थीम-आधारित पर्यटन सर्किट को बढ़ावा देता है।
 - सारनाथ, कुशीनगर और श्रावस्ती को कवर करने वाला बौद्ध सर्किट शामिल है।
- **विरासत योजना अपनाना:**
 - संग्रहालय संरक्षण में **कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी** को प्रोत्साहित करता है।
 - उदाहरण: **टाटा समूह की विरासत गोद लेने की पहल के तहत ताजमहल।**

तालिका: प्रमुख संग्रहालय और उनकी हाइलाइट्स

संग्रहालय का नाम	स्थान	प्रमुख प्रदर्श
राज्य संग्रहालय	लखनऊ	पुरातत्व, पेंटिंग्स, न्यूमिज़माटिक्स
इलाहाबाद संग्रहालय	प्रयागराज	गांधीवादी कलाकृतियाँ, दुर्लभ सिक्के, पांडुलिपियाँ
भारत कला भवन	वाराणसी	सिंधु घाटी कलाकृतियाँ, ताड़-पत्र पांडुलिपियाँ
झांसी संग्रहालय	झांसी	रानी लक्ष्मीबाई के हथियार, गुप्त मूर्तियाँ
1857 स्मारक संग्रहालय	लखनऊ	बंदूकें, तलवारें, विद्रोह दस्तावेज
राष्ट्रीय दलित स्मारक	नोएडा	दलित नेताओं की मूर्तियाँ
बौद्ध संग्रहालय	गोरखपुर	बौद्ध अवशेष, कुशीनगर कलाकृतियाँ
थारू जनजाति संग्रहालय	बलरामपुर	आदिवासी परंपराएं, सांस्कृतिक प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश की हिंदी, संस्कृत, उर्दू और फारसी पांडुलिपियाँ -

उत्तर प्रदेश भारत का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा है, जो संस्कृत, हिंदी, उर्दू और फारसी में पांडुलिपियों के विशाल संग्रह को संरक्षित करता है। इन पांडुलिपियों में साहित्य, दर्शन, धर्म, इतिहास और विज्ञान शामिल हैं, जो क्षेत्र की समृद्ध बौद्धिक परंपरा को दर्शाते हैं।

1. संस्कृत पांडुलिपियाँ

संस्कृत, जिसे भारत की शास्त्रीय भाषा माना जाता है, वेदों, उपनिषदों, पुराणों और दार्शनिक ग्रंथों का माध्यम रही है। उत्तर प्रदेश के राज्य अभिलेखागार में संस्कृत पांडुलिपियों का एक विशाल संग्रह है, जो विभिन्न विषयों की विस्तृत श्रृंखला को समेटे हुए है

A. सांस्कृतिक ग्रंथ

1. **स्तोत्र (भजन)** – देवी-देवताओं को समर्पित भक्ति रचनाएँ।
2. **कामसूत्र** – रिश्तों और मानव इच्छाओं पर प्राचीन भारतीय ग्रंथ।
3. **पुराण** – देवताओं, राजाओं और ऋषियों की वंशावली का वर्णन करने वाले पौराणिक और ऐतिहासिक ग्रंथ।
4. **धर्मशास्त्र** - कानून, नैतिकता और सामाजिक व्यवस्था पर ग्रंथ।
5. **मंत्र और तंत्र** - कर्मकांड प्रथाओं, ध्यान और रहस्यमय ऊर्जाओं पर लेखन।
6. **वेद** – हिंदू दर्शन और धार्मिक मान्यताओं के चार मूलभूत ग्रंथ।
7. **वेदांत और उपनिषद्** - वास्तविकता और चेतना की प्रकृति की खोज करने वाले दार्शनिक ग्रंथ।
8. **व्याकरण (व्याकरण)** - पाणिनी की अष्टाध्यायी सहित संस्कृत भाषाई अध्ययन।
9. **न्याय (तर्क)** - तार्किक तर्क और ज्ञानमीमांसा से संबंधित ग्रंथ।
10. **नितिशास्त्र** - चाणक्य के अर्थशास्त्र की तरह राजनीतिक नैतिकता और शासन पर काम करता है।
11. **योग** – ध्यान, आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य पर प्राचीन ग्रंथ, जैसे पतंजलि के योग सूत्र।
12. **मीमांसा** - वेदों के कर्मकांड और धार्मिक पहलुओं का विश्लेषण।

B. वैज्ञानिक ग्रंथ

1. **ज्योतिष**– आकाशीय अध्ययन और होरोस्कोपिक भविष्यवाणियां।
2. **वैद्यक (चिकित्सा)** – आयुर्वेदिक ग्रंथ, जिसमें चरक संहिता और सुश्रुत संहिता शामिल हैं।
3. **धनुर्विद्या (युद्ध विज्ञान)** - तीरंदाजी और सैन्य रणनीति पर मैनुअल।
4. **गणित** - बीजगणित और खगोल विज्ञान पर आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त के कार्य।
5. **शिल्पशास्त्र (वास्तुकला और मूर्तिकला)** - मंदिर और आइकनोग्राफी डिजाइन पर ग्रंथ।
6. **पशु चिकित्सा विज्ञान** - पशु देखभाल और चिकित्सा पर लेखन।

यूपी में प्रमुख संस्कृत पांडुलिपियां

दंड देना	पाठ का नाम	रचयिता
जीवन-दर्शन	उपनिषद्	विभिन्न ऋषि
नीति	अर्थशास्त्र	कौटिल्य
गणित ज्योतिष	सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट
आयुर्वेद	चरक संहिता	चरक
व्याकरण	अष्टाध्यायी	पाणिनी
धर्म	भगवद गीता	वेदव्यास

करेंट अफेयर्स लिंक

- **संस्कृत पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण:** राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (NMM) प्राचीन ग्रंथों के डिजिटलीकरण के लिए उत्तर प्रदेश अभिलेखागार के साथ काम कर रहा है।
- **एन.ई.पी. 2020 और संस्कृत:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 स्कूलों में संस्कृत को एक वैकल्पिक विषय के रूप में बढ़ावा देती है।

2. हिंदी पांडुलिपियां

- **देवनागरी लिपि में हिंदी पांडुलिपियां** भक्ति कविता, नैतिक कथाओं और ऐतिहासिक पत्रों पर केंद्रित हैं।
- **तुलसीदास के रामचरितमानस, कबीर के दोहे और सूरदास के सूरसागर** अभिलेखागार में अच्छी तरह से संरक्षित हैं।
- इन कार्यों ने पूरे भारत में धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराओं को प्रभावित किया।

प्रमुख पांडुलिपियां

1. रामचरितमानस (तुलसीदास) - रामायण का एक हिंदी पुनर्वाचन।
2. विनय पत्रिका (तुलसीदास) - भक्ति भजनों का संग्रह।
3. सूर सागर (सूरदास) - कृष्ण भक्ति काव्य।
4. दोहावली (कबीर) - आध्यात्मिकता पर रहस्यमय दोहे।

3. उर्दू पांडुलिपियां

उर्दू पांडुलिपियां, विशेष रूप से प्रयागराज की पांडुलिपि पुस्तकालय में संरक्षित, मध्यकालीन और आधुनिक भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहलुओं का दस्तावेजीकरण करती हैं।

A. साहित्यिक रचनाएँ

1. कविता और गज़ल - मीर, ग़ालिब और इक़बाल की रचनाएँ।
2. दंतकथाएं और कहानियां - फारसी और अरबी से प्रेरित दास्तान साहित्य।
3. तवारीख-ए-बुलंद शाह - उर्दू की पहली ऐतिहासिक पुस्तक।

B. सामाजिक और कानूनी ग्रंथ

1. रिसाला-ए-निकाह - मुस्लिम विवाह कानून।
2. रिसाला-ए-बाजी - मोरनी की लड़ाई पर केंद्रित सैन्य इतिहास।
3. हिजरुल मुस्लिमिन - भारत में कुश्ती परंपराओं पर पांडुलिपि।
4. जफर नमः (गुलाम हैदर सगीर) - अवध के नवाब वाजिद अली शाह का एक ऐतिहासिक विवरण।

करेंट अफेयर्स लिंक

- उर्दू अभिलेखागार संरक्षण: उत्तर प्रदेश सरकार ने उर्दू ग्रंथों के डिजिटल संरक्षण की शुरुआत की है।
- शिक्षा में उर्दू: राष्ट्रीय उर्दू भाषा संवर्धन परिषद (एनसीपीयूएल) प्राचीन उर्दू साहित्यिक कृतियों के संरक्षण पर काम कर रही है।

4. फारसी पांडुलिपियां

फारसी मध्यकालीन भारत की प्रशासनिक और साहित्यिक भाषा थी, खासकर मुगल काल के दौरान। फारसी में कई ऐतिहासिक, धार्मिक और साहित्यिक रचनाओं की रचना की गई थी।

A. धर्मशास्त्रीय कार्य

1. कुरान पांडुलिपियां - पवित्र कुरान की प्रतियां।
2. सर-ए-अकबर (दारा शिकोह) - उपनिषदों का एक फारसी अनुवाद।

B. ऐतिहासिक और राजनीतिक ग्रंथ

1. नसब नमः - मुगल सम्राटों के वंशावली रिकॉर्ड।
2. जफर नमः - मुगल और नवाबी शासन के ऐतिहासिक विवरण।

C. साहित्य और कथा साहित्य

1. मसनवीस मजमुआ-ए-मा'नवियत- 124 फारसी दंतकथाओं का संग्रह।
2. भारतीय महाकाव्यों के फारसी अनुवाद:
 - रामायण
 - महाभारत
 - पुराण
 - दशावतार और कथाग्याणामाला

सामयिक विषय

- फारसी ग्रंथों का अनुवाद और डिजिटलीकरण: संस्कृति मंत्रालय फारसी पांडुलिपियों को हिंदी और अंग्रेजी में अनुवाद करने पर काम कर रहा है।
- गंगा-जमुनी तहज़ीब पहल: यूपी सरकार ने हिंदी, उर्दू और फारसी पांडुलिपियों की साझा विरासत को संरक्षित करने के लिए कार्यक्रम शुरू किए हैं।

उत्तर प्रदेश का पुरातत्व -

परिचय

उत्तर प्रदेश का पुरातत्व समृद्ध, विविध और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, जो पुरापाषाण युग से लेकर मध्ययुगीन काल तक फैला हुआ है। पुरातत्वीय विरासत के संरक्षण और परिरक्षण की जिम्मेदारी मुख्यतः भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.) और राज्य पुरातत्व निदेशालय की है। प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, और यूपी प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारक और पुरातात्विक स्थल और अवशेष संरक्षण अधिनियम, 1956, प्राचीन स्थलों की सुरक्षा के लिए कानूनी ढांचा प्रदान करते हैं।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

1. अहिच्छत्र, बरेली

- महाभारत में वर्णित उत्तर पांचाल की प्राचीन राजधानी।
- खुदाई से 600 ईसा पूर्व से 1100 ई. तक।
- अलेक्जेंडर कनिंघम ने सबसे पहले इसकी खुदाई की, उसके बाद के.एन. दीक्षित (1940-44) और एन.आर. बनर्जी (1963-65) ने।
- मुख्य खोज:
 - गेरू रंगीन बर्तन (OCP)
 - पेटेड ग्रे वेयर (PGW)
 - उत्तरी काले पॉलिश वेयर (NBPW)
 - सबसे पुराने कास्ट सिक्के और पांचाल सिक्के (पहली शताब्दी ईसा पूर्व)।



2. हस्तिनापुर, मेरठ

- महाभारत से कौरवों की राजधानी के रूप में पहचाना गया।
- बी.बी. लाल द्वारा खुदाई (1950-52)।
- ढूँढता है शामिल हैं:
 - चावल जैसी फसलों के साथ कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था।
 - पालतू जानवर: मवेशी, भेड़, भैंस, सुअर और घोड़ा।
 - मिट्टी और मिट्टी-ईट की दीवारें।
 - टेराकोटा की मूर्तियाँ, कांच की चूड़ियाँ, मोती और धातु की वस्तुएँ।
 - पंच-चिह्नित और तांबे के सिक्के एक उन्नत अर्थव्यवस्था और व्यापार का संकेत देते हैं।
 - बस्ती को नष्ट करने वाली भारी बाढ़ के साक्ष्य।



3. कन्नौज, फर्रुखाबाद

- ऐतिहासिक रूप से कन्याकुब्ज, महोदय और कुसुमपुरा के रूप में जाना जाता है।
- 1955 में एएसआई द्वारा किला टीले पर खुदाई की गई।
- प्रमुख खोज:
 - 7वीं-8वीं शताब्दी ईस्वी की पत्थर की मूर्तियाँ (चतुर्मुख लिंग, वराह, सूर्य, गणेश)।
 - तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 12 वीं शताब्दी ईस्वी तक टेराकोटा की मूर्तियाँ।
 - कलाकृतियों में गज-लक्ष्मी पट्टिकाएं, मिथुन नैगमेश की आकृतियाँ, माँ और बच्चे की मूर्तियाँ शामिल हैं।

4. मथुरा

- प्राचीन भारत में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र।
- कनिंघम, वोगेल, फ्यूहरर, राधा कृष्ण और एम.सी.जोशी द्वारा खुदाई (1973-77)।
- कुषाण-युग की मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध।
- खोजी गई कलाकृतियाँ:
 - बौद्ध स्तूप और विहार।

- यक्ष और यक्षिणी मूर्तियाँ।
- गांधार और मथुरा कला शैलियाँ।

5. सारनाथ, वाराणसी

- बुद्ध ने अपना पहला उपदेश यहीं दिया था।
- अशोक के शासनकाल (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) से 12 वीं शताब्दी ईस्वी तक **बौद्ध पुरावशेषों** में समृद्ध।
- **जॉन मार्शल (1907) और एसआई द्वारा खुदाई से** पता चला:
 - **धर्मराजिका स्तूप**: अशोक द्वारा निर्मित।
 - **अशोक स्तंभ** (अब भारत का राष्ट्रीय प्रतीक)।
 - **धमेख स्तूप** (गुप्त काल)।
 - **मूलगंधा कुटी मंदिर खंडहर**।

6. श्रावस्ती, गोंडा-बहराइच

- प्राचीन कोसल की राजधानी और बुद्ध और महावीर से जुड़ा हुआ है।
- **वोगेल, जॉन मार्शल और दया राम साहनी (1907-1911) द्वारा खुदाई से** पता चला:
 - **जेतवन विहार** (बुद्ध का मठवासी निवास)।
 - **विहार द्वार के पास अशोक के स्तंभ**।
 - **कई स्तूप, मठ और मंदिर**।
 - **शहर बुद्ध के समय से बना हुआ है**।
 - **महेथ खुदाई (1959) ने शहर की किलेबंदी दिखाई**।

2. उत्तर प्रदेश में हड़प्पा का प्रभाव

- **आलमगीरपुर (मेरठ)** – सबसे पूर्वी **हड़प्पा स्थल**, मोती, मिट्टी के बर्तन, लिपि साक्ष्य।
- **हुलास (सहारनपुर)** - **ठोस ईंट के घर** और मिट्टी के बर्तन।
- **सनौली (बागपत)** – **रथ को हथियारों से दफनाया जाता है**, जो युद्ध संस्कृति का संकेत देता है।

3. मौर्य काल

- **अशोक के स्तंभ और शिलालेख** :
 - **सारनाथ** - लायन कैपिटल।
 - **कौशाम्बी** - रानी करुवाकी के दान का उल्लेख।
 - **सोहगौरा (गोरखपुर)** - सबसे पुराने ब्राह्मी शिलालेखों में से एक।

4. गुप्त काल – कला का स्वर्ण युग

- **मथुरा और सारनाथ कला शैलियों का विकास**।
- **भीतरगाँव मंदिर (कानपुर)** - भारत का सबसे पुराना ईंट मंदिर।
- **दशावतार मंदिर (देवगढ़, ललितपुर)** - प्रतिष्ठित गुप्त-काल मंदिर।

सामयिक विषय

1. संरक्षण पहल

- **ए.एस.आई. द्वारा स्मारकों और पुरावशेषों पर राष्ट्रीय मिशन**।
- **एडॉप्ट ए हेरिटेज स्कीम** (सारनाथ और मथुरा जैसे यूपी स्थल शामिल हैं)।
- **सनौली में रथों की हालिया खोज (2020) यूपी की प्राचीन योद्धा संस्कृति को जोड़ती है**।

2. भारतीय सांस्कृतिक कूटनीति में भूमिका

- **मथुरा और सारनाथ की मूर्तियाँ जी-20 शिखर सम्मेलनों और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रदर्शित की गईं**।
- **सारनाथ, श्रावस्ती और कुशीनगर में बौद्ध पर्यटन सर्किट विकास**।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश पुरातात्विक विरासत के खजाने के रूप में खड़ा है, जो प्रागैतिहासिक मानव बस्तियों, महाजनपदों, मौर्य और गुप्त काल की प्रगति के प्रमाण प्रदर्शित करता है। निरंतर खुदाई और **आधुनिक संरक्षण पहल** यह सुनिश्चित करती है कि उत्तर प्रदेश की पुरातत्व की समृद्ध विरासत भविष्य की पीढ़ियों के लिए अच्छी तरह से संरक्षित रहे।



विषय-3 उत्तर प्रदेश का 1857 से पहले और बाद के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान



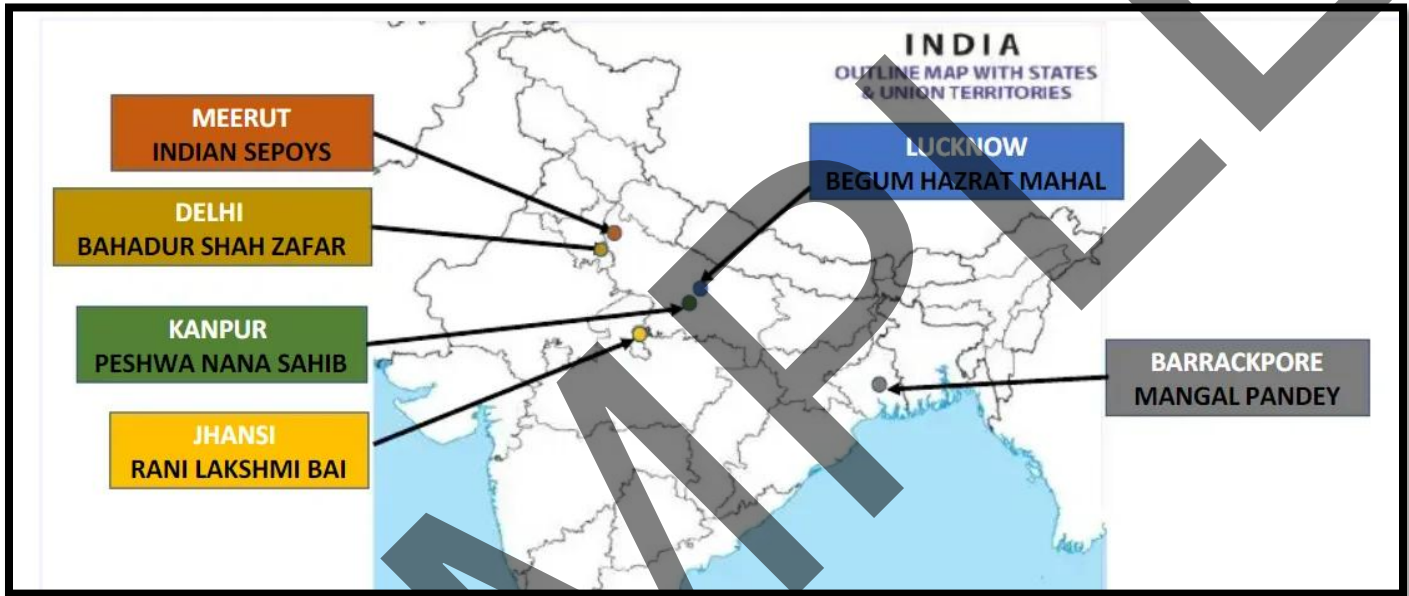
उत्तर प्रदेश का 1857 से पहले और बाद के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

1857 का विद्रोह और उत्तर प्रदेश की भूमिका:

परिचय

1857 का विद्रोह, जिसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है, ब्रिटिश शासन के खिलाफ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सैन्य शोषण के कारण हुआ था। उत्तर प्रदेश (तब संयुक्त प्रांत) ने मेरठ, कानपुर, लखनऊ, झांसी और बरेली जैसे प्रमुख युद्ध स्थलों के साथ एक प्रमुख भूमिका निभाई। अपनी विफलता के बावजूद, विद्रोह ने भारतीय राष्ट्रवाद के बीज बोए।

विद्रोह के कारण:



1. आर्थिक शोषण

- भारी कर रोपण : स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी और महलवारी प्रणालियों के तहत उच्च भूमि राजस्व।
- पारंपरिक उद्योगों का पतन: वाराणसी और लखनऊ जैसे शहरों में हस्तशिल्प का विनाश।
- जबरन नील की खेती: आजमगढ़ में किसानों का ब्रिटिश नील बागान मालिकों द्वारा शोषण।
- बेरोजगारी और गरीबी: जमींदारों, कारीगरों और किसानों के लिए आर्थिक कठिनाइयाँ।

2. राजनीतिक और प्रशासनिक असंतोष

- व्यपगत का सिद्धांत: झांसी, सतारा, अवध का विलय, देशी शासकों को सत्ता से वंचित करना।
- अवध का अनुलग्नक (1856): वाजिदली शाह को कुलीनों और सिपाहियों को नाराज करते हुए पदच्युत कर दिया गया था।
- भ्रष्ट प्रशासन: व्यापक नौकरशाही अक्षमता और नस्लीय भेदभाव।

3. सामाजिक और धार्मिक कारण

- मिशनरी गतिविधियाँ: धार्मिक रीति-रिवाजों में ब्रिटिश हस्तक्षेप ने जबरन धर्मांतरण की आशंका को बढ़ा दिया।
- सुधारों का अधिथोपन: विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856) जैसे अधिनियमों को परंपराओं के लिये खतरे के रूप में देखा जाता है।

4. सैन्य असंतोष

- भेदभाव: भारतीय सिपाहियों को कम वेतन, कम पदोन्नति और नस्लीय पूर्वाग्रह प्राप्त हुए।
- विदेश सेवा भत्ते की समाप्ति: अवध और बिहार के सैनिकों ने अतिरिक्त वेतन भत्ते खो दिए।
- एनफील्ड राइफल विवाद: गाय और सुअर की चर्बी से चिकनाई वाले नए कारतूसों ने हिंदू और मुस्लिम सिपाहियों को नाराज कर दिया।

5. तत्काल कारण

- बैरकपुर में मंगल पांडे का विद्रोह (29 मार्च, 1857)।
- मेरठ विद्रोह (10 मई, 1857): सिपाहियों ने अधिकारियों को मार डाला, दिल्ली तक मार्च किया और बहादुर शाह जफर को सम्राट घोषित किया।

विद्रोह में उत्तर प्रदेश की भूमिका

1. मेरठ: विद्रोह का केंद्र

- मेरठ (10 मई, 1857) में विद्रोह शुरू हुआ।
- सिपाहियों ने कैद सैनिकों को मुक्त किया, ब्रिटिश अधिकारियों को मार डाला और दिल्ली तक मार्च किया।

2. कानपुर: नाना साहब का नेतृत्व

- नाना साहब, पेशवा बाजीराव द्वितीय की पेंशन से वंचित थे, कानपुर विद्रोह का नेतृत्व किया।
- उनके कमांडर तात्या टोपे लड़े लेकिन बाद में उन्हें पकड़ लिया गया और मार दिया गया।
- बिबिघर के नरसंहार (जुलाई 1857) के कारण गंभीर ब्रिटिश प्रतिशोध हुआ।

3. झांसी: रानी लक्ष्मीबाई का प्रतिरोध

- झांसी को व्यपगत के सिद्धांत के तहत ब्रिटिश राज्य में मिला लिया गया था।
- रानी लक्ष्मी बाई बहादुरी से लड़ी लेकिन ग्वालियर (जून 1858) में शहीद हो गईं।

4. लखनऊ: बेगम हजरत महल और अवध विद्रोह

- बेगम हजरत महल ने अवध विद्रोह का नेतृत्व किया, अपने बेटे को नवाब घोषित किया।
- अंग्रेजों ने भयंकर प्रतिरोध के बाद लखनऊ (मार्च 1858) पर पुनः कब्जा कर लिया।

5. बरेली: खान बहादुर खान का प्रतिरोध

- खान बहादुर खान ने बरेली विद्रोह का नेतृत्व किया, खुद को शासक घोषित किया।
- बाद में उसे पकड़ लिया गया और फांसी दे दी गई।

6. दोआब क्षेत्र (आगरा, इलाहाबाद और बनारस)

तारीख	घटना	नेता
29 मार्च 1857	बैरकपुर में मंगल पांडे का विद्रोह	मंगल पांडे
10 मई 1857	मेरठ में विद्रोह प्रारंभ	सिपाही
11 मई 1857	दिल्ली पर कब्जा; बहादुर शाह को सम्राट घोषित किया गया	सिपाही एवं नागरिक
4 जून 1857	कानपुर में विद्रोह प्रारंभ	नाना साहब
5 जून 1857	झांसी विद्रोह में शामिल	रानी लक्ष्मीबाई
30 जून 1857	लखनऊ में विद्रोह प्रारंभ	बेगम हजरत महल
मार्च 1858	ब्रिटिश सेना ने लखनऊ पर पुनः कब्जा किया	कोलिन कैम्पबेल
17 जून 1858	ग्वालियर में रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुईं	रानी लक्ष्मीबाई
अप्रैल 1859	तात्या टोपे गिरफ्तार और फांसी दी गईं	तात्या टोपे

उत्तर लेखन के लिए प्रमुख (कीवर्ड्स)

- "विद्रोह का केंद्र" – उत्तर प्रदेश की भूमिका को उजागर करने के लिए
- "बगावत की जन्मस्थली" – 1857 के विद्रोह में उत्तर प्रदेश के योगदान को दर्शाने के लिए
- "अडिग वीरता" – नेताओं की बहादुरी का वर्णन करने के लिए
- "भारतीय इतिहास का निर्णायक मोड़" – विद्रोह के महत्व को रेखांकित करने के लिए
- "ब्रिटिश आक्रोश और प्रतिशोध" – औपनिवेशिक सरकार की प्रतिक्रिया को समझाने के लिए
- "राष्ट्रीयता का उदय" – विद्रोह के प्रभाव और भविष्य पर प्रभाव डालने के लिए
- "विविधता में एकता" – विभिन्न समुदायों की भूमिका को रेखांकित करने के लिए
- "स्वराज की नींव" – स्वतंत्रता संग्राम की आधारशिला कैसे रखी गई, इसे समझाने के लिए

- जमींदारों और किसानों ने करों का भुगतान करने से इनकार कर दिया।
- ब्रिटिश दमन कठोर और क्रूर था।

विद्रोह का प्रभाव

1. राजनीतिक परिवर्तन

- कंपनी शासन का अंत: रानी विक्टोरिया की उद्घोषणा (1858) ने भारत को ब्रिटिश ताज के अधीन रखा।
- ब्रिटिश राज की स्थापना: गवर्नर-जनरल भारत का वायसराय बन गया।

2. सैन्य सुधार

- यूरोपीय सैनिकों में वृद्धि: अनुपात 1: 2 (ब्रिटिश से भारतीय सैनिक) में बदल गया।
- वफादार समूहों के लिए वरीयता: पंजाब और गोरखाओं से भर्ती, अवधियों पर निर्भरता कम करना।

3. सामाजिक और धार्मिक नीति

- विस्तारवादी नीतियों का अंत: चूक के सिद्धांत को समाप्त कर दिया गया।
- परंपराओं के लिए सम्मान: सामाजिक रीति-रिवाजों में सीमित ब्रिटिश हस्तक्षेप।

4. आर्थिक परिणाम

- उच्च कराधान: अवध जैसे क्षेत्रों को गंभीर दंड का सामना करना पड़ा।
- भूमि जब्ती: जमींदारों ने ब्रिटिश प्रतिशोध के कारण संपत्ति खो दी।

5. दीर्घकालिक प्रभाव

- राष्ट्रवाद का उदय: असहयोग (1920) और भारत छोड़ो (1942) जैसे बाद के आंदोलनों को प्रेरित किया।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन (1885)।

विद्रोह का प्रभाव के प्रमुख (कीवर्ड्स)

- पुनर्गठित सेना – ब्रिटिश और भारतीय सैनिकों के अनुपात में वृद्धि
- दमनकारी शासन – विद्रोहों के खिलाफ सख्त कानून लागू
- नौकरशाही में अनन्य ब्रिटिश वर्चस्व – भारतीय सिविल सेवा (ICS) में ब्रिटिश अधिकारियों का प्रभुत्व
- जमींदार समर्थक नीतियां – वफादार जमींदारों की पुनः बहाली

निष्कर्ष :

1857 का विद्रोह ब्रिटिश शासन के लिए भारत की पहली बड़ी सशस्त्र चुनौती थी, जिसने सैनिकों, किसानों और शासकों के बीच एकता को प्रदर्शित किया। उत्तर प्रदेश ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें रानी लक्ष्मी बाई, नाना साहब, बेगम हजरत महल और तात्या टोपे जैसे नेताओं ने प्रतिरोध का नेतृत्व किया। यद्यपि यह सैन्य रूप से विफल रहा, परन्तु विद्रोह ने भविष्य के स्वतंत्रता आंदोलनों के बीज बोए, जिसने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष को आकार दिया।

उत्तर प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान क्रांतिकारी गतिविधियां

उत्तर प्रदेश, जिसे भारत की हृदय भूमि के रूप में जाना जाता है, ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र बना, जिसमें कई युवा देशभक्त और कट्टरपंथी विचारक ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व कर रहे थे। असहयोग आंदोलन (1920-22) की विफलता और ब्रिटिश उत्पीड़न के साथ बढ़ती हताशा ने कई क्रांतिकारियों को सशस्त्र प्रतिरोध और भूमिगत गतिविधियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवधि में समाजवाद और साम्यवाद से लेकर राष्ट्रवादी अतिवाद तक वैचारिक प्रभावों का मिश्रण देखा गया, सभी एक ही लक्ष्य की ओर अभिसरण हुए - भारत की स्वतंत्रता।

क्रांतिकारी संगठनों का उदय

हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का गठन - 1924

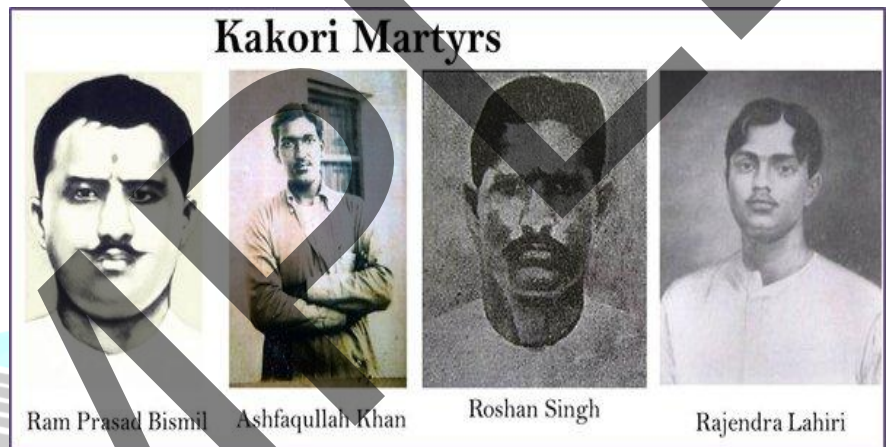
- **संस्थापक:** शचींद्रनाथ सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल, योगेश चंद्र चटर्जी
- **उद्देश्य:** सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत के एक संघीय गणराज्य की स्थापना करना।
- **प्रभाव:** आयरिश क्रांतिकारियों और रूसी समाजवादी आंदोलनों से प्रेरित।
- एच.आर.ए. बाद में **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (एचएसआरए)** में विकसित हुआ, जो भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व में समाजवादी विचारधारा की ओर बढ़ गया।

उत्तर प्रदेश में प्रमुख क्रांतिकारी घटनाएं

1. काकोरी ट्रेन एक्शन (1925) - सशस्त्र क्रांति की चिंगारी

- **तिथि:** अगस्त 9, 1925
- **स्थान:** काकोरी, लखनऊ के पास
- **योजना:** क्रांतिकारी आंदोलन को निधि देने के लिए खजाने के पैसे ले जाने वाली ब्रिटिश सरकार की ट्रेन को लूटना।
- **शामिल प्रमुख व्यक्तित्व:**

- **राम प्रसाद बिस्मिल** -
मुख्य योजनाकार
(मास्टरमाइंड)
- **अशफाक उल्ला खान** -
प्रमुख रणनीतिकार
- **राजेंद्र लाहिड़ी, रोशन सिंह, मन्मथनाथ गुप्ता** -
(कठोर नीतिकार) योजना के जल्लाद



- **परिणाम:**
 - अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों पर देशव्यापी कार्रवाई की।
 - राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी और रोशन सिंह को 1927 में मौत की सजा सुनाई गई थी।

2. कानपुर षड्यंत्र कांड (1924) - कम्युनिस्ट दमन

- **आरोप:** ब्रिटिश अधिकारियों ने एम.एन. रॉय, मुजफ्फर अहमद, एस.ए. डांगे और गुलाम हुसैन को कम्युनिस्ट विचारधारा फैलाने और श्रमिक विद्रोह भड़काने के आरोप में गिरफ्तार किया।
- **प्रभाव:** भारत में कम्युनिस्टों के खिलाफ पहला बड़ा मुकदमा चला, जिसने भारतीय क्रांतिकारियों के बीच मार्क्सवादी विचारधाराओं के बारे में जागरूकता पैदा की।

3. मेरठ षड्यंत्र कांड (1929) - श्रमिक क्रांति

- **तिथि:** मार्च 1929
- **घटना:** श्रमिक हड़तालों के माध्यम से ब्रिटिश शासन को अस्थिर करने के प्रयास के लिए 31 ट्रेड यूनियन नेताओं और कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया गया था।
- **उल्लेखनीय आंकड़े गिरफ्तार:**
 - शिव वर्मा, सुरेंद्र पांडेय, विजय कुमार सिन्हा, जयदेव सहाय
- **महत्व:** श्रमिक आंदोलन को मजबूत किया, भारत के स्वतंत्रता संग्राम को समाजवादी और श्रम अधिकार आंदोलनों से जोड़ा।

4. सहारनपुर बम फैक्ट्री (1929) - द सीक्रेट आर्सेनल

- घटना: ब्रिटिश अधिकारियों ने सहारनपुर में एक गुप्त बम बनाने वाली इकाई की खोज की।
- गिरफ्तार क्रांतिकारी: शिव वर्मा, गया प्रसाद, जयदेव कपूर।
- प्रासंगिकता: सशस्त्र विद्रोह की तैयारी में क्रांतिकारियों की तकनीकी और सामरिक प्रगति पर प्रकाश डाला।

5. अल्फ्रेड पार्क में चंद्रशेखर आजाद की शहादत (1931)

- तिथि: 27 फरवरी, 1931
- स्थान: अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद (अब चंद्रशेखर आजाद पार्क)
- घटना: भगत सिंह के गुरु आजाद की ब्रिटिश पुलिस के साथ मुठभेड़ हो गई।
- परिणाम: पकड़े जाने के बजाय, उन्होंने अपनी आखिरी गोली से खुद को गोली मार ली, जो भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम बलिदान का प्रतीक बन गया।

उत्तर प्रदेश के स्वतंत्रता आंदोलन में महिला क्रांतिकारियों की भूमिका

महिलाएं न केवल निष्क्रिय प्रतिभागी थीं, बल्कि सक्रिय रूप से लड़ीं, रणनीति बनाई और ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व किया।

1857 और बाद के क्रांतिकारी आंदोलन।

1857 के विद्रोह की महिला योद्धा:	
क्रांतिकारी महिलाएं	योगदान
रानी लक्ष्मी बाई	 <p>अंग्रेजों के खिलाफ झांसी की रक्षा का नेतृत्व किया, 17 जून, 1858 को उनकी शहादत तक बहादुरी से लड़ाई लड़ी।</p>
झलकारी बाई	 <p>ब्रिटिश सैनिकों को गुमराह करने के लिए लक्ष्मी बाई के रूप में खुद को प्रच्छन्न किया, बाद में अप्रैल 1858 में मार डाला गया।</p>
बेगम हजरत महल	 <p>लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व किया, अंग्रेजों के खिलाफ स्थानीय बलों का आयोजन किया।</p>
उदा देवी	 <p>नवाब वाजिद अली शाह के नेतृत्व में एक अखिल महिला रेजिमेंट की कमान संभाली।</p>
अजीजान बाई	 <p>कानपुर में नाना साहब और तात्या टोपे के साथ लड़े, गुरिल्ला युद्ध का समन्वय किया।</p>

20वीं सदी के क्रांतिकारी आंदोलनों में महिलाएं:

- दुर्गा भाभी - जॉन सॉन्डर्स की हत्या के बाद भगत सिंह को लाहौर से भागने में सहायता की।
- कल्पना दत्त और सुनीति चौधरी - चटगांव शस्त्रागार छापे से प्रेरित होकर, कई महिलाओं ने उत्तर प्रदेश में सशस्त्र संघर्ष में भाग लिया।
- सुभद्रा कुमारी चौहान - एक कवयित्री जिन्होंने रानी लक्ष्मी बाई को उनकी प्रसिद्ध कविता "झांसी की रानी" के माध्यम से अमर कर दिया।

क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रभाव:

उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारी आंदोलनों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर एक स्थायी विरासत छोड़ी।

1. राष्ट्रवाद को मजबूत करना

- क्रांतिकारियों के बलिदानों ने भावी पीढ़ियों को प्रेरित किया और भारत की राष्ट्रवादी चेतना को आकार दिया।

- काकोरी शहीद राष्ट्रीय नायक बन गए, जिन्होंने भविष्य की प्रतिरोध रणनीतियों को प्रभावित किया।

2. समाजवादी विचारधारा की ओर बदलाव

- राष्ट्रवादी अतिवाद से समाजवादी क्रांतिकारियों तक एच.एस.आर.ए के परिवर्तन ने श्रमिक आंदोलनों, किसान विद्रोहों और ट्रेड यूनियनों को प्रभावित किया।

- भारत में स्वतंत्रता के बाद की समाजवादी नीतियों के लिए आधार तैयार किया।

3. ब्रिटिश दमन और कानूनी कार्रवाई

- सख्त औपनिवेशिक कानून, जैसे कि सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक (1929) और व्यापार विवाद अधिनियम, श्रमिक और कम्युनिस्ट विद्रोह को रोकने के लिए लागू किए गए थे।

महिला क्रांतिकारी:

1. रानी लक्ष्मी बाई – वीरांगना महारानी
2. झलकारी बाई – लक्ष्मी बाई की छाया
3. बेगम हजरत महल – लखनऊ की शेरनी
4. उदा देवी – महिला शार्पशूटर
5. अजीजन बाई – कानपुर की वीरांगना

- महिला क्रांतिकारियों ने भारत में आधुनिक नारीवादी और राजनीतिक आंदोलनों का मार्ग प्रशस्त किया।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारी आंदोलन केवल हिंसक हमलों की एक श्रृंखला नहीं थी, बल्कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ रणनीतिक रूप से संगठित प्रतिरोध था। युवा क्रांतिकारियों ने अपने जीवन का बलिदान व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं बल्कि एक स्वतंत्र और समाजवादी भारत के बड़े उद्देश्य के लिए किया। उनके प्रयासों ने प्रतिरोध की आग को जीवित रखा और स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता के बाद के भारत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उत्तर प्रदेश में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन:

परिचय: स्वतंत्रता में उत्तर प्रदेश की भूमिका

उत्तर प्रदेश भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का एक प्रमुख केंद्र रहा, जिसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के नौ महत्वपूर्ण सत्रों की मेजबानी की। इन सत्रों ने राष्ट्रीय राजनीति को दिशा दी, विभिन्न नेताओं, आंदोलनों और विचारधाराओं को एक मंच पर लाकर भारत की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1885 में INC की स्थापना के बाद, 1888 में प्रयागराज में इसका तीसरा सत्र आयोजित हुआ, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन में उत्तर प्रदेश की राजनीतिक भूमिका की शुरुआत की। यह राज्य राष्ट्रवादी गतिविधियों में अग्रणी रहा और ऐतिहासिक संकल्पों, समझौतों व वैचारिक परिवर्तनों का साक्षी बना



उत्तर प्रदेश में आयोजित कांग्रेस सत्रों की सूची

शहर	सालों	अध्यक्ष	अर्थ
प्रयागराज	1888	जॉर्ज यूल (प्रथम विदेशी राष्ट्रपति)	ब्रिटिश दमन के बावजूद, 1,284 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
प्रयागराज	1892	डब्ल्यू.सी. बनर्जी	कांग्रेस ने संवैधानिक सुधारों पर जोर दिया।
प्रयागराज	1910	विलियम वेडरबर्न	सूरत विभाजन के बाद कांग्रेस की गतिविधियों में गिरावट देखी गई।
लखनऊ	1899	रमेश चंद्र दत्त	कांग्रेस के संविधान को स्वीकार किया गया, क्षेत्रीय समितियों का गठन किया गया।
लखनऊ	1916	अंबिका चरण मजूमदार	कांग्रेस-मुस्लिम लीग समझौता; नरमपंथियों और चरमपंथियों का विलय।
लखनऊ	1936	जवाहरलाल नेहरू	समाजवाद को कांग्रेस के मुख्य लक्ष्य के रूप में पेश किया।
बनारस	1905	गोपाल कृष्ण गोखले	बंगाल विभाजन की कड़ी आलोचना, स्वदेशी आंदोलन का समर्थन।
कानपुर	1925	सरोजिनी नायडू	कांग्रेस सत्र की अध्यक्षता करने वाली पहली भारतीय महिला।
मेरठ	1946	जे.बी. कृपलानी	1940 के बाद पहला अधिवेशन, आजादी से पहले अंतिम।

प्रमुख सत्रों की मुख्य विशेषताएं:

प्रयागराज (इलाहाबाद) सत्र:

1888 – तीसरा कांग्रेस अधिवेशन

- राष्ट्रपति: जॉर्ज यूल (INC के पहले विदेशी अध्यक्ष)।
- अंग्रेजों ने सत्र को दबाने का प्रयास किया, फिर भी 1,284 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- भारतीयों के लिए संवैधानिक सुधारों और नागरिक अधिकारों पर ध्यान देने की मांग रखी।

1892 – डब्ल्यू.सी. बनर्जी का नेतृत्व

- संवैधानिक सुधार चर्चाओं को आगे बढ़ाया।
- उत्तर भारत में कांग्रेस की उपस्थिति को मजबूत किया।

1910 - विलियम वेडरबर्न का नेतृत्व

- सूरत विभाजन (1907) के बाद कांग्रेस कमजोर हो गई।
- नरमपंथियों और चरमपंथियों के बीच आंतरिक विभाजन ने कांग्रेस की गतिविधियों को धीमा कर दिया।

लखनऊ सत्र:

1899 – रमेश चंद्र दत्त का नेतृत्व

- कांग्रेस के संविधान को औपचारिक रूप से स्वीकार कर लिया गया।
- क्षेत्रीय समितियों का गठन किया गया, जिससे सर सैयद अहमद खान का विरोध हुआ।

1916 – ऐतिहासिक लखनऊ समझौता

- अध्यक्ष: अंबिका चरण मजूमदार।
- प्रमुख घटनाक्रम:
 - कांग्रेस-मुस्लिम लीग समझौता (1916) राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एकता।
 - कांग्रेस में नरमपंथियों और चरमपंथियों का विलय।
 - 1919 के मोटेगू-चेम्सफोर्ड सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया।

Figure -Lucknow Pact

**1936 – नेहरू की समाजवादी दृष्टि**

- राष्ट्रपति: जवाहरलाल नेहरू।
- अर्थ:
 - समाजवाद को आधिकारिक तौर पर कांग्रेस के प्राथमिक लक्ष्य के रूप में पेश किया गया।
 - स्वतंत्रता आंदोलन में सामंतवाद और पूंजीवादी वर्चस्व को हटाने पर जोर।

बनारस (वाराणसी) अधिवेशन (1905) – गोपाल कृष्ण गोखले

- प्रमुख संकल्प:
 - बंगाल विभाजन (1905) की कड़ी आलोचना।
 - ब्रिटिश वस्तुओं के खिलाफ स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन के लिए समर्थन।
 - स्व-शासन और आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित किया।
 - असहयोग आंदोलन (1920) की नींव रखी।

कानपुर अधिवेशन (1925) - महिला नेतृत्व के लिए एक मील का पत्थर

- राष्ट्रपति: सरोजिनी नायडू।
- अर्थ:
 - कांग्रेस सत्र की अध्यक्षता करने वाली पहली भारतीय महिला।
 - स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया।
 - सविनय अवज्ञा आंदोलन की रणनीतियों को मजबूत किया।

मेरठ अधिवेशन (1946) – स्वतंत्रता के लिए अंतिम धक्का

- अध्यक्ष: जेबी कृपलानी।
- प्रमुख विशेषताएँ:
 - 1940 के बाद पहला सत्र (आजादी से पहले अंतिम अधिवेशन)।
 - कांग्रेस ने स्वतंत्रता के बाद के शासन के लिए अपनी रणनीति तैयार की।

INC सत्रों में विकास के लिए प्रमुख Keywords

- 1888 प्रयागराज – ब्रिटिश दमन के खिलाफ कांग्रेस की बुलंद आवाज
- 1916 लखनऊ समझौता – दुर्लभ राजनीतिक गठबंधन जिसने भारत का भविष्य बदला
- 1936 लखनऊ – कांग्रेस में समाजवाद की गूंज
- 1925 कानपुर – जब महिलाओं ने राष्ट्रीय राजनीति में केंद्र मंच संभाला
- 1905 बनारस – स्वदेशी आंदोलन की गूंज पूरे देश में फैली

स्वतंत्रता संग्राम पर इन सत्रों का प्रभाव

दृष्टिकोण	प्रभाव
राजनीतिक	स्व-शासन की मांगों को मजबूत किया, गठबंधन बनाने में मदद की (लखनऊ समझौता)।
आर्थिक	स्वदेशी, आर्थिक बहिष्कार और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित किया।
सामाजिक	महिला सशक्तिकरण, हिंदू-मुस्लिम एकता और समाजवाद को बढ़ावा दिया गया।
संवैधानिक	संवैधानिक प्रतिनिधित्व और शासन सुधारों की मांग उठाई।

करेंट अफेयर्स लिंकेज

1. राजनीति में महिलाओं का नेतृत्व

- सरोजिनी नायडू (1925) → भारतीय राजनीति में महिला सशक्तिकरण का प्रतीक थीं।
- महिला आरक्षण विधेयक (2023) पिछले संघर्षों से प्रेरित महिलाओं की भागीदारी पर जोर देने वाला आधुनिक राजनीतिक कदम

2. सांप्रदायिक सद्भाव और हिंदू-मुस्लिम एकता

- 1916 लखनऊ समझौता राजनीतिक संघर्षों में हिंदू-मुस्लिम एकता का उदाहरण।
- आज की प्रासंगिकता: भारतीय राजनीतिक संवाद में सांप्रदायिक सद्भाव की आवश्यकता।

3. शासन में समाजवादी आदर्शों का उदय

- 1936 नेहरू के समाजवादी ने योजना आयोग को प्रभावित किया (1950), कल्याणकारी योजनाएं और आर्थिक नीतियां।
- आज प्रासंगिकता: शासन में कल्याण बनाम पूंजीवादी मॉडल पर चल रही बहस।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सत्र भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मील के पत्थर थे। वे राजनीतिक सुधारों, जन आंदोलनों और नेतृत्व परिवर्तन के लिए मंच थे। स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तर प्रदेश का योगदान अस्मरणीय था और इन सत्रों ने राष्ट्रीय नीतियों को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाई। उनकी विरासत आज भी भारत के शासन, आर्थिक नीतियों और सामाजिक आंदोलनों को प्रभावित करती है।

असहयोग आंदोलन में उत्तर प्रदेश की भूमिका (1920)

असहयोग आंदोलन (1920-1922) महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के नेतृत्व में भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण चरण था। आंदोलन का उद्देश्य अहिंसक साधनों के माध्यम से ब्रिटिश शासन का विरोध करना, औपनिवेशिक संस्थानों का बहिष्कार करना और स्वदेशी को बढ़ावा देना था। उत्तर प्रदेश (तब संयुक्त प्रांत के रूप में जाना जाता था) ने जन एकता, नेतृत्व और जमीनी स्तर पर भागीदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राज्य राष्ट्रवादी गतिविधियों का केंद्र बन गया, ब्रिटिश शासन के खिलाफ हड़ताल, बहिष्कार और आंदोलन इसकी मुख्य विशेषताएं थीं।

1. उत्तर प्रदेश में नेतृत्व और जनजागरण

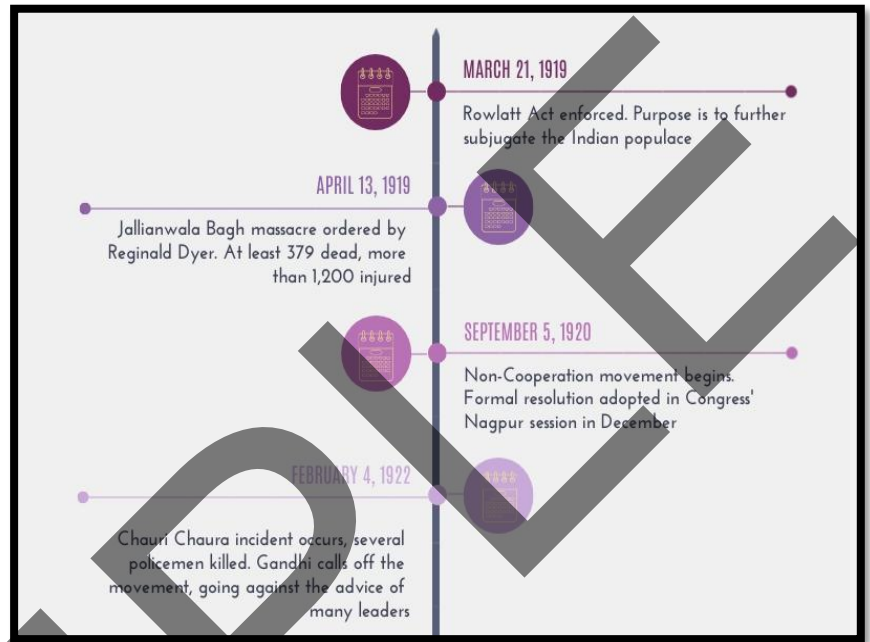
उत्तर प्रदेश में एक मजबूत राष्ट्रवादी नेतृत्व था, जिसने समाज के विभिन्न वर्गों में लोगों को जुटाने में सक्रिय रूप से भाग लिया।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख नेता

- **जवाहरलाल नेहरू** – विरोध प्रदर्शन आयोजित करने और युवाओं को जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **मोतीलाल नेहरू** – ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार किया और कांग्रेस में सक्रिय भूमिका निभाई।
- **गोविंद बल्लभ पंत** – किसानों को संगठित किया और प्रतिरोध आंदोलनों को संगठित किया।
- **मदन मोहन मालवीय** - बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के माध्यम से शिक्षा और राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार किया।
- **बाबा राघव दास** – ग्रामीण जनता के बीच काम किया, उन्हें भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

यूपी में आंदोलन के राजनीतिक केंद्र

- **इलाहाबाद** - कांग्रेस का एक प्रमुख गढ़ और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र।
- **लखनऊ** - बड़े पैमाने पर विरोध, छात्र आंदोलन और बहिष्कार देखा गया।
- **वाराणसी (बनारस)** – छात्रों और व्यापारियों ने सक्रिय रूप से ब्रिटिश संस्थानों का बहिष्कार किया।
- **कानपुर और गोरखपुर** – तीव्र कार्यकर्ता और किसान विरोध का सामना करना पड़ा।



2. असहयोग आंदोलन में जन भागीदारी

उत्तर प्रदेश में समाज के सभी वर्गों से सार्वजनिक भागीदारी का अभूतपूर्व स्तर देखा गया।

- **छात्र:** सरकारी स्कूलों और कॉलेजों को छोड़ दिया, काशी विद्यापीठ जैसे स्वदेशी संस्थानों में शामिल हो गए।
- **वकील:** मोतीलाल नेहरू जैसी प्रमुख हस्तियों सहित ब्रिटिश अदालतों का त्याग किया।
- **किसान:** जमींदारों और औपनिवेशिक अधिकारियों के खिलाफ कर प्रतिरोध आंदोलनों में लगे हुए हैं।
- **श्रमिक और व्यापारी:** कपड़ा मिलों में संगठित हड़तालें और ब्रिटिश सामानों का बहिष्कार किया।
- **महिलाएं:** विदेशी वस्तुओं की धरना देने और विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. उत्तर प्रदेश में आंदोलन की प्रमुख विशेषताएं

(A) ब्रिटिश संस्थानों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार

- सरकारी स्कूलों, कॉलेजों और कानून अदालतों का बहिष्कार किया गया।
- काशी विद्यापीठ, राष्ट्रीय मुस्लिम विश्वविद्यालय और जामिया मिलिया इस्लामिया जैसे स्वदेशी संस्थानों की स्थापना।
- ब्रिटिश निर्मित कपड़े, शराब और नमक का बहिष्कार।
- खादी और स्वदेशी हस्तशिल्प को बढ़ावा देना।

(B) विरोध, धरना और प्रदर्शन

- बड़े पैमाने पर रैलियां, हड़तालें और सरकारी संस्थानों का धरना।
- लखनऊ, कानपुर, वाराणसी और इलाहाबाद जैसे प्रमुख शहरों में प्रदर्शन।
- विदेशी सामान बेचने वाली दुकानों को निशाना बनाया गया, जिसमें लोगों से स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने का आग्रह किया गया।

(C) किसान और श्रमिक आंदोलन

- अवध, गोरखपुर और रायबरेली में किसानों ने उच्च करों और राजस्व संग्रह का विरोध किया।
- कानपुर के कपड़ा मजदूरों ने ब्रिटिश मिल मालिकों के खिलाफ हड़तालें आयोजित कीं गईं।
- किसानों ने अन्यायपूर्ण भूमि राजस्व का भुगतान करने से इनकार कर दिया, जिससे ब्रिटिश अधिकारियों के साथ कई झड़पें हुईं।

(D) चौरी चौरा कांड (1922) और इसका प्रभाव

- 5 फरवरी, 1922 को चौरी चौरा (गोरखपुर जिला, यूपी) में, प्रदर्शनकारियों ने एक पुलिस स्टेशन पर हमला किया, जिसमें आग लगा दी गई, जिससे 22 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई।
- महात्मा गांधी ने अहिंसा पर जोर देते हुए आंदोलन को स्थगित कर दिया।
- इस घटना ने जन आंदोलनों को नियंत्रित करने की चुनौती और हिंसक विद्रोह की संभावना को उजागर किया।

4. ब्रिटिश दमन और सार्वजनिक बलिदान

ब्रिटिश प्रशासन ने उत्तर प्रदेश में आंदोलन का कठोर जवाब दिया:

- नेहरू, पंत और अन्य कार्यकर्ताओं जैसे नेताओं की सामूहिक गिरफ्तारी।
- पुलिस की बर्बरता, जिसमें लाठीचार्ज, कारावास और सार्वजनिक कोड़े शामिल हैं।
- राष्ट्रवादी प्रेस और कांग्रेस कार्यालयों पर छापे।
- हजारों प्रदर्शनकारियों को देशद्रोह अधिनियम और रौलट अधिनियम के तहत जेल में डाल दिया गया।

भारी कार्रवाई के बावजूद, आंदोलन ने राष्ट्रवादी चेतना जागृत की और ब्रिटिश शासन के खिलाफ बड़े पैमाने पर प्रतिरोध को मजबूत किया।

उत्तर लेखन के लिए प्रमुख शब्द

- "उत्तर प्रदेश – जन प्रतिरोध की जन्मस्थली"
- "भारत के हृदय में स्वदेशी की लहर"
- "वकीलों से मजदूरों तक – एकजुट मोर्चा"
- "अदालतों से सड़कों तक – एक बहिष्कार क्रांति"
- "चौरी चौरा: राष्ट्रवाद में एक निर्णायक मोड़"
- "स्वदेशी, सत्याग्रह और हड़तालें – प्रतिरोध की त्रयी"

5. उत्तर प्रदेश में असहयोग आंदोलन का प्रभाव

प्रभाव क्षेत्र	ब्यौरा
राजनीतिक चेतना का उदय	जनता के बीच राष्ट्रवादी भावना को मजबूत किया।
कांग्रेस की मजबूती	उत्तर प्रदेश कांग्रेस का गढ़ बन गया, जिससे भविष्य में आंदोलन हुए।
आर्थिक आत्मनिर्भरता	खादी उत्पादन और स्वदेशी उद्यमों को प्रोत्साहित किया।
भविष्य के आंदोलन	प्रेरित सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942)।
किसान और कार्यकर्ता जागृति	भविष्य के संघर्षों के लिए किसान सभाओं और श्रमिक संघों को मजबूत किया।

6. करंट अफेयर्स से कनेक्शन

असहयोग आंदोलन की विरासत आधुनिक भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करती है:

- किसान विरोध (2020-21): अवध किसान आंदोलन के समान किसान प्रतिरोध की गूँज।
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार: 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' अभियानों में देखा गया।

- **राजनीतिक लामबंदी:** उत्तर प्रदेश राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बना हुआ है, जो राष्ट्रवादी आंदोलनों के अपने इतिहास से आकार लेता है।

7. निष्कर्ष

असहयोग आंदोलन में उत्तर प्रदेश की भूमिका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में महत्वपूर्ण थी। लोगों द्वारा की गई सामूहिक भागीदारी, राजनीतिक लामबंदी और बलिदान ने ब्रिटिश शासन को चुनौती देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चौरी चौरा की घटना के बाद आंदोलन के निलंबन के बावजूद, इसने भारतीय राजनीति पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे भविष्य के राष्ट्रवादी आंदोलनों को प्रेरित किया। उत्तर प्रदेश में इस आंदोलन की विरासत भारत के सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक ताने-बाने को आकार देती है, जो स्व-शासन और संप्रभुता प्राप्त करने में जन प्रतिरोध और अहिंसक संघर्ष की शक्ति की पुष्टि करती है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में उत्तर प्रदेश की अहम भूमिका

"विद्रोह की भूमि से स्वतंत्रता के पालने तक"

परिचय: नमक और स्वराज की लड़ाई

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-1934) ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में, यह अहिंसक अवज्ञा का एक कार्यक्रम था, जो दमनकारी ब्रिटिश कानूनों-विशेष रूप से नमक कर के उन्मूलन की मांग कर रहा था। उत्तर प्रदेश, एक राजनीतिक महाशक्ति के रूप में उभरा, जहां नेताओं, छात्रों, महिलाओं और आम लोगों ने औपनिवेशिक शासन को चुनौती देने के लिए हाथ से हाथ मिलाया।

उत्तर प्रदेश, जो राष्ट्रवादी संघर्ष का केंद्र रहा है, न केवल नेतृत्व और प्रतिरोध का स्रोत बना, बल्कि यह वह भूमि भी है जहां भारत का भाग्य पुनः लिखा गया।



नमक सत्याग्रह: यूपी में अवज्ञा की लहर

जबकि गांधी का दांडी मार्च (12 मार्च, 1930) आंदोलन का एक निर्णायक क्षण था, उत्तर प्रदेश ने इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, वाराणसी और गोरखपुर जैसे शहरों में व्यापक पैमाने पर विस्तृत हुआ। गांधी से प्रेरित होकर, स्थानीय सत्याग्रहियों ने:

- अवैध रूप से उत्पादित नमक, ब्रिटिश नमक कानूनों को चुनौती दी।
- बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन आयोजित किए और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया।
- क्रूर पुलिस दमन का सामना किया लेकिन दृढ़ रहे।

नमक अवज्ञा का प्रतीक बन गया, और उत्तर प्रदेश प्रतिरोध की एक महत्वपूर्ण पंक्ति बन गया।

आंदोलन के पथप्रदर्शक : यूपी के नेता

उत्तर प्रदेश भारत के कुछ महानतम स्वतंत्रता सेनानियों का घर था, जिन्होंने आंदोलन को आकार दिया:

- **जवाहरलाल नेहरू** – इलाहाबाद के युवा नेता, विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व करने और सविनय अवज्ञा के लिए उकसाने के लिए कई बार गिरफ्तार किए गए।
- **गोविंद बल्लभ पंत** – एक निडर संगठनकर्ता, उन्होंने **ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ उठने के लिए** किसानों और श्रमिकों को संगठित किया।
- **पुरुषोत्तम दास टंडन** – स्वदेशी के कट्टर समर्थक, उन्होंने ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार में **महत्वपूर्ण भूमिका निभाई**।
- **आचार्य नरेंद्र देव** – एक समाजवादी दूरदर्शी, उन्होंने **छात्रों और युवाओं** को स्वराज की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

इन नेताओं ने उत्तर प्रदेश को प्रतिरोध के केंद्र में बदल दिया, जिससे समाज के सभी वर्गों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित हुई।

पूर्ण स्वराज: उत्तर प्रदेश में क्रांति की गर्जना

1929 के लाहौर अधिवेशन के बाद, पूर्ण स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) प्रस्ताव ने राष्ट्रवादी उत्साह को प्रज्वलित किया। उत्तर प्रदेश ने जवाब दिया:

- ब्रिटिश शासन को समाप्त करने की मांग करते हुए विरोध, रैलियां और जन लामबंदी।
- लखनऊ, कानपुर और इलाहाबाद जैसे शहरों में **उपनिवेश विरोधी भावनाओं में विस्तार**।
- ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर अवज्ञा, जमीनी स्तर पर सक्रियता के उदय को चिह्नित करती है।

आजादी की पुकार उत्तर प्रदेश में गहराई से गूंजती रही, जिससे यह प्रतिरोध का गढ़ बन गया।

युवा और महिलाएं: आंदोलन के अनसुने नायक(अनसंग हीरोज)

छात्र: आंदोलन के अग्रदूत

उत्तर प्रदेश के छात्रों ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, स्कूलों और कॉलेजों को क्रांति के केंद्र में बदल दिया:

- ब्रिटिश संचालित शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार।
- स्वराज के लिए समर्पित छात्र संघों का गठन।
- पुलिस की कार्रवाई के बावजूद इलाहाबाद और वाराणसी जैसे शहरों में विरोध प्रदर्शन आयोजित करना।

नारी: सत्याग्रह की रीढ़

सामाजिक बाधाओं को तोड़ते हुए, उत्तर प्रदेश में महिलाओं ने निडर होकर आंदोलन में कदम रखा:

- शराब की दुकानों पर धरना दिया, आत्म-नियंत्रण के गांधीवादी दृष्टिकोण को मजबूत किया।
- मार्च और जुलूस का नेतृत्व किया, जन भागीदारी को प्रेरित किया।
- पुलिस की बर्बरता और कारावास को सहन किया, फिर भी निडर रहे।

यूपी की महिलाएं और युवा आंदोलन की जीवनरेखा बन गए, जिसने इसकी अविश्वसनीय गति सुनिश्चित की।

परदेश में ब्रिटिश दमन:

ब्रिटिश राज ने उत्तर प्रदेश में आंदोलन को कुचलने के लिए **क्रूर बल के** साथ जवाबी कार्रवाई की:

- नेहरू, पंत और टंडन जैसे नेताओं की सामूहिक गिरफ्तारियाँ
- शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज और गोलीबारी।
- संपत्ति की जब्ती, आर्थिक दंड और घर की गिरफ्तारी।

कठोर उपायों के बावजूद, अवज्ञा की भावना अटूट रही, जिसने आगे के प्रतिरोध के लिए मंच तैयार किया

भारत छोड़ो आंदोलन में उत्तर प्रदेश की महत्वपूर्ण भूमिका (1942)

जबकि **सविनय अवज्ञा आंदोलन** ने प्रतिरोध की पृष्ठभूमि तैयार की, **भारत छोड़ो आंदोलन (1942)** ब्रिटिश शासन के खिलाफ अंतिम और निर्णायक विद्रोह साबित हुआ। **राष्ट्रीय भावना और जन लामबंदी** के केंद्र के रूप में, उत्तर प्रदेश इस आंदोलन की कई महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी बना।



1. क्रांति की चिंगारी: जौनपुर विरोध

- अगस्त 1942 में महात्मा गांधी की गिरफ्तारी ने पूरे भारत को झकझोर कर रख दिया और जौनपुर अवज्ञा का केंद्र बिंदु बन गया।
- बाजार बंद हो गए, छात्रों ने संस्थानों का बहिष्कार किया और सरकारी कार्यालयों ने काम करना बंद कर दिया।
- विरोध प्रदर्शनों ने ब्रिटिश प्रशासन को पंगु बना दिया, जो लोगों द्वारा औपनिवेशिक शासन की अस्वीकृति का संकेत था।

2. धनपुर विद्रोह: जब प्रतिरोध उग्र हो गया

- धानपुर (चंदौली जिला) में, राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश प्राधिकरण को धता बताते हुए एक पुलिस स्टेशन पर साहसपूर्वक तिरंगा फहराया।
- अंग्रेजों ने गोलियों से जवाब दिया, जिससे कई लोग हताहत हुए, लेकिन इसने केवल लोगों के संकल्प को तेज कर दिया।
- कूर कार्रवाई की खबर ने राज्य भर में और विद्रोह को और बढ़ा दिया, स्थानीय प्रतिरोध को एक पूर्ण जन आंदोलन में बदल दिया।

Figure- Quit India movement

3. बलिया का गौरव का क्षण: समानांतर सरकार

- उत्तर प्रदेश में भारत छोड़ो आंदोलन की सबसे असाधारण घटना बलिया में हुई।
- एक क्रांतिकारी नेता चित्तू पांडे ने स्थानीय शासन का प्रभार संभाला और ब्रिटिश अधिकारियों को नियंत्रण आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया।
- एक संक्षिप्त लेकिन प्रतीकात्मक अवधि के लिए, बलिया स्व-शासन की क्षमता को प्रदर्शित करते हुए ब्रिटिश शासन से मुक्त हो गया।

- हालांकि अंग्रेजों ने अंततः समानांतर सरकार को कुचल दिया, लेकिन यह स्वतंत्रता के लिए यूपी की अटूट लड़ाई का एक जीवंत प्रमाण बना।

साहस और अवज्ञा के इन कार्यों ने उत्तर प्रदेश को प्रतिरोध के युद्ध के मैदान में बदल दिया, ब्रिटिश शासन को और अधिक पंगु बना दिया और 1947 में भारत की स्वतंत्रता के मार्ग को तेज कर दिया।

निष्कर्ष: यूपी – क्रांति का पावरहाउस:

सविनय अवज्ञा आंदोलन ने उत्तर प्रदेश को भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के केंद्र में बदल दिया। यहीं पर बड़े पैमाने पर अवज्ञा, साहसिक नेतृत्व और अटूट संकल्प एक ऐसी शक्ति के रूप में उभरे, जिसने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी।

कीवर्ड

1. "उत्तर प्रदेश की अंतिम हुंकार" – आंदोलन के निर्णायक चरण को दर्शाने के लिए।
2. "1942 का विद्रोह: यूपी का अडिग संकल्प" – प्रदेश की क्रांतिकारी भावना को दिखाने के लिए।
3. "ब्रिटिश राज के खिलाफ यूपी का गर्जन" – आंदोलन में जनता और नेताओं की भूमिका को उजागर करने के लिए।
4. "बलिया का अस्थायी स्वतंत्र शासन" – चित्तू पांडे के नेतृत्व में बलिया की क्रांति को दर्शाने के लिए।
5. "भूमिगत आंदोलन और ब्रिटिश विरोधी संघर्ष" – उत्तर प्रदेश में गुप्त गतिविधियों और आंदोलनकारियों की रणनीति के लिए।
6. "अवज्ञा, बलिदान और विद्रोह" – आंदोलन के दौरान यूपी के क्रांतिकारियों के साहस को दिखाने के लिए।
7. "अंग्रेजों भारत छोड़ो: यूपी की गूंज" – पूरे प्रदेश में व्यापक विरोध को व्यक्त करने के लिए।
8. "यूपी में असहयोग से स्वतंत्रता तक का सफर" – यूपी की निर्णायक भूमिका को संक्षेप में व्यक्त करने के लिए।

विषय 4: उत्तर प्रदेश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और विभूतियाँ



उत्तर प्रदेश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और विभूतियाँ

उत्तर प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानी

उत्तर प्रदेश देश के सबसे प्रभावशाली स्वतंत्रता सेनानियों का घर था जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर एक अमिट छाप छोड़ी। नीचे कुछ प्रमुख व्यक्तित्व दिए गए हैं:

बख्त खान:

- **जन्म:** बिजनौर, रोहिलखंड (उत्तर प्रदेश)
- **1857 के विद्रोह में भूमिका:**
 - ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में सूबेदार और बाद में दिल्ली में विद्रोही बलों के कमांडर-इन-चीफ।
 - बरेली ब्रिगेड का नेतृत्व किया, जिसमें बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की चार रेजिमेंट, एक घुड़सवार इकाई और तोपखाने शामिल थे।
 - मेरठ में विद्रोह के दौरान सिपाहियों द्वारा जनरल घोषित।
 - मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के साथ लड़े।
 - बाद में विद्रोह जारी रखने के लिए लखनऊ और शाहजहांपुर चले गए।



परिणाम:

- दिल्ली के पतन के बाद, उन्होंने लखनऊ में लड़ाई जारी रखी।
- बहादुर शाह जफर को बाद में बर्मा (म्यांमार) निर्वासित कर दिया गया था।

बेगम हजरत महल:

- नवाब वाजिद अली शाह (अवध के शासक) की दूसरी पत्नी।
- 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व किया।
- अपने बेटे बिरजिस कादिर अवध का शासक घोषित किया और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- राजा जयलाल सिंह द्वारा समर्थित, उन्होंने ब्रिटिश सेनाओं का विरोध किया लेकिन उन्हें भागने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- नेपाल में शरण ली, जहां 1879 में उनकी मृत्यु हो गई।

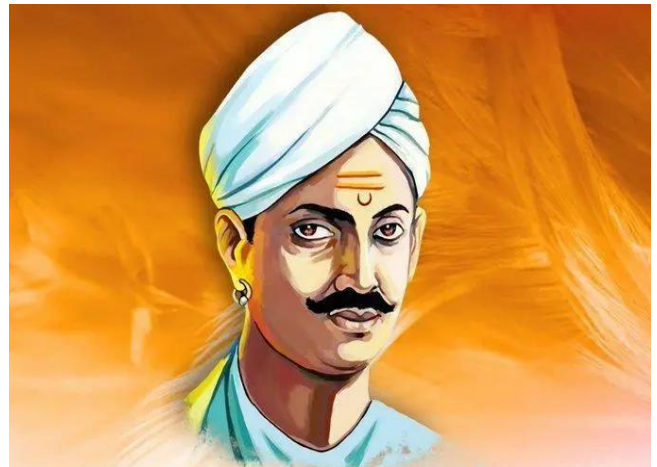


विरासत:

- लखनऊ में स्मारक बनाकर सम्मानित किया गया है।
- औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

मंगल पांडे:

- **जन्म:** नगवा गाँव, बलिया जिला (उत्तर प्रदेश)।
- **1857 के विद्रोह में भूमिका:**
 - 34 वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री में सिपाही।
 - ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला करके 1857 के भारतीय विद्रोह को जन्म दिया।



- चर्बी वाले कारतूसों (गाय और सुअर की चर्बी होने का संदेह) के साथ एनफील्ड राइफलों के उपयोग से सिपाहियों में व्यापक आक्रोश पैदा हो गया।
- 8 अप्रैल, 1857 को बैरकपुर में निष्पादित किया गया।

प्रभाव:

- उनके कार्यों ने भविष्य के क्रांतिकारियों को प्रेरित किया।
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम के पहले शहीद के रूप में माना जाता है।

मौलवी लियाकत अली:

- जन्म: महगांव, प्रयागराज (इलाहाबाद)।
- इलाहाबाद में 1857 के विद्रोह के नेता।
- जमींदारों और शहरी वर्ग के समर्थन से आम लोगों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया।
- 10 दिनों के लिए इलाहाबाद पर कब्जा कर लिया, ब्रिटिश सेना को शहर में प्रवेश करने से रोक दिया।
- 14 साल तक पकड़े जाने से बचते रहे, परन्तु बाद में अंडमान द्वीप समूह में पकड़े गए और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।
- 17 मई, 1892 को निधन हो गया।



राव कदम सिंह:

- 1857 के विद्रोह के दौरान मेरठ में गुर्जर के नेता ने विद्रोह किया।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ हिंसक हमलों का नेतृत्व किया।
- ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ उनके प्रतिरोध के लिए याद किया जाता है।

आचार्य नरेंद्र देव:

- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के एक प्रमुख सिद्धांतकार।
- लोकतांत्रिक समाजवाद के वकील, हिंसक साधनों को खारिज किया।
- सत्याग्रह क्रांतिकारी कार्यवाही के लिए उनका प्राथमिक उपकरण था।
- नैतिक और मानवीय आधार पर गरीबी उन्मूलन पर जोर दिया।
- हिंदी भाषा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय (1947-1951) और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (1951-1954) के कुलपति के रूप में कार्य किया।
- अपनी मृत्यु तक प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से जुड़े रहे।
- करेंट अफेयर्स कनेक्शन: नरेंद्र देव यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी (1975) उनकी विरासत को आगे बढ़ा रहा है।
- राजीव गांधी का उद्धरण: "आचार्य नरेंद्र देव भारत के सबसे महान सपूतों में से एक थे और राष्ट्र उनके लिए ऋणी है।"



आसफ अली:

- स्वतंत्रता सेनानी और राजनयिक।

- अमेरिका में भारत के प्रथम राजदूत
- स्वतंत्रता के बाद ओडिशा के राज्यपाल।
- मुस्लिम नेशनलिस्ट पार्टी के सदस्य के रूप में केंद्रीय विधान सभा (1935) के लिए चुने गए ।
- बाद में कांग्रेस के प्रभावशाली नेता और उपनेता बने।
- जवाहरलाल नेहरू के अधीन रेल और परिवहन मंत्री (1946)।
- काकोरी षड्यंत्र मुकदमे में वकील के रूप में बटुकेश्वर दत्त का बचाव किया।
- करेंट अफेयर्स लिंक: न्यायपालिका और शासन में उनके योगदान को अक्सर आधुनिक संवैधानिक बहस में उद्धृत किया जाता है।

अशफाकउल्ला खान:

- हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) के सह-संस्थापक।
- काकोरी षड्यंत्र (1925) का मास्टरमाइंड।
- काकोरी डकैती के बाद पकड़े जाने से बच निकला लेकिन बाद में गिरफ्तार कर लिया।
- 19 दिसंबर, 1927 को फैजाबाद जेल में फांसी दी गई।
- भारत की आजादी के लिए शहीद माना जाता है।
- वर्तमान प्रासंगिकता: यूपी के शैक्षिक पाठ्यक्रम और स्मारक कार्यक्रमों में सम्मानित किया गया।



चंद्रशेखर आजाद:



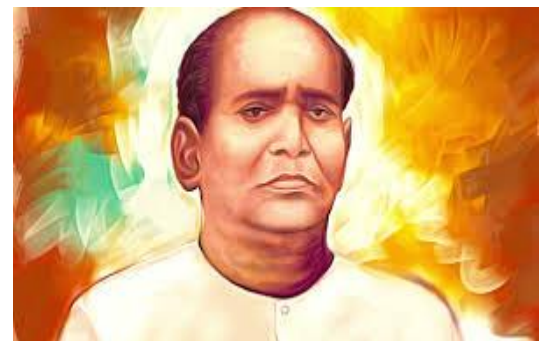
- चंद्रशेखर तिवारी का जन्म उन्नाव जिले में हुआ था।
- असहयोग आंदोलन (1922) में शामिल हुए लेकिन बाद में क्रांतिकारी तरीकों को अपनाया।
- एच.आर.ए. को हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (एच.एस.आर.ए.) में पुनर्गठित किया।
- में शामिल:
 - काकोरी ट्रेन डकैती (1925)
 - लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला (1928)
 - ब्रिटिश वायसराय की ट्रेन पर बम का प्रयास (1929)
- ब्रिटिश पुलिस के खिलाफ अंतिम स्टैंड के बाद, 1931 में अल्फ्रेड पार्क,

इलाहाबाद में मृत्यु हो गई।

- करेंट अफेयर्स कनेक्शन: अल्फ्रेड पार्क ने उनके सम्मान में चंद्रशेखर आजाद पार्क का नाम बदल दिया

चित्तू पांडे:

- शेर-ए-बलिया (बलिया का शेर)।
- बलिया (भारत छोड़ो आंदोलन, 1942) में एक समानांतर सरकार का नेतृत्व किया।
- ब्रिटिश कलेक्टर को आत्मसमर्पण करने और कांग्रेस नेताओं को रिहा करने के लिए मजबूर किया।
- अंग्रेजों ने एक सप्ताह के भीतर सरकार को दबा दिया।
- वर्तमान लिंक: बलिया यूपी में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और



ऐतिहासिक केंद्र बना हुआ है।



किया जाता है।

गणेश शंकर विद्यार्थी:

- पत्रकार और राष्ट्रवादी नेता।
- प्रताप (हिंदी अखबार) के संस्थापक-संपादक।
- असहयोग आंदोलन में नेता।
- उत्तर प्रदेश विधान परिषद (1925-1929) के लिए चुने गए।
- 1931 में कानपुर में सांप्रदायिक दंगों को नियंत्रित करते हुए मारे गए।
- करेंट अफेयर्स कनेक्शन: मीडिया एथिक्स और पत्रकारिता में याद

गोविंद बल्लभ पंत:

- काकोरी मुकदमे में राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान का बचाव किया।
- उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री (1937-1939)।
- केंद्रीय गृह मंत्री (1955-1961)।
- स्वतंत्रता के बाद भारत के शासन के वास्तुकार।
- पंतनगर विश्वविद्यालय और पंत अस्पताल का नाम उनके सम्मान में रखा गया है।



हसरत मोहानी:

- उर्दू कवि और स्वतंत्रता सेनानी।
- प्रसिद्ध नारा गढ़ा "इंकलाब जिंदाबाद" (क्रांति जिंदाबाद!)
- 1921 में पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने वाले पहले नेता।
- उन्नाव जिले में पैदा हुए।

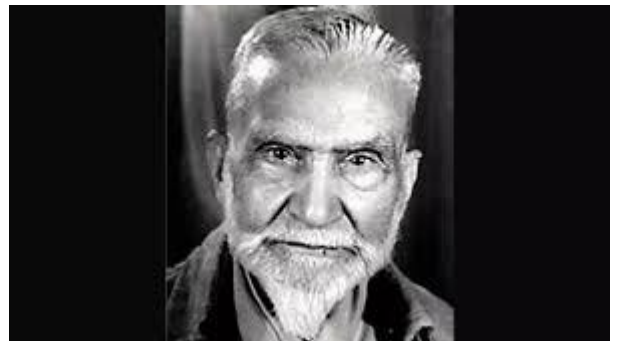


रफी अहमद किदवई:

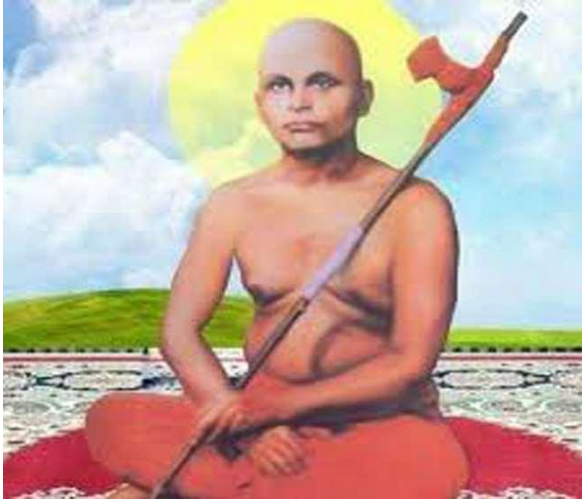
- स्वतंत्र भारत में संचार के लिए प्रथम मंत्री।
- बाराबंकी के समाजवादी नेता।
- यूपी में भूमि सुधार लागू किए।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली की नींव रखी।

राजा महेंद्र प्रताप सिंह:

- भारत की पहली अस्थायी सरकार (1915, अफगानिस्तान) के अध्यक्ष।
- मार्क्सवादी समाजवाद की वकालत की।
- पत्रकार, सुधारक और क्रांतिकारी।
- मुरसान, हाथरस में पैदा हुए।



स्वामी सहजानंद सरस्वती:



- उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में जन्मे, वह एक समाज सुधारक, इतिहासकार, दार्शनिक, लेखक, तपस्वी, क्रांतिकारी, मार्क्सवादी और राजनीतिज्ञ थे।

- प्रारंभ में बिहार पर ध्यान केंद्रित किया गया, लेकिन 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा (ए.आई.के.एस.) के गठन के साथ उनका प्रभाव बढ़ गया।

- किसानों के अधिकारों के पैरोकार राधा मोहन सिंह ने किसान आंदोलनों का नेतृत्व किया और भूमि सुधार नीतियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- उनकी मार्क्सवादी विचारधारा ने उन्हें जमींदारी उत्पीड़न का विरोध करने के लिए प्रेरित किया, और उन्हें उनके प्रतिरोध के लिए कई बार कैद किया गया।

- वर्तमान प्रासंगिकता: कृषि सुधारों और किसानों के अधिकारों पर उनके विचार महत्वपूर्ण हैं, खासकर भारत में समकालीन किसान विरोध के बीच।

धन सिंह गुर्जर:

- मेरठ के कोतवाल (पुलिस प्रमुख) ने 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- मेरठ में ब्रिटिश सेना के खिलाफ पहले हमले का नेतृत्व किया, 1857 के बड़े भारतीय विद्रोह की शुरुआत की।
- स्थानीय सिपाहियों और नागरिकों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ उठने, ब्रिटिश खजाने पर कब्जा करने और कैदियों को मुक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- बाद में अंग्रेजों द्वारा कब्जा कर लिया गया और फांसी दे दी गई, लेकिन जमीनी स्तर पर प्रतिरोध का प्रतीक बना रहा।
- वर्तमान प्रासंगिकता: उनकी भूमिका क्षेत्रीय प्रतिरोध और भारत के स्वतंत्रता के पहले युद्ध में स्थानीय नेताओं की भागीदारी पर प्रकाश डालती है।

विजय सिंह पथिक (राष्ट्रीय पथिक):

- उनका असली नाम भूप सिंह है, जो अपने ब्रिटिश विरोधी प्रतिरोध के लिए जाने जाते थे।
- अंग्रेजों द्वारा अत्यधिक भू-राजस्व की मांग के खिलाफ बिजौलिया आंदोलन (राजस्थान) का आयोजन किया।
- उनके लेखन और भाषणों ने जनता के बीच राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रज्वलित किया।
- चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों को प्रेरित किया।
- वर्तमान प्रासंगिकता: कृषि आंदोलनों और उपनिवेशवाद विरोधी प्रतिरोध में उनके प्रयास आज के किसान नेतृत्व वाले आंदोलनों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

उदा देवी (1857 का दलित वीरांगना):

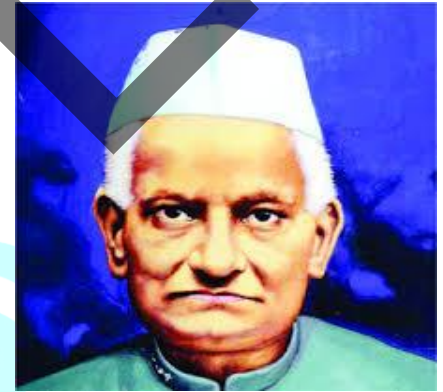
- 1857 के विद्रोह की एक भयंकर महिला योद्धा, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ दलित प्रतिरोध से जुड़ी थी।
- अवध के नवाब वाजिद अली शाह की महिला टीम की सदस्य।
- युद्ध में अपने पति को खोने के बाद, उसने एक आदमी के रूप में प्रच्छन्न होकर लड़ाई लड़ी और शहीद होने से पहले कई ब्रिटिश सैनिकों को मार डाला।
- दलित महिला सशक्तिकरण का प्रतीक, जिसे "दलित वीरांगना" (दलित योद्धा रानी) के रूप में जाना जाता है।
- वर्तमान प्रासंगिकता: दलित इतिहास और सशस्त्र प्रतिरोध में महिलाओं की भागीदारी में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

कमला कौल नेहरू:

- जवाहरलाल नेहरू की पत्नी, ने असहयोग आंदोलन (1921) में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- इलाहाबाद में विदेशी सामान और शराब की दुकानों के खिलाफ महिलाओं के विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया।
- घायल क्रांतिकारियों के इलाज के लिए स्वराज भवन औषधालय की स्थापना की।
- सरोजिनी नायडू और कस्तूरबा गांधी की करीबी सहयोगी, गांधी की विचारधारा से प्रभावित हैं।
- वर्तमान प्रासंगिकता: स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की लामबंदी में भूमिका आधुनिक समय के नारीवादी आंदोलनों से जुड़ी हुई है।

मोतीलाल नेहरू:

- एक अनुभवी कांग्रेस नेता, 1919 और 1928 में कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
- असहयोग आंदोलन का समर्थन किया लेकिन बाद में नागरिक प्रतिरोध को निलंबित करने के गांधी के फैसले की आलोचना की।
- स्वराज पार्टी के संस्थापक, ब्रिटिश परिषदों में भारतीय प्रतिनिधित्व की वकालत करते थे।
- नेहरू रिपोर्ट (1928) का मसौदा तैयार किया, जो स्व-प्रारूपित संविधान में भारत का पहला प्रयास था।
- वर्तमान प्रासंगिकता: संवैधानिक शासन पर उनके विचारों ने भारत के लोकतांत्रिक ढांचे को प्रभावित किया।

**पंडित मदन मोहन मालवीय ("महामना"):**

- प्रयागराज में जन्मे, चार बार कांग्रेस अध्यक्ष और हिंदू राष्ट्रवाद के प्रस्तावक।
- 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू.) की स्थापना की, जो शिक्षा का एक प्रमुख संस्थान है।
- लखनऊ समझौते (1916) के तहत मुस्लिम पृथक निर्वाचक मंडल का विरोध किया।
- तुष्टिकरण की राजनीति के विरोध में कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया और कांग्रेस राष्ट्रवादी पार्टी की स्थापना की।
- वर्तमान प्रासंगिकता: उनका शैक्षिक योगदान भारत के शैक्षणिक परिदृश्य को प्रभावित करना जारी रखता है।

**सुभद्रा कुमारी चौहान:**

- कवयित्री और स्वतंत्रता सेनानी, प्रयागराज जिले में पैदा हुए।

- नागपुर में गिरफ्तारी वाली पहली महिला सत्याग्रही।
- रानी लक्ष्मी बाई को अमर करने वाली उनकी कविता "झाँसी की रानी" के लिए जानी जाती हैं:
"खूबीमदर्दानी, वो झाँसी वाली रानी थी..."

• वर्तमान प्रासंगिकता: उनकी कविता राष्ट्रवादी साहित्य और महिला सशक्तिकरण को प्रेरित करती है।
कमला चौधरी:

- लखनऊ में जन्मे, सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) में सक्रिय भूमिका निभाई।
- अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष चुने गए।
- भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने में मदद करने वाले भारत की संविधान सभा के सदस्य।
- वर्तमान प्रासंगिकता: महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण और संविधान निर्माण में योगदान।



नाना साहिब (पेशवा द्वितीय):

- ब्रिटिश नियंत्रण को चुनौती देते हुए कानपुर में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया।
- शुरू में ब्रिटिश सहयोगी के रूप में पेश किया गया, बाद में खुद को बहादुर शाह द्वितीय का जागीरदार घोषित कर दिया।
- उनके सेनापति तात्या टोपे ने लापता होने के बाद भी गुरिल्ला युद्ध जारी रखा।
- वर्तमान प्रासंगिकता: क्रांतिकारी प्रतिरोध पर चर्चा में उनकी विरासत जारी है।

उत्तर लेखन के लिए कीवर्ड

विद्रोह का केंद्र – यूपी 1857 के विद्रोह का केंद्र था, जिसमें मंगल पांडे जैसे नेताओं ने नेतृत्व किया, **स्वतंत्रता के वास्तुकार** – नेहरू और आजाद जैसे दूरदर्शी लोगों ने एक स्वतंत्र भारत की नींव रखी, **बलिदान की किरण** – राम प्रसाद बिस्मिल और अशाफाकउल्ला खान जैसे शहीदों ने राष्ट्र के लिए अपनी जान दे दी, **स्वतंत्रता के मशाल वाहक** – गोविंद बल्लभ पंत जैसे नेताओं ने स्वतंत्रता के बाद शासन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, **राष्ट्रवाद का उद्गम स्थल** – यूपी ने भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं का उत्पादन किया, **विद्रोह की लपटें** – मंगल पांडे और बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों ने सशस्त्र प्रतिरोध, सत्याग्रह गढ़ के माध्यम से स्वतंत्रता की आग प्रज्वलित की, **स्वतंत्रता के शहीद** – अशाफाक उल्ला खान और रानी लक्ष्मीबाई जैसे बहादुरों ने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। **फ्रंटलाइन वॉरियर्स** – जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री और मदन मोहन मालवीय जैसे नेताओं ने राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया, **वीरता के प्रतीक** – रानी लक्ष्मीबाई और मंगल पांडे जैसे शहीदों ने स्वतंत्रता की लड़ाई में अद्वितीय बहादुरी का उदाहरण दिया, **परिवर्तन के अग्रदूत** – ईश्वर चंद्र विद्यासागर और स्वामी विवेकानंद जैसे सुधारकों ने यूपी में सामाजिक और राजनीतिक चेतना को प्रभावित किया, **स्वदेशी के दिग्गज** – यूपी ने स्वदेशी आंदोलन में मजबूत भागीदारी देखी, स्वदेशी उद्योगों और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाले नेताओं के साथ, **सविनय अवज्ञा के चैंपियन** – यह क्षेत्र गांधीवादी आंदोलनों का एक प्रमुख केंद्र था, जिसमें सविनय अवज्ञा आंदोलन में बड़े पैमाने पर भागीदारी थी, **न्याय के अग्रदूत** – यूपी के कानूनी और समाज सुधारक, जैसे डॉ संपूर्णानंद ने न्याय और समानता की वकालत की, **विरासत के संरक्षक** – राज्य ने संस्थानों, स्मारकों और निरंतर लोकतांत्रिक मूल्यों के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत को संरक्षित किया, **लोकतांत्रिक लोकाचार के संरक्षक** – यूपी के नेताओं ने स्वतंत्रता के बाद भारत की लोकतांत्रिक नींव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मॉडल प्रश्न:

"उत्तर प्रदेश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों और व्यक्तित्वों के भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान पर चर्चा करें। उनके प्रयासों ने देश के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को कैसे आकार दिया?" (दीर्घ उत्तर)

परिचय (30-40 शब्द)

कैसे प्रारंभ करें?

- हमेशा एक सामान्य कथन के साथ शुरुआत करें जो विषय की पृष्ठभूमि तैयार करे।
- ऐतिहासिक संदर्भ का उपयोग करते हुए, उत्तर प्रदेश को स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में प्रस्तुत करें।
- उल्लेख करें कि यूपी के स्वतंत्रता सेनानियों ने सशस्त्र और अहिंसक दोनों आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उदाहरणीय उद्घाटन वाक्य:

"उत्तर प्रदेश, जिसे 'क्रांति की भूमि' कहा जाता है, ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक, इस राज्य ने कई महान नेताओं को जन्म दिया, जिन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन को आकार दिया।"

मुख्य भाग (150-180 शब्द)

कैसे आगे बढ़ें?

मुख्य भाग को दो भागों में विभाजित करें –

1. प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और उनका योगदान
2. सामाजिक-राजनीतिक विकास पर प्रभाव

(A) उत्तर प्रदेश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और उनका योगदान

- **मंगल पांडे (1857 का विद्रोह)** – प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाई।
- **बेगम हजरत महल** – अवध में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया।
- **राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खां** – काकोरी कांड (1925) के नायक, हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के क्रांतिकारी।
- **चंद्रशेखर आज़ाद** – एचएसआरए (HSRA) के संस्थापक, सशस्त्र क्रांति के समर्थक।
- **पं. जवाहरलाल नेहरू** – असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया, स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री बने।
- **सुभद्रा कुमारी चौहान** – राष्ट्रवादी भावना को जाग्रत करने वाली कवयित्री ("झांसी की रानी")।
- **रफी अहमद किदवई** – प्रमुख रणनीतिकार, स्वतंत्रता के बाद कृषि और खाद्य सुरक्षा सुधारों में योगदान।

सुझाव: स्पष्टता बढ़ाने के लिए बुलेट पॉइंट्स या उपशीर्षकों का उपयोग करें।

(B) सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य पर प्रभाव

कैसे आगे बढ़ें?

- बताएं कि कैसे इन सेनानियों के योगदान ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा बदल दी।
- उनके क्रांतिकारी विचारों, जन आंदोलनों और राजनीतिक संस्थानों के विकास पर प्रभाव की चर्चा करें।

उदाहरणीय बिंदु:

- **राष्ट्रीयता को मजबूत किया** – युवाओं को स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।
- **क्रांतिकारी और गांधीवादी प्रभाव** – सशस्त्र संघर्ष और अहिंसक प्रतिरोध का संतुलन उभरा।
- **राजनीतिक चेतना का विकास** – यूपी कांग्रेस और समाजवादी गतिविधियों का केंद्र बना।
- **महिलाओं का सशक्तिकरण** – हजरत महल और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी महिलाओं ने आंदोलन में भागीदारी बढ़ाई।
- **स्वतंत्रता के बाद प्रभाव** – नेहरू और किदवई जैसे नेताओं ने भारत की नीतियों और शासन को आकार दिया।

सुझाव: विचारों को तार्किक रूप से जोड़ने के लिए "फलस्वरूप, इसके परिणामस्वरूप, इसने..." जैसे शब्दों का प्रयोग करें।

निष्कर्ष (30-40 शब्द)

कैसे आगे बढ़ें?

- यूपी के स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका का सारांश दें।
- उनके स्वतंत्र भारत पर दीर्घकालिक प्रभाव को उजागर करें।

उदाहरणीय निष्कर्ष:

"उत्तर प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान भारत की स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उनकी कुर्बानियों ने लोकतांत्रिक शासन, सामाजिक-आर्थिक सुधारों और राष्ट्रीय एकता की नींव रखी, जिससे भारत के इतिहास में उनकी स्थायी छाप बनी रही।"

सुझाव: हमेशा एक सशक्त, भविष्य-दृष्टि वाले कथन के साथ समाप्त करें ताकि उनके स्थायी प्रभाव को रेखांकित किया जा सके।

विषय 5. ग्रामीण, शहरी और जनजातीय मुद्दे: सामाजिक संरचना, त्योहार, मेले, संगीत, लोक नृत्य, साहित्य और भाषाएँ / बोलियाँ, उत्तर प्रदेश के सामाजिक रीति-रिवाज



उत्तर प्रदेश का सामाजिक-सांस्कृतिक कैनवास - परिचय और विस्तृत अवलोकन:

उत्तर प्रदेश: जहां ग्रामीण विरासत शहरी आकांक्षाओं को पूरा करती है

"उत्तर प्रदेश जिस दिशा में बढ़ता है, भारत की विकास कहानी भी उसी दिशा में आगे बढ़ती है।" - नीति आयोग

उत्तर प्रदेश, भारत के जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक ताने-बाने का केंद्र बिंदु, विविधताओं और विरोधाभासों से भरा है— सदियों पुरानी ग्रामीण परंपराएं, तेजी से बढ़ते शहरी क्षेत्र और उपेक्षित आदिवासी समुदाय, सभी इसका हिस्सा हैं। 2023 के अनुमान के अनुसार, 24 करोड़ से अधिक की आबादी और मात्र 22.27% शहरीकरण दर (जो 31.6% के राष्ट्रीय औसत से काफी कम है) के साथ, राज्य का विकास ग्रामीण सशक्तिकरण, सतत शहरीकरण और जनजातीय कल्याण पर निर्भर करता है।

उत्तर प्रदेश की शासन चुनौती केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि विकास सभी वर्गों तक समान रूप से पहुंचे। अपने कृषि प्रधान क्षेत्रों से लेकर उभरते महानगरों तक, उत्तर प्रदेश भारत की प्रगति की दिशा तय करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

"उत्तर प्रदेश सिर्फ एक राज्य नहीं, बल्कि वह आधार है जिस पर भारत की प्रगति को आंका जाता है।" - आर्थिक

सर्वेक्षण

जनसंख्या का सामान्य समाजशास्त्रीय रूपरेखा (जनगणना 2011):

- ग्रामीण जनसंख्या: 77.7%
- शहरी जनसंख्या: 22.27%
- एस.टी. जनसंख्या: ~0.6% (लगभग 11.34 लाख)
- शहरी विकास (2001-2011): 28.75%

सामान्य मुद्दे और चुनौतियां

1. असंतुलित विकास और क्षेत्रीय असमानता

- a. उदाहरण: पूर्वांचल और बुंदेलखंड प्रति व्यक्ति आय और बुनियादी ढांचे के मामले में पश्चिमी यूपी से पीछे हैं।
- b. लक्षित योजना की कमी ने अंतर-राज्य असमानताओं को गहरा किया है।
2. **शहरी बहिष्करण क्षेत्र**
बाराबंकी और बदायूं जैसे शहरों में नियोजित बुनियादी ढांचे के बिना तेजी से शहरीकरण ने अनियमित मलिन बस्तियों, बेरोजगारी और खराब स्वच्छता को जन्म दिया है।
3. **आदिवासी सांस्कृतिक पहचान की उपेक्षा**
उदाहरण: पीलीभीत में थारू जनजाति पेसा सुरक्षा उपायों के बावजूद भूमि हस्तांतरण का सामना करती है।
4. **पारंपरिक व्यवसायों का पतन**
औद्योगिक प्रतिस्पर्धा और ऋण की कमी के कारण मुबारकपुर में बुनाई और खुर्जा में मिट्टी के बर्तन खतरे में हैं।
5. **सार्वजनिक नीति में भाषा-बोली अंतर**
अधिकांश सरकारी योजनाएँ मानक हिंदी या उर्दू में संप्रेषित की जाती हैं; जबकि भोजपुरी, अवधी, बुंदेली जैसी उपभाषाओं की विविधता को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है, जिससे उनकी पहुँच सीमित हो जाती है।

समिति अंतर्दृष्टि

- **ग्रामीण विकास पर सुंदरलाल बहुगुणा समिति (जी.ओ.आई.)** ने स्थानिक असमानता को संतुलित करने के लिए एकीकृत ग्रामीण-शहरी नियोजन की सिफारिश की।
- **शहरी अवसंरचना संबंधी उच्चाधिकार प्राप्त विशेषज्ञ समिति (एच.पी.ईसी.)** ने सहारनपुर और फैजाबाद जैसे छोटे शहरों में शहरी सुविधाओं के उन्नयन की आवश्यकता पर बल दिया है जहां नकारात्मक विकास की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

आगे की रह : यूपी की वास्तविकता में निहित सुझाव

- **पारंपरिक ग्रामीण उद्योगों का पुनरुद्धार:** जनजातीय समावेशन के साथ ODOP (एक ज़िला एक उत्पाद) को बढ़ावा देना - जैसे, आदिवासी कारीगरों द्वारा बनाए गए भदोही कालीनों का विपणन करना।
- **संतुलित शहरी नियोजन:** राज्य शहरी विकास प्राधिकरण को श्रेणी III और IV शहरों में बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **जनजातीय विकास बोर्ड:** जनजातीय विकास बोर्ड: उत्तर प्रदेश में अमूर्त जनजातीय विरासत के दस्तावेजीकरण और संरक्षण के लिए एक समर्पित **जनजातीय सांस्कृतिक संरक्षण प्राधिकरण** की आवश्यकता है।
- **समावेशिता के लिये भाषाई नीति:** मिशन शक्ति और पीएम आवास योजना जैसी योजनाओं के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (IEC) सामग्री में क्षेत्रीय उपभाषाओं का उपयोग।
- **आजीविका में सांस्कृतिक तत्वों को एकीकृत करना:** ग्रामीण पर्यटन सर्किट के लिए मेलों, लोक त्योहारों और आदिवासी नृत्य रूपों का उपयोग करना (जैसे, लखीमपुर और बहराइच में भारत-नेपाल सीमा के साथ "थारू इको-टूरिज्म कॉरिडोर")।

उत्तर लेखन के लिए कीवर्ड

सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता- उत्तर प्रदेश की परंपराओं, भाषाओं और समुदायों का विविध मिश्रण, **ग्रामीण जड़ें** - अर्थव्यवस्था और जीवन शैली को आकार देने वाला मजबूत कृषि आधार, **शहरी गतिशीलता**- नोएडा और लखनऊ जैसे शहरों में तेजी से औद्योगिक विकास, **जनजातीय विशिष्टता** - थारू और भोक्सा समुदायों के सामने अनूठी चुनौतियां, **जनसांख्यिकीय घनत्व** - नीति और शासन को प्रभावित करने वाले 24 करोड़ से अधिक लोग, **कृषि प्रधान ग्रामीण अर्थव्यवस्था**- ग्रामीण अर्थव्यवस्था खेती और संबद्ध क्षेत्रों पर निर्भर, **आर्थिक केंद्र**- औद्योगिक, आईटी और पर्यटन विकास को चलाने वाले प्रमुख शहर, **विकास की आकांक्षाएं**- समावेशी विकास और आधुनिक बुनियादी ढांचे की आवश्यकता, **शासन की जटिलताएं**- विविध सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों का प्रबंधन, **ग्रामीण लचीलापन**- चुनौतियों के अनुकूल आत्मनिर्भर समुदाय, **कृषि आधारित आजीविका**- खेती, डेयरी और हस्तशिल्प को नीतिगत समर्थन की आवश्यकता है, **जाति की गतिशीलता** - गतिशीलता और राजनीति को प्रभावित करने वाला सामाजिक पदानुक्रम, **लोक परंपराएं**- समृद्ध कला, संगीत, और कथक और रामलीला जैसे नृत्य, **शहरी विस्तार**- बढ़ते शहर और प्रवासन यूपी को नया आकार देना, **औद्योगिक क्लस्टरिंग** - विनिर्माण, एम.एस.एम.ई. और रक्षा उत्पादन के लिए हब, **प्रवासी प्रवाह**- बड़े ग्रामीण-से-शहरी प्रवास संसाधनों पर दबाव, **बुनियादी ढांचे की बाधाएँ**- भीड़ और अपर्याप्त सार्वजनिक सेवाएं, **जनजातीय हाशिए पर** - स्वदेशी समूहों का सामाजिक-आर्थिक बहिष्कार, **सामाजिक अदृश्यता**- हाशिए के समुदायों के लिए प्रतिनिधित्व की कमी, **संसाधन अलगाव**- भूमि अधिग्रहण और वनों की कटाई के कारण विस्थापन, **नीतिगत उपेक्षा**- जनजातीय और ग्रामीण कल्याण पर अपर्याप्त ध्यान, **विकासवादी विषमताएं**- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमान प्रगति, **संतुलित शासन दृष्टिकोण**- ग्रामीण, शहरी और आदिवासी विकास को एकीकृत करना, **ग्रामीण परिवर्तन**- कृषि आधुनिकीकरण और डिजिटल सशक्तिकरण, **सतत शहरीकरण**- पर्यावरण के अनुकूल और समावेशी शहर नियोजन, **जनजातीय समावेशन** - स्वदेशी समावेश के लिए शिक्षा और कौशल कार्यक्रम।

उत्तर प्रदेश का क्षेत्रवार सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण:

1- ग्रामीण उत्तर प्रदेश - संरचनात्मक मुद्दे, संस्कृति एवं चुनौतियां:-
ग्रामीण यूपी: भारतीय कृषि सभ्यता का दिल

77.7% से अधिक आबादी गाँवों में बसने के साथ, उत्तर प्रदेश की पहचान गहरे ग्रामीण मूल्यों, परंपराओं और सामुदायिक ताने-बाने में निहित है। संयुक्त परिवार प्रणाली से लेकर ग्राम सभाओं तक, **ग्रामीण यूपी पारंपरिक** भारत की निरंतरता को दर्शाता है, साथ ही आधुनिकीकरण की चुनौतियों का सामना भी करता है।

ग्रामीण उत्तर प्रदेश के प्रमुख सांस्कृतिक तत्व
त्यौहार और मेले

- बुंदेलखंड में कजरी तीज और पूर्वी उत्तर प्रदेश में जलविहार मानसून और कृषि उर्वरता का जश्न मनाते हैं।
- मेला बरसाना (मथुरा) में लठमार होली के साथ राधा के जन्म का उत्सव मनाया जाता है तथा राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है।
- मिर्जापुर और प्रतापगढ़ के गांवों में मनाई जाने वाली नाग पंचमी सर्प पूजा और मानसून से जुड़ी पारंपरिक मान्यताओं को दर्शाती है।

लोक संगीत और नृत्य

- बिरहा (अवधी-भोजपुरी बॉर्डर): प्रवासी समुदायों द्वारा गाए गए विरह के गीत।

- **रसिया:** ब्रज क्षेत्र में मनाया जाता है; राधा-कृष्ण की कहानियाँ सुनाई जाती है।
- **होली के दौरान बरेदी नृत्य (बुंदेलखंड)** - पारंपरिक लोकनृत्य, जिसमें रंगों और उत्साह के साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

साहित्य और मौखिक परंपराएं

- महोबा से आल्हा-उदल के गाथागीत अभी भी ग्रामीण सभाओं में गाए जाते हैं।
- नाथूराम प्रेमी और सेठ गोविंद दास जैसे स्थानीय कवियों ने 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में हिंदी गद्य को बढ़ावा दिया।

भाषाएँ/बोलियाँ

- ग्रामीण यूपी में बोली विविधता है: **अवधी** (मध्य यूपी), **भोजपुरी** (पूर्वी), **बुंदेली** (बुंदेलखंड), **ब्रज** (पश्चिमी), और **कन्नौजी**।
- फिर भी राज्य की नीति और स्कूली शिक्षा अक्सर मानक हिंदी को विशेषाधिकार देती है, जिससे शैक्षिक अलगाव पैदा होता है।



Seth Govind Das
(16 October 1896 - 18 June 1974)

Nathuram Premi

मुद्दे और चुनौतियाँ - वास्तविक उदाहरणों के साथ

1. **जाति आधारित भेदभाव और भूमि असमानता**
उदाहरण: आजमगढ़ और जौनपुर के ग्रामीण इलाकों में दलितों को मंदिर में प्रवेश और पानी के उपयोग पर प्रतिबंध का सामना करना पड़ता है।
2. **कृषि संस्कृति का पतन**
उदाहरण: कन्नौज में लोक उत्सवों में युवाओं के पलायन और शहरी आकांक्षाओं के कारण भागीदारी में गिरावट देखी जा रही है।
3. **पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व** - हाशिए पर पड़े समुदायों, महिलाओं और जनजातीय समूहों की निर्णय प्रक्रिया में सीमित भागीदारी, जिससे समावेशी विकास बाधित होता है।
4. **मौखिक परंपराओं का क्षरण**
उदाहरण: ललितपुर और चित्रकूट में, युवा पीढ़ी *दस्तावेज़ीकरण की कमी के कारण* वीरसिंह देव जैसे स्थानीय लोक महाकाव्यों से अनजान है।
5. **योजनाओं की भाषायी बाधा** - पीएमकिसान या स्वच्छ भारत जैसी योजनाएँ स्थानीय उपभाषाओं में प्रभावी रूप से संप्रेषित नहीं की जाती, जिससे उनकी पहुँच और जनभागीदारी सीमित हो जाती है।

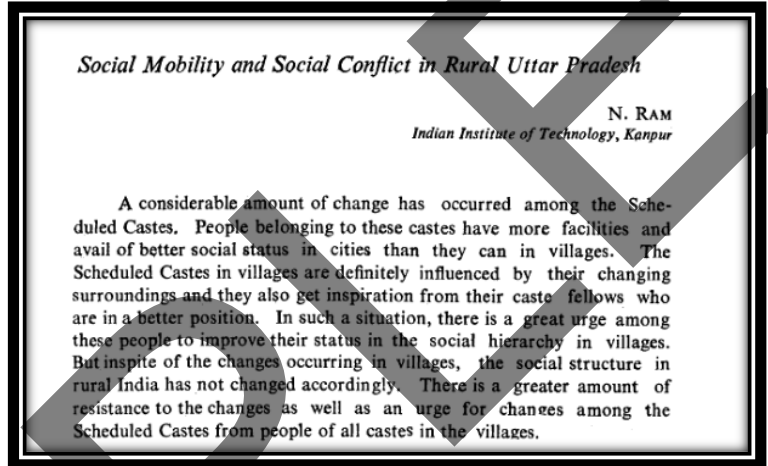
याद रखने के लिए कीवर्ड

- **जजमानी प्रणाली** - पारंपरिक सामाजिक आर्थिक व्यवस्था, जिसमें जातिआधारित सेवाओं का विनिमय होता है - (जैसे, नाई और कुम्हार ज़मींदारों की सेवा करते हैं)।
- **पंचायती राज प्रणाली (PRIs)** - त्रिस्तरीय स्थानीय शासन व्यवस्था (ग्राम पंचायत-, क्षेत्र पंचायत, ज़िला परिषद), जिसे 73वें संवैधानिक संशोधन के तहत सशक्त किया गया।
- **सांस्कृतिक निरंतरता** - कजरी तीज, बसंत पंचमी और नाग पंचमी जैसे त्योहारों का कृषि चक्र के अनुरूप सतत आयोजन।
- **जातिगत स्तरीकरण** - भूमिधारी जातियों का वर्चस्व, जबकि कई क्षेत्रों में दलितों और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBCs) का हाशिए पर होना।

सुझाव और आगे की राह

- **सामुदायिक मीडिया प्लेटफॉर्म** - कल्याणकारी जागरूकता बढ़ाने के लिए भोजपुरी रेडियो एफएम (बलिया) जैसी स्थानीय उपभाषाओं में सामुदायिक रेडियो का उपयोग।

- **सांस्कृतिक साक्षरता मिशन** - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्कूल पाठ्यक्रम में स्थानीय लोककथाओं और मौखिक परंपराओं को शामिल करने को प्रोत्साहित करना।
- **महिलानेतृत्व वाली सांस्कृतिक महासंघ-** - स्वयं सहायता समूह (SHGs) से प्रेरित होकर, ग्रामीण महिलाओं के सामूहिक संगठन बनाकर लोकनृत्य और बुनाई कला को पुनर्जीवित करना।
- **लोक धरोहर का डिजिटल अभिलेखीकरण** - बी.एच.यू और इलाहाबाद विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों के सहयोग से आल्हा, बिरहा, कजरी गीतों का डिजिटल दस्तावेजीकरण।
- **जमीनी सशक्तिकरण** - सामाजिक ऑडिट और क्षमताविकास कार्यशालाओं के माध्यम - से दलितों, जनजातीय समूहों और महिलाओं की ग्राम सभा निर्णयप्रक्रिया- में वास्तविक भागीदारी सुनिश्चित करना।



2- शहरी उत्तर प्रदेश - सांस्कृतिक परिवर्तन, उत्सव की गतिशीलता और पहचान की चुनौतियाँ शहरी उत्तर प्रदेशपरंपरा और आधुनिक :

आकांक्षाओं का संगम

उत्तर प्रदेश की 22.3% शहरी आबादी केवल प्रशासनिक और आर्थिक केंद्र नहीं, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और बदलते सामाजिक ढाँचों का संगम भी है। लखनऊ, वाराणसी, कानपुर, आगरा और गाजियाबाद जैसे शहर राजसी विरासत, धार्मिक विविधता, प्रवासी संस्कृतियों और उभरते महानगरीय मूल्यों का अद्वितीय मिश्रण प्रस्तुत करते हैं।

याद रखने के लिए कीवर्ड

- **सांस्कृतिक शहरीकरण:** स्थानीय रीति-रिवाजों को संरक्षित करते हुए ग्रामीण प्रवासियों द्वारा शहरी मानदंडों को अपनाने की प्रक्रिया।
- **गंगा-जमुनी तहजीब:** सांप्रदायिक सद्भाव की समग्र संस्कृति, विशेष रूप से लखनऊ और वाराणसी में मजबूत।
- **झुग्गी बस्तियों के उत्सव** - गरीबी के बावजूद, शहरी गरीब समुदाय अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएँ जीवंत बनाए रखते हैं (जैसे, कानपुर की झुग्गी बस्तियों में छठ पूजा का आयोजन)।
- **प्रवासी परंपराएँ:** प्रवासी समूहों (जैसे, नोएडा में पूर्वांचली समुदायों) द्वारा शहरी परिधि में ग्रामीण अनुष्ठानों को बनाए रखा जा रहा है।

प्रमुख शहरी सांस्कृतिक तत्व

त्यौहार और समारोह

- **अयोध्या में दीपोत्सव:** राज्य प्रायोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए सबसे अधिक दीयों का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया।
- **आगरा में ताज महोत्सव:** शिल्प, व्यंजन और लोक कलाओं का जश्न मनाने वाला वार्षिक मेला।
- **लखनऊ महोत्सव:** अवधी नवाबी परंपराओं पर केंद्रित है- कथक, कव्वाली, टुंडे कबाब।

शहरी परिवेश में लोक प्रस्तुतियाँ

- **नौटंकी मंडलियां** गाजियाबाद के शहरी पार्कों में **व्यंग्य और पौराणिक कथाओं को मिलाकर** प्रदर्शन करती हैं।
- **शहरी लखनऊ और प्रयागराज में छात्र समूहों और गैर सरकारी संगठनों द्वारा सामाजिक मुद्दों (स्वच्छता, दहेज) पर** नुक्कड़ नाटक।

शहरी भाषाएँ और कठबोली

- कानपुर और बरेली जैसे शहरों में 'हिंग्लिश' और स्थानीय शहरी कठबोली का उदय।
- हिंदी सिनेमा और अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के कारण अवधी या ब्रज जैसी बोलियों के रोजमर्रा के उपयोग में गिरावट।

शहरी सांस्कृतिक जीवन में मुद्दे और चुनौतियां

1. सांस्कृतिक समरूपीकरण

उदाहरण: नोएडा और गाजियाबाद जैसे मेट्रो से जुड़े क्षेत्रों में, बसंत पंचमी या रंगभरी एकादशी जैसे पारंपरिक त्योहारों को वेलेंटाइन डे जैसे पश्चिमी उत्सवों से बदला जा रहा है।

2. कारीगरों का विस्थापन

उदाहरण: मेरठ और आगरा के शहरी बाहरी इलाकों में कुम्हार कॉलोनियों को अचल संपत्ति के दबाव के कारण बेदखली का सामना करना पड़ता है, जिससे टेराकोटा बनाने और मूर्ति शिल्प जैसी परंपराओं को खतरा है।

3. शहरी लोक विरासत की उपेक्षा

उदाहरण: वाराणसी के अस्सी घाट के लोक संगीतकारों की शिकायत है कि व्यावसायिक पर्यटन कार्यक्रमों में उन्हें दरकिनारा कर दिया जाता है, जो केवल शास्त्रीय प्रस्तुतियों पर केंद्रित होते हैं।

4. स्थानीय संस्कृति से युवाओं का अलगाव

युवा शहरी पीढ़ी में सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के बारे में जागरूकता का अभाव है, क्योंकि स्कूल पाठ्यक्रम और सोशल मीडिया तेजी से शहरी मुख्यधारा या पश्चिमी प्रभावों को दर्शाते हैं।

5. प्रवासी हाशिए पर

एन.सी.आर. शहरों में पूर्वांचली प्रवासी शहरी नीति ढांचे में सीमित सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व के साथ झुग्गियों में रहते हैं।

सुझाव और सुधार

- शहरी सांस्कृतिक क्षेत्र- अमृत प्लस के तहत प्रत्येक नगरपालिका क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति केंद्रों की स्थापना करना, लोक प्रदर्शन, भाषा कार्यशालाओं और बोली-आधारित नाटक के लिए स्थान प्रदान करना।
- स्मार्ट सिटी परियोजनाओं में विरासत संरक्षण - स्मार्ट सिटी मास्टरप्लान में पारंपरिक नौटंकी मंचों, घाटों और बाजार थिएटर स्थलों के संरक्षण को सुनिश्चित करना।
- लोक कलाकारों के लिए त्योहार सब्सिडी योजना- संघर्षरत कलाकारों को शहर के मेलों के दौरान मानदेय और मंच तक पहुंच प्रदान करना (राजस्थान में राज्य लोक कलाकार कल्याण बोर्ड के समान)।
- स्कूल स्तरीय सांस्कृतिक समावेश - शहरी सरकारी स्कूलों में मासिक "स्थानीय संस्कृति दिवस" आयोजित करना, जिसमें स्थानीय भोजन, उपभाषाएं और पारंपरिक खेलों को प्रदर्शित किया जाए।
- डिजिटल शहरी संस्कृति पोर्टल - शहरवार पोर्टल विकसित करना, जहाँ त्योहारों, लोक कला कार्यशालाओं और सामुदायिक आयोजनों की जानकारी दी जाए, ताकि युवा अपनी जड़ों से जुड़े रहें।

3- आदिवासी उत्तर प्रदेश - पहचान, अनुष्ठान और सामाजिक रीति-रिवाज

जनजातीय हार्टलैंड्स की सांस्कृतिक पहचान

हालांकि अनुसूचित जनजाति (एस.टी.) यूपी की आबादी का केवल 0.56% है, लेकिन उनके अद्वितीय रीति-रिवाज, अनुष्ठान और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान राज्य की सांस्कृतिक विविधता को गहराई से समृद्ध करती है। सोनभद्र, चित्रकूट, मिर्जापुर, बलरामपुर, श्रावस्ती और लखीमपुर खीरी में केंद्रित, थारू, कोल, सहरिया, भोक्सा और चैरो जैसी जनजातियाँ अलग-अलग सामाजिक संरचनाओं, आध्यात्मिक प्रथाओं, कला रूपों और भाषा रूपों को बनाए रखती हैं। हाइलाइट करने के लिए कीवर्ड

- **जातीय सततता** : उत्तर प्रदेश की जनजातीय समाज वन आधारित परंपराओं और कृषि अर्थव्यवस्था के बीच एक जीवंत सेतु का कार्य करते हैं।
- **थारू संस्कृति संरक्षण**: थारू व्यंजन, संगीत, पर्यटन (जैसे, थारू होमस्टे) को बढ़ावा देने के लिए एक राज्य-संचालित पहल।
- **कोल-आदिवासी दावा**: बेहतर मान्यता और वन अधिकारों की मांग कर रहे कोलों के बीच बढ़ती आदिवासी चेतना।
- **वनवासी त्यौहार**: प्रकृति पूजा, चंद्र कैलेंडर और पूर्वजों की पूजा पर आधारित अनुष्ठान।

Figure -Tharu tribe



सामाजिक संरचनाएं और सामुदायिक गतिशीलता

- थारू के बीच **मातृसत्तात्मक परंपराएं**, जिसमें महिलाएं प्रमुख ग्रामीण पितृसत्ता के विपरीत, निर्णय लेने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।
- **विस्तारित परिवार या "कुटुंब" प्रणाली** अभी भी कोल और सहरिया के बीच बरकरार है, खेती, विवाह और त्यौहारों के दौरान सामूहिक समर्थन प्रदान करती है।
- पारंपरिक रूप से कठोर जातिगत पदानुक्रम नहीं पाया जाता, लेकिन बाहरी प्रभावों के कारण युवा पीढ़ी में जाति आधारित उपनाम अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

त्यौहार, मेले और अनुष्ठान

- **थारू महोत्सव (लखीमपुर खीरी)**: पारंपरिक संगीत, आदिवासी व्यंजन, औषधीय पौधों की प्रदर्शनियों और समूह नृत्यों का जश्न मनाया जाता है।
- **कोल आदिवासी विवाह संस्कार**: ग्राम देवता (ग्राम देवता) की पूर्व-शादी पूजा, स्थानीय शराब साझा करना और बांस आधारित उपहार शामिल हैं।
- **कर्म और सरहुल त्यौहार**: सहरिया और भुइया द्वारा मनाए जाते हैं, जो प्रकृति के चक्र और सामुदायिक एकता पर जोर देते हैं।
- **पूर्वज पूजा (पितृपूजा)**: कोल और चेरों के बीच अद्वितीय - सत्तू चावल की बीयर की पेशकश, और वंश के गीतों का प्रदर्शन करना।



लोक संगीत और नृत्य

- **झूमर और कर्मा नाच**: मानसून और फसल के दौरान कोल और सहरिया द्वारा किए जाने वाले समूह नृत्य।
- **लहांगी और रेखिया गीत**: थारू महिलाओं के लोक गीत, पौराणिक कथाओं और दैनिक संघर्षों से भरपूर।
- वनोपज और पशु खाल से बने **पारंपरिक वाद्ययंत्रों** जैसे *मदार, ढोलकी, बीन, थाली* का उपयोग।

भाषाएँ और बोलियाँ

- थारू भोजपुरी, सहरिया हिंदी, कोल भीली-प्रभावित अवधी क्षेत्रीय भाषा समूहों के साथ आदिवासी पहचान का मिश्रण करने वाली बोलियाँ हैं।
- औपचारिक मान्यता की कमी और स्कूली शिक्षा में कमी भाषा के क्षरण का कारण बन रही है।
- आदिवासी बोलियाँ मौखिक कहानी कहने में समृद्ध हैं - नदियों, जंगलों और स्थानीय देवताओं से संबंधित कई मिथक विद्यमान हैं।

रिवाज और सामाजिक मान्यताएँ

- **अकाल विवाह और नामकरण परंपराएँ** - चंद्र घटनाओं और प्राकृतिक संकेतों के आधार पर बच्चों के नामकरण की प्रथा (जैसे, लालमणि, पूर्णिमा, बादल)।
- **जनजातीय टैटू (गोंदना) की परंपरा** - कोल और सहरिया महिलाओं द्वारा पहचाने और आध्यात्मिक सुरक्षा के रूप में गोंदना (टैटू) अपनाना।

- **स्थानांतरित कृषि अनुष्ठान (बेवार)** – सोनभद्र की पहाड़ियों में पशु बलि और सामूहिक बुवाई से जुड़ी पारंपरिक कृषि पद्धति।
- **गैर-औपचारिक सामुदायिक न्याय व्यवस्था – बरगद के पेड़** के नीचे बुजुर्गों द्वारा आंतरिक विवादों का निपटारा, जिसमें पुलिस या अदालतों की आवश्यकता नहीं होती।

मुद्दे और चुनौतियां

1. सांस्कृतिक पहचान का नुकसान

- **उदाहरण:** श्रावस्ती में, छोटे थारू बच्चे अब मानक हिंदी बोलते हैं, अपनी मूल बोलियों को पूरी तरह से छोड़ देते हैं।
- **चुनौती:** आदिवासी भाषाओं या रीति-रिवाजों के संरक्षण के लिए कोई आधिकारिक भाषा या पाठ्यक्रम समर्थन नहीं है।

2. प्रतिनिधित्व के बिना व्यावसायीकरण

- **उदाहरण:** दुधवा में सरकार द्वारा प्रवर्तित थारू होमस्टे का प्रबंधन बाहरी लोगों द्वारा किया जाता है; स्थानीय लोग अक्सर कम भुगतान पाते हैं।
- **सुझाव:** लाभ-साझाकरण मॉडल के साथ समुदाय के नेतृत्व वाला पर्यटन।

3. प्रवासन और सांस्कृतिक क्षरण

- लखनऊ और दिल्ली जैसे शहरों में पुरुषों के प्रवास से त्योहारों और अनुष्ठानों की निरंतरता टूट जाती है।

4. धर्म परिवर्तन और संघर्ष

- सोनभद्र में आदिवासी समूहों के बीच धर्मांतरण की खबरें अंतर-सामुदायिक तनाव और पैतृक प्रथाओं के नुकसान का कारण बन रही हैं।

5. अपर्याप्त सांस्कृतिक दस्तावेज़ीकरण

- कोई आदिवासी-विशिष्ट सांस्कृतिक एटलस या विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम यूपी की आदिवासी संस्कृति में अंतर्दृष्टि प्रदान नहीं करता है।

सुझाव और सिफारिशें

- **जनजातीय भाषा बोर्ड:** गोंडी और भील के लिये महाराष्ट्र के मॉडल के समान, यूपी बोली प्रलेखन और प्रचार निकाय बना सकता है।
- **स्कूलों में सांस्कृतिक साक्षरता:** आदिवासी जिलों की पाठ्यपुस्तकों में थारू किंवदंतियों और कोल मिथकों को शामिल करना।
- **प्रौद्योगिकी के माध्यम से पुनरुद्धार:** आदिवासी गीतों और अनुष्ठानों को संग्रहीत और प्रसारित करने के लिए रेडियो और मोबाइल ऐप का उपयोग करें (जैसे, कोल रेडियो घंटेकी पहल)।
- **मेला समितियों में सांस्कृतिक कोटा:** जिला स्तरीय मेला और पर्यटन योजना बोर्डों में जनजातीय प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।
- **राज्य वित्त पोषित जनजातीय संस्कृति अकादमी:** जनजातीय कलाओं में अनुसंधान, संरक्षण और प्रदर्शन प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए मिर्जापुर के लिए प्रस्तावित।

ग्रामीण, शहरी और जनजातीय उत्तर प्रदेश की सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत का संश्लेषण

एक जीवंत तानाबाना: परंपरा और आधुनिकता का संगम-

उत्तर प्रदेश केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक सभ्यतागत परिक्षेत्र है, जहाँ गंगाजमुनी तहज़ीब-, जनजातीय वन परंपराएँ और जीवंत ग्रामीणशहरी संस्कृति एक साथ सह-अस्तित्व में हैं। रामनगर की- रामलीला से लेकर सोनभद्र के कोल

नृत्य तक, गाँवों के दशहरा मेले से लेकर लखनऊ के अवधी रंगमंच तक, यह राज्य अद्वितीय सांस्कृतिक बहुलता को दर्शाता है।

यहाँ की ग्रामीण, शहरी और जनजातीय समुदाय भले ही अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखते हों, फिर भी उनकी सामाजिक संस्थाएँ, त्योहार, परंपराएँ और भाषाएँ आपसी आदानप्रदान-, समन्वय और सहअस्तित्व का प्रतीक हैं।-

महत्वपूर्ण (मुख्य शब्द)

- **सांस्कृतिक समन्वय** - उत्तर प्रदेश में हिंदू-मुस्लिम, शहरी-जनजातीय और पारंपरिक-आधुनिक प्रथाओं का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण।
- **उपभाषाई इंद्रधनुष** - अवधी, ब्रज, बुंदेली, भोजपुरी और थारू भोजपुरी जैसी विविध भाषाओं की उपस्थिति, जो क्षेत्रीय गर्व और पहचान को दर्शाती हैं।
- **विविधता से भरा उत्सव परिदृश्य** - लखनऊ महोत्सव से लेकर जनजातीय थारू महोत्सव तक, यूपी का सांस्कृतिक कैलेंडर वर्षभर समावेशी और जीवंत रहता है।
- **सजीव अमूर्त विरासत** - मौखिक परंपराएँ, लोक मान्यताएँ, अनुष्ठान और संगीत शैलियाँ, जो बिना लिखित लिपि के पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती हैं।

प्रमुख मुद्दों का बहुआयामी सारांश

1. भाषा विलुप्त होने का खतरा

- कई बोलियाँ (जैसे बंगरू, भोकसा हिंदी) आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त नहीं हैं या शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल नहीं हैं।
- **उदाहरण:** सोनभद्र में थारू के छात्रों को देशी भाषा की अनदेखी करते हुए केवल हिंदी में पढ़ाया जाता है।

2. संस्कृति का व्यावसायीकरण

- अति-पर्यटन और त्योहारों (जैसे कुंभ या दीपोत्सव) की प्रोत्साहन से समुदाय-केंद्रित सार के नष्ट होने का जोखिम है।
- **उदाहरण:** स्थानीय लोक कलाकार अक्सर व्यावसायिक कलाकारों के पक्ष में दरकिनार हो जाते हैं।

3. जनजातीय कला रूपों की उपेक्षा

- सहरिया और कोल वुडक्राफ्ट, टैटू कलात्मकता और अनुष्ठान की अनदेखी होती है।
- **चुनौती:** आदिवासी सांस्कृतिक दस्तावेज़ीकरण और प्रशिक्षण के लिये संस्थानों का अभाव।

4. शहरी अव्यवस्था

- एन.सी.आर. के शहरों में पलायन ने रीति-रिवाजों के ग्रामीण और आदिवासी पीढ़ीगत संचरण को तोड़ दिया है।
- **उदाहरण:** गाजियाबाद और नोएडा में युवा अब *आंवला नवमीया फूलदेई* जैसे पारंपरिक ग्रामीण त्योहार नहीं मनाते हैं।

5. जाति और लिंग पूर्वाग्रह

- ग्रामीण अनुष्ठानों में पितृसत्तात्मक मानदंड बने रहते हैं; महिलाओं के गीतों और नृत्यों को अक्सर मुख्यधारा के आख्यानो में नजरअंदाज कर दिया जाता है।
- दलित लोक परम्पराओं को समृद्धि के बावजूद हाशिए पर रखा गया है- जैसे **बुंदेलखंड में दलित भक्ति साहित्य**।

आगे की राह: सामाजिक-सांस्कृतिक पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण और पुनरुत्थान

1. **जनजातीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन**-सभी आदिवासी और ग्रामीण लोक रीति-रिवाजों, त्योहारों और मौखिक साहित्य की **राज्य-स्तरीय डिजिटल मैपिंग** शुरू की जाये।
2. **सांस्कृतिक सशक्तिकरण अनुदान**-जिला सांस्कृतिक विभागों के माध्यम से आदिवासी/ग्रामीण कलाकारों और बोली विद्वानों के लिए **सूक्ष्म अनुदान** शुरू करना।
3. **ग्राम सांस्कृतिक केंद्र**-**"एक भारत श्रेष्ठ भारत" की तर्ज पर**, स्थानीय संगीत, भाषा और अनुष्ठानों को पढ़ाने के लिए **ग्राम सांस्कृतिक केंद्र** की स्थापना की जाये।
4. **पर्यटन और शिक्षा में एकीकरण**-स्कूल पाठ्यक्रम और पर्यटक सर्किट में **लोक नृत्य, बोली गीत और ग्रामीण-आदिवासी विरासत** जोड़ें।
उदाहरण: मिर्जापुर और सोनभद्र में प्राथमिक शिक्षा में कोल-टेल्स कहानी कहने का परिचय।
5. **सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कोटा**-सुनिश्चित करें कि आदिवासी और ग्रामीण लोक कलाकारों को **लखनऊ महोत्सव या वाराणसी देव दीपावली जैसे राज्य उत्सवों में** जगह मिले।

निष्कर्षपूर्ण दृष्टि:

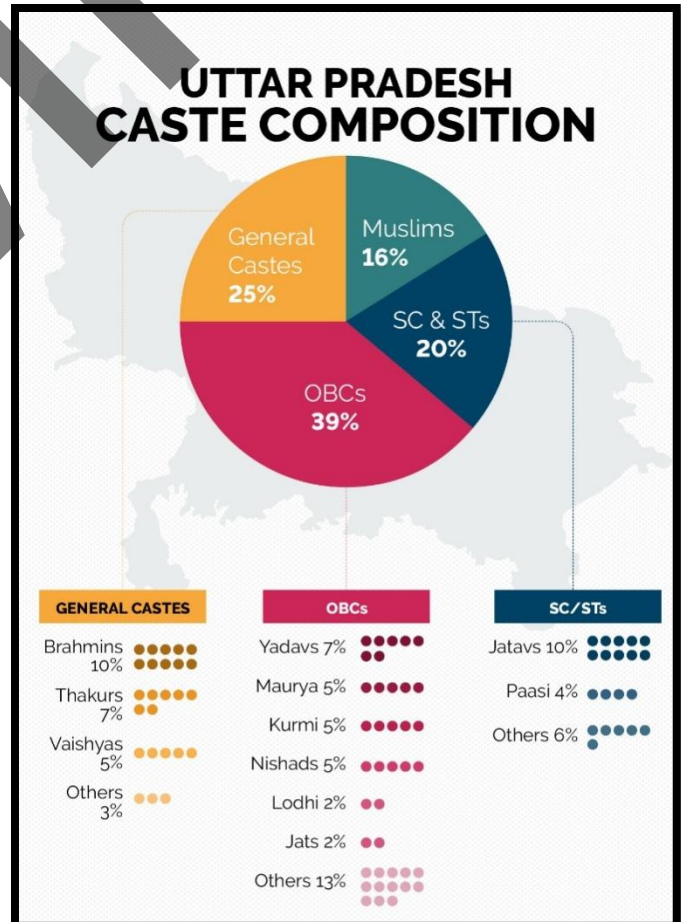
उत्तर प्रदेश एक जीवंत सभ्यता के रूप में खड़ा है, जहाँ अनुष्ठान आधुनिकता से मिलता है और लोककथाएँ शासन से जुड़ती हैं। यूपी के ग्रामीण खेत, शहरी गलियाँ और आदिवासी वन केवल आर्थिक स्थल नहीं हैं, बल्कि ये **समृद्ध सांस्कृतिक रंगमंच भी** हैं जो पहचान, राजनीति और दैनिक जीवन को आकार देते हैं।

इस सांस्कृतिक बहुलवाद को संरक्षित करना केवल विरासत का कार्य नहीं है—यह समावेशी विकास, पहचान के संरक्षण और नीतिगत दृष्टिकोण के उपनिवेशीकरण से मुक्ति के लिए आवश्यक है। त्योहार और बोलियाँ हाशिए पर नहीं हैं—वे गरिमा और सशक्तिकरण के माध्यम हैं।

इसलिए, भारत के विकास की कहानी में यूपी को वास्तव में अग्रणी बनने के लिए, उसे अपने लोगों—ग्रामीण, आदिवासी और शहरी—की सांस्कृतिक आत्मा का पोषण करना होगा।

सामाजिक संरचना: उत्तर प्रदेश में परंपराएं और संक्रमण जाति और सामुदायिक पदानुक्रम

- **जाति व्यवस्था**, हालांकि कानूनी रूप से समाप्त हो गई है, फिर भी सामाजिक संबंधों की संरचना करती है। **ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ और बनिया जैसे समुदाय** अपने ऐतिहासिक भूमि स्वामित्व, साक्षरता और सत्ता तक पहुंच के कारण प्रभाव रखते हैं।
- **ओ.बी.सी.** (जैसे, **यादव, कुर्मी, जाट**) राजनीतिक और संख्यात्मक रूप से महत्वपूर्ण समूह बनाते हैं, लेकिन फिर भी सामाजिक-शैक्षिक अंतराल का सामना करते हैं।
- **जाटव, चमार, वाल्मीकि जैसे दलितों (एस.सी.)** को सकारात्मक कार्रवाई के बावजूद ग्रामीण इलाकों में बहिष्कार का सामना करना पड़ रहा है।
- **मुस्लिम** (आबादी का ~ 19.3%) विविध हैं, जिनमें **अशरफ (कुलीन वर्ग), अंसारी (बुनकर), और**



पसमांदा समूह (पिछड़े मुसलमान) शामिल हैं, जिन्हें अक्सर दोहरे हाशिए का सामना करना पड़ता है।

- थारु, सहरिया, बैगा और अगरिया जैसे आदिवासी समुदाय सोनभद्र, लखीमपुर खीरी और चित्रकूट जैसे जिलों में केंद्रित हैं और सामाजिक अदृश्यता का सामना करते हैं।

करेंट अफेयर्स नोट: यूपी सरकार कल्याणकारी योजनाओं को बेहतर ढंग से वितरित करने के लिए जाति और आर्थिक जनगणना के आंकड़ों को डिजिटलाइज़ करने पर काम कर रही है।

2. उत्तर प्रदेश के त्यौहार: समारोहों का एक सांस्कृतिक चित्रपट

उत्तर प्रदेश 40 प्रमुख त्योहारों और 2,250+ सामान्य मेलों की मेजबानी करता है, धार्मिक, मौसमी और सामुदायिक परंपराओं का सम्मिश्रण।

प्रमुख त्यौहार

- **होली (बरसाना, मथुरा):** लठमार होली, जीवंत सामुदायिक खेल और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है।
- **दिवाली (अयोध्या दीपोत्सव):** मंदिरों का शहर अयोध्या 15 लाख से अधिक दीयों (2023 विश्व रिकॉर्ड) से जगमगाया।
- **ईद-उल-फितर, मुहर्रम:** लखनऊ, बरेली, अमरोहा जैसे शहरों में मुस्लिम समुदायों द्वारा व्यापक रूप से मनाया जाता है।
- **नवरात्रि, राम नवमी और दशहरा:** रामलीला प्रदर्शन वाराणसी, कानपुर और प्रयागराज में एक सामाजिक-धार्मिक उत्सव है।
- **मकर संक्रांति और तीज:** ग्रामीण महिलाओं की संस्कृति और अनुष्ठानों में क्षेत्रीय महत्व।

महत्व: त्यौहार कृषि चक्र, धार्मिक विश्वासों और जाति-समुदाय की पहचान को दर्शाते हैं, सामाजिक सामंजस्य और अंतर-पीढ़ीगत सांस्कृतिक हस्तांतरण को बढ़ावा देते हैं।

3. उत्तर प्रदेश में मेले: सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र बिंदु प्रतिष्ठित मेले

- **कुंभ और अर्ध कुंभ (प्रयागराज):** यूनेस्को सूचीबद्ध, दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक समागम।
- **गंगा महोत्सव (वाराणसी):** नदी पूजा, शिल्प और सांस्कृतिक प्रदर्शन प्रदर्शित करता है।
- **ताज महोत्सव (आगरा):** स्थानीय कारीगरों, संगीत और व्यंजनों को बढ़ावा देता है।
- **बटेश्वर मेला (आगरा):** धार्मिक उपक्रमों के साथ वार्षिक मवेशी और सांस्कृतिक मेला।
- **देव मेला (बाराबंकी):** प्रमुख सूफी मेला समकालिक परंपराओं को उजागर करता है।

सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देना: इन मेलों का लाभ हस्तशिल्प निर्यात, ग्रामीण पर्यटन और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए महत्वपूर्ण है।

4. संगीत: उत्तर प्रदेश की सभ्यता की पहचान की आत्मा शास्त्रीय और भक्ति परंपराएं

- **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत** यूपी में फलता-फूलता है। वाराणसी, लखनऊ और अयोध्या जैसे शहर ठुमरी, दादरा, कजरी की प्रमुख महत्ता हैं।
- **मंदिरों के शहरों में भजन और कीर्तन** प्रमुख हैं; सूफी दरगाहों (जैसे, देवा शरीफ) में कव्वालियाँ गूंजती हैं।
- **भोजपुरी और अवधी लोक गीत** मौसमी चक्र, शादियों और फसल त्योहारों के अभिन्न अंग हैं।

लोक संगीत परंपराएं

- **रसिया (ब्रज), कजरी (पूर्वांचल), सोहर (जन्म गीत), मर्सिया (लखनऊ में शिया परंपराएं), और रागिनी (पश्चिमी यूपी)।**



Figure - KATHAK